

# वेद और स्वामी दयानन्द

लेखक

गाज़ी महमूद धर्मपाल बी.ए. लुधियाना

फरमाइश

जनाब मौलवी मजीद हसन साहब

मालिक अख्बारे मदीना

मदीना बुक एजेन्सी के लिए

मदीना प्रेस बिजनौर में बाअहतमाम

मुहम्मद मजीद हसन प्रिन्टर तबअ हुई

का हिन्दी रूपान्तर 2011 ई.

वन्दे ईश्वरम् प्रकाशन

इस्लाम दर्शन केन्द्र देवबन्द

ayazdbd@gmail.com

a\_yaz2004@yahoo.com

नये जमाने में 'सत्यार्थ प्रकाश: समीक्षा की समीक्षा'

<http://satishchandgupta.blogspot.com/>

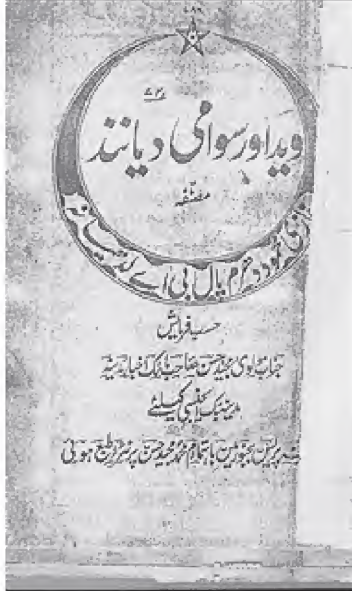
के बाद इस नायाब पुस्तक को हिन्दी में देख कर उम्मीद की जाती है हिन्दी प्रेमी बहुत खुश होंगे, साथ ही यह भी उम्मीद है कि सच्चाई तलाश करने वाले को पूरी उम्मीद है सच्चा रास्ता आसानी से मिलेगा,

गाज़ी महमूदी धर्मपाल जो इस्लाम के खिलाफ आर्यसमाज की सहायता से कई किताबों के मुसन्निफ़ थे आपको सभी किताबों के इस्लामी स्कॉलरों ने जवाब भी दिये थे, मौलाना सनाउल्लाह अमृतसरी लेखक 'हक प्रकाश बजवाब सत्यार्थ प्रकाश' से 11 साल के बहस मुबाहिसे के बाद आप इस्लाम की सच्चाई को मान कर फिर से मुसलमान हुए और अपने 11 साल के आर्यसमाजी अनुभव से इस्लाम को अपनी कई किताबों से तकवियत बख्शी।

## विषय सूची "वेद और स्वामी दयानन्द"

गाज़ी महमूद धर्मपाल का परिचय	पृष्ठ 4
1. पहली फसल- प्रस्तावना 'वेद और स्वामी दयानन्द	पृष्ठ 9
2. दूसरी फसल- स्वामी दयानन्द के कदमों में	पृष्ठ 20
3. तीसरी फसल- स्वामी दयानन्द और उनके मैयार standard	पृष्ठ 25
4. चौथी फसल- स्वामी दयानन्द और वेद	पृष्ठ 36
5. पाँचवीं फसल- वेद और आलमगीर शांति (विश्व-शान्ति)	पृष्ठ 56
6. छठी फसल- वेदों पर ईमान की बुनियाद की कमजोरी	पृष्ठ 79
7. सातवीं फसल- चौबीसवीं अध्याय (यजुर्वेद के 24 वे	
अध्याय की तफ़सील करने में दयानन्द जी वेबस)	

उर्दू पुस्तक का टाइटिल



haqprakash.blogspot.com

‘वेद और स्वामी वयानन्द’

## गाज़ी महमूद धर्मपाल

(लेखक का परिचय आनलाइन उपलब्ध उर्दू पुस्तक ‘तुर्क-ए-इस्लाम’ और ‘तिवर-ए-इस्लाम’ लेखक: मौलाना सनाउल्लाह के हवालों से)

एक मुसलमान अब्दुल गफ़ूर नामी इक्कीस साला ने गुजरावाला की आर्यसमाज में दाखिल होकर धर्मपाल बनकर अपना रिसाला मासूमा ‘तुर्क इस्लाम’ शाए किया। जिससे मुसलमानों में इस सिर से उस सिर तक बिजली की तरह आग लग गयी। हर फिरके ने उसके जवाब दिये। सबसे पहले खाकसार राक़िम की तरफ से जवाब निकला जिसका नाम था ‘तुर्क इस्लाम’ इस की वीयाचे में मैंने वजदानी तीर पर यह लिखा था कि ‘मिस्टर धर्मपाल के इस्लाम में वापस आने की वजदानी तोर से हमें उम्मीद है’

यह फिरका वजदानी था। मगर इसकी सड़त मिसल इलझामी जाहिर हुयी। चुनांचे धर्मपाले इस्लाम में आकर गाज़ी महमूद वने उनकी वापसी हम उन्हीं के अल्फ़ाज़ में वतलाते हैं आप लिखते हैं:

“१४ जून १९०३ को मेरे वारे में जिस किस्म की नुमाईश और जिस किस्म के जलसे या रसम रसूम अदा करने का सवांग रचा गया था। मैं देखता हूँ कि इस्लाम में दाखिल होने के लिए मुझे हरगिज़ हरगिज़ इस किसम की नुमाईश, जलसे या रसम रसूम अदा करने की जरूरत नहीं है। बल्कि अमर वाका यह है कि १४ जून १९०३ ई. से पूरे ग्यारह साल के वाद यानि १४ जून १९१४ ई. को वगेर किसी शख्स की मौजूदगी के तन तन्हा अपने खुदावन्द कुददूस के हज़ूर में सदाक दिल से दोज़ानू हाकर मैंने जो इकवाल किया था। उसी इकवाल का मैं यहाँ पर एलान कर देना जरूरी समझता हूँ। वह इकवाल यह है कि अशहदू अन्ता इलाहा इलल्लाह व अशहदू अन्ता मुहमदन अब्दुह व रसूलूह.....” (अल मुरिस्लाम, जुलाई १९१४)

इस इन्कलाव का सबब किया हुआ और ‘तुर्क इस्लाम’ ने इस सबब में किया डिस्सा लिया? इसका जिक्र भी उन्हीं के अल्फ़ाज़ में दरज जैल है:

“जब मोलवी नूरुद्दीन साहब (फ़ादयानी) ने रिसाला ‘नूरुद्दीन’ के ज़रिये और मोलवी सनाउल्लाह साहब ने ‘तुर्क इस्लाम’ वगेरा के ज़रिये इस्लाम

गाज़ी महमूद धर्मपाल

और मुल्लाइज्म के दरमियान खत्ते ममीज खिंच दिया तो मेरी तसानीफ की कीमत एक दियासलाई के बराबर रह गयी। मेरे एतराज़ात का जवाब देने में 'तुरुददीन' के मुसन्निफ का निशाना इल्मी मालुमात की बदोलत वेखता होता था। मगर 'तुर्कै इस्लाम' का वार ज़्यादा सितम ठाता था। जबकि वह मेरे किले को जो मैं सख्त जदोदजद के साथ तफसीरी की विना पर तामीर करता था। सिर्फ इतना सा फिकरा लिखकर मस्मार कर डालता था कि 'तफसीर का जवाब तफसीर लिखने वालों से लो। कुरआन मजीद इसका जिम्मेदार नहीं है' इस एक फिकरे ने 'तर्कै इस्लाम' और 'तहज़ीबुल इस्लाम' को छलनी कर डाला। मैंने नतीजा निकाल लिया कि तुरुददीन के मुसन्निफ के साथ तो बहस चल सकती है मगर 'तुर्कै इस्लाम' के मुसन्निफ के साथ जो मुल्लाइज्म का सिर से ही मुनकिर है। वहस का चलना मुश्किल है मगर लुत्फ यह हुआ कि 'तुरुददीन' के मुसन्निफ ने मेरे मुकाबले पर दोबारा कलम न उठाया हालांकि मैं आरजूमन्द था कि उसके साथ वहस का सिलसिला जारी रहे लेकिन 'तुर्कै इस्लाम' के मुसन्निफ ने 'तहज़ीबुल इस्लाम' के जवाब पर फिर कलम उठाया मगर मैं उस के साथ वहस करने के लिए तैयार नहीं था। नतीजा यह हुआ कि 'तुरुददीन' के मुसन्निफ ने मेरे मुकाबले पर दोबारा कलम न उठाया। और मैं ने 'तुर्कै इस्लाम' के मुसन्निफ के मुकाबले पर कलम उठाने से इन्कार कर दिया। इस तरह हमारी पहली जंग का खातमा हो गया। मगर कुछ अरसे के बाद 'मुल्लाइज्म' को दोबारा रगड़ने का खयाल मेरे बिल में पैदा हुआ। इस दफा मैंने तारीख से मदद ली और 'नखले इस्लाम' के नाम से जली सड़ी हुई किताब शाए की। आर्य समाज के अखबारात ने इस किताब का निहायत जोरदार अलफाज़ में रिक्कू किया। मुस्लिम अखबारात ने इसके बरखिलाफ शोर मचाया। मैं चाहता था कि पुराने टाइप के मुल्ला लोग मेरे मुकाबले पर आये ताकि मुझे इस बात के जानने का मौका मिले कि यह इन बातों का किया जवाब रखते हैं लेकिन वद-किस्मती से इस दफा भी वही 'तुर्कै शीराज़ी' मैदान में आ कूदा और यह कहकर कि कुरआन मजीद या इस्लाम तारीख या तफासीर का जवाबदे नहीं है। 'नखल इस्लाम' पर 'तवरे इस्लाम' मार कर चलता हुआ। इस तरह पुराने टाइप के जिन मुलानों को रगड़ने के लिए मैंने यह दूसरी कोशिश की थी। वह फिर वच गये। आखिर कार जब मैं ने देखा कि 'मुल्लाइज्म' के मानने वाले तो

‘वेद और स्वामी ध्यानन्द’

मैदान में आते नहीं और जो मैदान में आते हैं वह 'मुल्लाइज्म' के मानने वाले नहीं होते तो मैंने इस तमाम बहस का कतई फेसला कर डाला। और 'तर्कै इस्लाम' से लेकर अपनी आखरी तसनीफ तक जिस कदर किताबें थीं इन सब को मैंने १४ जून १९११ ई. को जलाकर खाक सियाह कर दिया। (अल मुस्लिम, पृष्ठ ३६३, दिसम्बर १४ ई.)

किताब 'तुर्कै इस्लाम' के अलावा खाकसार की खखसियत ने इसमें कहाँ तक हिस्सला लिया। यह एक लतीफ दास्तान है। गुज़िस्ता इक्तबास से मालूम होता है कि मिस्टर धर्मपाल १४ जून १९१४ ई. को इस्लाम में आकर गाज़ी महमूद के नाम से मोसूम हुए मगर मेरी मुलाकात उनसे बहुत पहले हुयी थी उस मुलाकात की ज़रूरत और शरह खुद उनकी के अलफाज़ में मज़ा देगी जो दरज जैल हैं। आप लिखते हैं:

‘मेरी गुज़िस्ता एक साल की बेऐज़ा जिन्दगी ने मेरे मुसलमान भाईयों के दिलों पर भी मेरे लिए इस कदर मुहब्बत पै कर दी है कि जब उनको मेरी वीमारी का हाल मालूम हुआ तो वह जोक दर जोक मेरे पास आने लगे इन में से मोलवी सनाउल्लाह साहब का नाम खासकर काविले जिम्न है। मोलवी साहब के साथ तहरीरी दस्त पन्जा तो सालहा साल तक होता रहा मगर रू दर रू होने का गालबन यह पहला ही मौका था। जिसको एक मुबारक मौका ही समझना चाहिए। खाह वह वीमारी की शकल में ही नमूदार हुआ हो। मोलवी साबि फितरतन खुश मजाक असहाब में से हैं इस लिए समझ लेना चाहिए कि जहाँ एक तरफ 'तर्कै इस्लाम' और 'तहज़ीबुल इस्लाम' बल्कि 'नखले इस्लाम' का मुसन्निफ बिस्तर मर्ज पर पड़ा हो। और दूसरी तरफ 'तुर्कै इस्लाम' और 'तगलीबुल इस्लाम' बल्कि 'तवरे इस्लाम' का मुसन्निफ उसके सिरहाने बैठा उसकी तीमारदारी कर रहा हो। वहाँ अगर मलकुस्समावात वलअरज़ दिली मुसरत से यह शअर पढ़ रहे हों कि:

शुकरे ऐज़द कि मयाने मन व उ सुलह फताद

हूरयां रक्स कुनां सागरे शुक्राने जदन्द

तो कोई अजब की बात नहीं है। इससे पेशतर मेरा यह खयाल था कि मोलवी सनाउल्लाह जो अहमदिया फिके के साथ मुसलमानों जैसे फज़ूल छेछाड़ करता रहता है वह ज़रूर कोई 'कठमुल्लाह' होगा। यही वजह थी

गाज़ी महमूद धर्मपाल

कि वायजूब उनकी कोशिश करने के मैं कभी उनसे मिलना नहीं चाहता था लेकिन पहली ही मुलाकात में मुझे मालूम हुआ कि मोलवी सनाउल्लाह एक खुश मिजाज़, खुश मजाफ़, खूबसूरत और खूबसीर जन्टलमेन हैं। और कुदरत ने उसको एक दिलरुबा अदा दी है सच तो यह है कि इस इब्न याकूब को देख कर मुझे अपने दिल को थामने में बड़ी दिक्कत पेश आयी। वह हर तीसरे रोज़ अमृतसर से मेरी खबर लेने के लिए लाहूर पहुँचते थे।<sup>1</sup> इस वीमारी से भी बहुत पहले का एक वाकआ बहुत देरीना सड़बत याद दिलाने वाला है। वह भी मिस्टर धर्मपाल ही के अल्फ़ाज़ में दर्ज है।

हुस्न अखलाक से एक बफ़ा सियालकोट आर्य-समाज के जलसे में बज़रुरत वहस मेरा जाना हुआ तो बाद मुवाहि़सा दूसरे रोज़ स्टेशन को जाते हुए दोनों जमाअतें (मुस्लिम और आर्य) मिल गयीं। उस मौक़े पर मैं सबके सामने मिस्टर धर्मपाल से बगलगीर हुआ और कुछ अल्फ़ाज़ भी कहे जो उन्हीं की इबारत में आते हैं। आह! उस बगलगीरी का लुतफ़ उस्ता मोमिन खां मरहूम को हासिल होता तो वह कभी मन्दरजा जेल शेअर न लिखते:

रख लेवेंगे पत्थर मगर उन संगदिलों को

तौबा है कि सीने से लगाया न करेंगे

इस वाकआ का जिफ़ मिस्टर धर्मपाल यूँ करते हैं:

“नहीं मालूम इस्लाम में कौन-सा जादू है। और मुस्लिम कौम में कौनसी स्प्रिट काम कर रही है कि जिसको देखकर मैं बाज़ औकात हैरान व शशदर रह गया हूँ और मुझे बेसाख्ता क़दना पड़ा है कि इस्लाम में कोई न कोई ऐसा जादू ज़रूर है जो मेरी समझ से बालातर है। और कि यह एक ऐसी बला की कौम है कि जिस कदर मैं इस कौम से दूर भागता हूँ उसी कदर वह मेरे नज़दीक आने की कोशिश करती रही है।

# RELIGIOUS CONTROVERSIES IN THE PUNJAB: THE 'A POSTASY' OF GHAZI MEHMUD DHARAMPAL

.....From 1914 onwards Ghazi Mehmud Dharampal took out a number of journals and was actively involved against the Arya Samajis during the Shuddhi campaigns of 1920's. But even though he became a Muslim, his understanding of the religion remained unconventional as he tilted toward the Ahl al-Qur'an –

ALI USMAN QASMI UNIVERSITY OF HEIDELBERG  
GERMANY

Page 5 to Page 18

<http://www.scribd.com/doc/44946222/The-Historian-2009-1>

## वेद और स्वामी दयानन्द

पहली फ़सल

### प्रस्तावना

दोस्तों!

मैं आज जिस मज़हब पर आप के सामने बोलना चाहता हूँ वह ये है कि वेद खुदा का कलाम नहीं है। मैं साफ़ अल्फ़ाज़ में बता देना चाहता हूँ कि एक अरसे तक मेरा ये दिली ऐतकाद रहा है कि वेद खुदा का कलाम है। लेकिन अब मेरा ये ऐतकाद नहीं है पेशतर इस के कि मैं आप के सामने अपने इस ऐतकाद की तबदीली का ज़िक्र करूँ मैं इस बात का इफ़रार कर लेना भी ज़रूरी समझता हूँ कि मैं इन मुतअस्सब इन्सानों में से नहीं हूँ जो किसी बात पर महज़ ज़िद से अड़े रहते हों वल्कि हक़ व हक़ानियत का तालिब हूँ और मैं सद्क दिल से इस उसूल का पाबन्द हूँ कि इन्सान को सच्चाई के कबूल करने और झूठ के तर्क करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। अगर उन असहाब में से जो कि वेदों को अभी तक खुदा का कलाम मान रहे हैं कोई शङ्स दलाईल व वाकिअत की बिना पर इस बात को सावित कर दे और मुझे कायल कर दे कि वेदों को खुदा का कलाम न मानना मेरी ग़लती है तो मैं फ़ौरन अपनी ग़लती की इसलाह कर लूँगा मेरी ये पोज़िशन ऐसी माकूल है जो कि दुनिया में हर एक हक़ पसन्द इश्तिवार करता चला आया है। यूरोप के मीज़ुदा ज़माने के फ़लास्फ़रों के सरताज मिस्टर हरवर्ट स्पेन्सर का मक़ूला है कि मुहन्निकक शङ्स को फ़तह पाने की निसबत सबाक़त को मदेनज़र रखना चाहिए और सबाक़त की जाँच के लिए लाज़मी है कि इन्सान इन तअस्सुबात या ज़वात से आज़ाद हो जाये जो ज़मीन के ख़ास हिस्से, नस्ल या पैदाईश की बिना पर इन्सानों को कैद किये हुए है और उनको हमेशा यह बात मद्दे नज़र रखनी चाहिए कि दुनिया में कोई मज़हबी अक़ीदा या कोई मज़हबी किताब महज़ इसलिए सच्चे नहीं कहे जा सकते कि वह बहुत पुराने हैं न ही किसी मज़हब या किताब को इसके होने नए की वजह से झूठा कहा जा सकता है। इसके वरअक्स वअज़ औकात ये देखने में आता है कि ये हमारी ज़िन्दगी के रास्ते में जहाँ पुरानी किताबें बतौर मिट्टी के चिराग़ों के रहनुमाई का काम करती है। इस के मुकाबले मैं वअज़ ज़माने

की किताबें बतौर विजली की रोशनी के हमारी ज़िन्दगी के रास्ते को रोशन करतीं और हमको राहत वज़्शती हैं। मगर मिट्टी के चिराग़ को महज़ इसलिए हाथ में पकड़े रखना कि ये हमारे वाप दादा हमारी नस्ल या हमारे मुल्क का क़दीमी चिराग़ है और इसके मुकाबले मैं विजली के लैम्प से फ़ायदा उठाने से इन्कार कर देना मुल्की नस्ली या पैदाईशी तअस्सुब है जिससे आज़ाद होने के लिये मिस्टर हरवर्ट स्पेन्सर ने हर एक मुहन्निकक को नसीहत की है, मैं मुल्की तअस्सुब का कायल नहीं हूँ मैं नस्ली या पैदाईशी तअस्सुब का भी गुलाम नहीं हूँ। अगरवे उन लोगों की तरफ़ से जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं मेरे वेदों के कलामे इलाही होने से इनकार करने पर मुझ पर पैदाईशी तअस्सुब का इलज़ाम लगाया गया और लगाया जा रहा है लेकिन वह इस बात को एक मिनट के लिए भी सोचने के वास्ते तैयार नहीं होते कि अगर मैं इस किस्म के तअस्सुबात का शिकार होता तो मैं दीगर मज़ाहिब के वरख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ भी न लिख सकता। लेकिन मेरे इस किस्म के दोस्त जबकि मैं दीगर मज़ाहिब के वरख़िलाफ़ धुवाँदार तहरीरें निकाल रहा था। मेरी तारीफ़ में ज़मीन व आसमान के कलावे ग़िलाते और मुझे हक़ व हक़ानियत की ज़िन्दा मिसाल बताते थे अगर मैं उस वक़्त हक़ व हक़ानियत का तालिब था तो अब मैं झूठ और वातिल परस्ती का तालिब नहीं कहा जा सकता। मुहन्निकक इन्सान नशो नुमा पाने वाले बच्चे की मानिन्द होते हैं जिस तरह बच्चे के वह कपड़े जो कि वह पाँच साल की उम्र में पहनता था पन्द्रह साल की उम्र में इसके लिए छोटे हो जाते हैं इसी तरह मुहन्निकक इन्सानों के पहले ख़यालात ताज़ा वाकिअत तजुवात और मुशाहेदात की बिना पर ज़्यादा से ज़्यादा बुरसूत पज़ीर हो जाते हैं अगर आप का कोई रिश्तेदार या अज़ीज़ आप के पास बचपन का कोई फ़टा पुराना कुर्ता या पाजामा जो दो तीन वालिशत से ज़्यादा लम्बा नहीं होगा, लाकर आप से कहे कि तुम कैसे नादान हो जो इस पहले कुर्ते और पाजामे को छोड़कर आज इतने लम्बे लम्बे कुर्ते और पाजामे पहन रहे हो। तुम इन नये कुर्तों और पाजामों को उतार कर वहीं पुराना कुर्ता और पाजामा पहनो जो कि तुम को तुम्हारे वालिदेन ने दो तीन साल की उम्र में पहनाया था आप इस रिश्तेदार या अज़ीज़ की इस बात पर हंस देंगे। तअन्जुब नहीं कि आप इसको वेवकूफ़ भी कहें। क्योंकि बचपन का दो वालिशत लम्बा पाजामा अब तुम्हारे नंग को ढाँपने के लिये काफी नहीं

हो सकता। जबकि आपको गज़ भर लम्बे पाजामे या कई गज़ लम्बे तेहबंद या धोती की ज़रूरत है। आप अपने अज़ीज़ों को ग़ालिवन् यही जवाब देंगे कि अगर आप पसन्द करते हैं कि मैं पुराने कुर्ते को ज़रूर पहनूँ तो वराये खुदा इसको इतना कुशादा कर दो या मुझे इजाज़त दो कि मैं इसको इतना कुशादा कर लूँ कि ये मेरे वदन पर फिट आ जाये। लेकिन अगर वह अज़ीज़ और आशना उन दोनों बातों में से एक को भी मानने के लिए तैयार नहीं होते तो आपका फर्ज़ होना चाहिए कि आप इसको दूर फेंक दें और इसको पहनने से क़तई इन्कार कर दें। आप इसको फेंक देने की बिना पर मुलज़िम या वेवकूफ़ नहीं बन सकते। बल्कि मुलज़िम या वेवकूफ़ यह शज़्स है जो आप से इसरार करता है कि आप इसी पुराने कुर्ते को पहनें। जब दो बालिशत कपड़े की बावत इन्सानों का यह हाल है तो ये किस कदर गुल्म और अंधेरे की बात है कि किसी मुहक्कफ़ इन्सान के ख़्यालात की वुसअत को देखकर उस पर ये फ़तवा पास किया जाये कि चूँकि हमने पहले ख़्यालात को तर्क कर दिया है इसलिये वह गुमराह या नादों है और इसकी गुमराही या नादानी को दलाईल से साबित न किया जाये। वह लोग जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं वह मेरे ख़्यालात की वुसअत या आज़ादी पर वईना इसी किस्म का फ़तवा पास कर रहे हैं। वह कहते हैं कि आज से नी सला पेशतर तुम ने वेदों को खुदा का कलाम तस्लीम किया था। तुम कैसे गुमराह हो जो आज तुम इस पुराने कुर्ते को जो खुदावंदे कुद्दस ने इन्सान के बघपन के अब्बलीन हिस्से में तैयार किया था पहनने से इन्कार करते हो। मगर मैं कहता हूँ कि मैं अब बुलन्द कद हो गया हूँ। अब ये इन्सानी बघपन का कुर्राँ मेरे नंग को ढाँप नहीं सकता बल्कि जिस तरह किसी ज़माने में ये कुर्राँ मेरे दिल और दिमाग़ के लिये राहत बख़्श था क्योंकि ये इस वक्त मेरे ऐन फिट आता था। इसी तरह अब ये फिट न होने के वाइस मेरे दिल और दिमाग़ के लिए तकलीफ़ देह हो रहा है। इसलिये कि ये बहुत तंग है और मैं ज़्यादा नशुनोमा पा गया हूँ। जब मैं ये जवाब देता हूँ तो मुझे ताना दिया जाता है कि हमारे तुम्हारे ऋषि मुनी इस कुर्ते को पहनते और इसको खुदा का कलाम मानते चले आये हैं लेकिन तुम क्या उनसे बड़कर हो जो ऐसी बातें वनाते हो। मुझे ताना माकूल मालूम नहीं होता जबकि तारीख़ शहादत देती है कि पुराने ऋषि मुनी जंगलों में रहने के वाइस या तो अपने नंग को ढाँपने की

‘वेद और स्वामी वयानन्द’

चन्दों ज़रूरत नहीं समझा करते थे या दो बालिशत भर लंगोटी या भोजपत्र से ही आगा पीछा ढाँककर गुज़ारा कर लेते थे। लेकिन मुझे कोई मञ्कूलियत नहीं है कि चूँकि पुराने ऋषि मुनी ऐसा करते थे इसलिये मैं भी आज बालिशत भर लंगोटी या भोजपत्र को आगे पीछे टांगकर व्रतता फ़िस्तूँ। अगर ऋषि मुनी वेदों को खुदा का कलाम मानते थे तो मुल्की नस्ली या पैदाईशी तअस्सुवात की बिना पर ऐसा मानने की लिये मजबूर थे। जबकि वह हक़ व हक्कानियत की तलाशी के लिये इस आला मैयार से आरी थे जो कि मिस्टर हरबर्ट स्पैन्सर के अल्फ़ाज़ में दिखाया जा चुका है। आज के वरअक्स जो मुहक्कफ़ मुल्की, नस्ली या पैदाईशी तअस्सुवात से आज़ाद थे। उन्होंने वेदों को खुदा का कलाम मानने से इन्कार कर दिया। बौद्ध और चारदाक के मुहक्कफ़ वुस्ता ज़माने की ज़िन्दा शहादत हैं। और ब्रह्म समाज वेदों की कलामे इलाही न होने के बारे में ज़माना-ए-हाल का एक ज़िन्दा और ज़वरदस्त प्रोस्टेंट हमारी आँखों के सामने मौजूद हैं। वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों की तरफ़ से बुद्धों, जैनियों और चारदाक के मुहक्कफ़ों पर ये इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह दाम मार्गी थे हालाँकि ये इल्ज़ाम कोई बुनियाद नहीं रखता। लेकिन अगर एक मिनट के लिये इस इल्ज़ाम की सदाकत को तस्लीम भी कर लिया जाये तो ब्रह्मों समाज के मुहक्कफ़ीन को इसी इल्ज़ाम से रद्द करने की कोशिश करना यकीनन अपने आप को कानून की ज़वरदस्त ज़ंजीरों से जकड़ना है जबकि अग्ने वाकिआ ये हो कि ब्रह्मों समाज के इस किस्म के तमाम मुहक्कफ़ उन उबूब से पाक थे जो कि दाम मार्गीयों की तरफ़ मनसूब किये गये हैं और वह आला दर्जे की मज़हबी, अज़्लाकी और मजलसी ज़िन्दगी का नमूना थे। मेरे इस वयान से ये नतीजा नहीं निकालना चाहिए कि मैं बौद्ध, जैनी चारदाक या ब्रह्मों समाजी हूँ। मेरा इन सोसायटियों से कोई भी तअल्लुक नहीं है। बल्कि मेरा मतलब इस बात पर रोशनी डालने से है कि जिन लोगों ने मुल्की, नस्ली या पैदाईशी तअस्सुवात से आज़ाद होकर वेदों का मुतालेआ किया है उन्होंने उनको खुदा का कलाम तस्लीम करने से इन्कार कर दिया है। मगर वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों की तरफ़ से फिर आवाज़ आती है कि जिन लोगों को तुम मुहक्कफ़ कहते हो वह दर-हक्कीक़त मुहक्कफ़ नहीं थे और कि उन्होंने वेदों से लाइस्ली की वजह से मुँह फेर लिया। अगर तुम वेदों के बारे में सही सही रोशनी हासिल करना चाहते हो

ग़ाज़ी महमूद बर्मापाल

तो तुम को इस शङ्ख की बात पर ऐतबार करना चाहिये जो कि वेदों का मुखक्किक्क और स्कॉलर हो। अगरचे मैं इस बात को तरलीम करने के लिए तैयार नहीं हूँ कि वील्ड, चारदाक, जैन और ब्रह्मो मुखक्किक्को मुखक्किक्कीन के ज़मरे से खारिज कर दिया जाये। लेकिन हक्क व हक्कानियत का पता लगाने के लिये मुझे एक मिनट के लिये ये मान लेना चाहिये कि वह वेदों के मुखक्किक्क नहीं थे। अब सवाल ये पैदा होता है कि तुम वेदों का मुखक्किक्क या स्कॉलर किसको कहते हो, मेरे कान में आवाज़ आती है कि वेदों का सबसे बड़ा स्कॉलर और मुखक्किक्क स्वामी दयानन्द था। अब मुझे इस बात पर गौर करना चाहिए कि स्वामी मिस्टर ब्रूम वेदों का स्कॉलर और मुखक्किक्क वेदों के बारे में हमें क्या ख़बर लाकर देता है। जब मैं स्वामी दयानन्द की तहकीकात पर गहरी नज़र डालता हूँ तो मैं इस नतीजे पर पहुँचता हूँ कि दरअसल स्वामी दयानन्द वेदों को खुदा का कलाम मानने में “दयानतदार” नहीं था। मेरे ये अल्फ़ाज़ चौंका देने वाले मालूम होंगे। लेकिन मैं स्वामी दयानन्द की ही तहरीर से इस बात को साबित करूँगा। पेशतर इसके कि मैं इस मज़मून को शुरू करूँ ज़रूरी मालूम होता है कि मैं यहाँ पर स्वामी दयानन्द के पुराने दोस्त और हिन्दुस्तान के वही ख़्वाह और इंडियन नेशनल काँग्रेस के यानी मयानी मिस्टर ब्रूम ऑजर्हानी की इस तहरीर का थोड़ा सा इक़तवास यहाँ दे दूँ कि जो कि मार्च १८८३ ई० के थ्योसोफ़ेस्ट में शाये हुई थी। मिस्टर ब्रूम ऑजर्हानी लिखते हैं –

“हम सब को स्वामी दयानन्द की इज़्ज़त और तारीफ़ करनी चाहिए क्योंकि वह एक बड़ा पुरुष और बुलन्द ख़्याल था। लेकिन हक्क व हक्कानियत के इन तमाम आशिकों को जिन्होंने कि अपने आप को पुरोहितों की गुलामी से आज़ाद कर लिया है ये सुनकर सख्त दुख होगा कि स्वामी दयानन्द ने एक ऐसी सोसायटी कायम की है जो कि वेदों के नौशतों को मुनज़्ज़ा मिनलख़ता मानती है। इन तमाम ग़लत अक़ाईद में से जिन्होंने कि बदकिस्मत इन्सानी दुनिया में लानत की वारिश की है कोई अक़ीदा ऐसे ख़तरनाक नताईज का पैदा करने वाला साबित नहीं हुआ जिस क़दर कि मज़हबी किताबों को मुनज़्ज़ा मिनल ख़ता मानने का निम्नायत ही काविले नफ़रत और पुर मुहल्लिब अक़ीदा साबित हुआ है। यही वजह है कि सच्चाई के तमाम आशिकों को इस

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

अक़ीदे की बड़ी शद्दोमद से मुख़ालफ़त करनी चाहिए। ये अक़ीदा एक ऐसी शरारत की ज़मीन है कि जिसमें से पुराहितों की वह ख़ौफ़नाक और ज़हरीली जमाअत पैदा होती रही है जिसने कि इन्सानी तारीख़ के हर एक बर्क़ को तबाही तनज़ुल मुसीबत आग और ख़ून से रंग छोड़ा है इसलिये इस ख़तरनाक अक़ीदे को रखता हुआ ख़्वाह स्वामी दयानन्द उससे दस गुना आलिम और नेक दिल भी होता जितना कि बरहकीक़त है ख़्वाह उसके इरादे उससे सौ गुनाह नेक, आला और बेग़ज़ा न होते जितने कि वह हैं फिर भी ये हर एक ऐसे शङ्ख को ख़्वाह वह कितना ही अदना और कम इल्म की मगर जिसने तारीख़ की शम्मादत से इस निम्नायत ही ख़ौफ़नाक अक़ीदे के सख़्त ख़तरनाक नताईज से आगाही हासिल कर ली हो। फ़र्ज़ होना चाहिए कि वह कम से कम इस पङ्क्तू में स्वामी दयानन्द की बहादुराना मुख़ालफ़त करे जबकि वह इस अक़ीदे को वतौर एक सनद के हम पर ठूसने की कोशिश करता है और इसको साफ़ अल्फ़ाज़ में बताया जाये कि अगरचे वह दीगर मामलात में एक देवता कहा जा सकता है मगर इस अक़ीदे में उसकी पोज़िशन एक ऐसे ग़द्दार की पोज़िशन है जो कि इन्सानी वेहदूदी और सदाक़त के हक्क में ख़तरनाक ग़द्दारी कर रहा हो।”

ये अल्फ़ाज़ सख़्त है लेकिन वह कौन से सख़्त अल्फ़ाज़ हो सकते हैं जिनके ज़रिये कि इस अक़ीदे को जो कि बनी नूप इन्सानी की गुज़िश्ता तवारीख़ में तमाम लानतों से बड़ी लानत साबित हुआ हो। गर्दन जोनी करार देने के लिये इस्तेमाल किये जा सकते हैं? ये बात कि स्वामी दयानन्द ने वेदों की मुनज़्ज़ा मिनल ख़ता साबित करने की कोशिश दयानतदारी से की है। इसकी पोज़िशन को बदल नहीं सकती इससे इसकी अख़लाकी जिम्मेदारी का बोझ हल्का हो सकता है। लेकिन इसकी मुख़ालफ़त करने और इसके फ़अल की असलियत को ज़ाहिर करने का हमारा जो फ़र्ज़ है हम इससे सुबकदोश नहीं हो सकते। अगर बदकिस्मती से कोई स्वामी ये समझ ले कि दुनिया की तमाम वीमारियों की दवा ये है कि जितने दरियाओं और नदी नालों तक इसका हाथ पहुँच सके, उसमें वह मुहल्लिक ज़हर धोल दे और अपनी डिमाक़त से ये समझ बैठे कि इस पानी के इस्तेमाल से तमाम इन्सान वीमारी

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल



से शिफा पा जायेंगे। हालाँकि तारीख़ शहादत देती हो कि वह ज़हर बनी नूरे इन्सान के लिये निहायत ही मुहलिक साबित हो चुका है। इस सूरत में इस स्वामी को ऐसे ख़तरनाक फ़अल पर जितने भी सख़्त से सख़्त अल्फ़ाज़ में झाड़ा जाये और लोगों को इसका शिकार बनने से आगाह किया जाये उतना ही कम होगा। ऐसी सूरत में अगर एक शख्स जो ख़्वाह कितना ही हकीर और बे बज़ाअत हो ये समझ कर कि इतने बड़े आलिम और नेक दिल शख्स ने ये कैसी ख़तरनाक हरकत की है अपने हमजिन्सों को इस ज़ेहर के प्याले से दूर रखने के लिये आगाह करने का काम करे तो इस पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगाया जा सकता। क्योंकि दुनिया में आलमे ज़मादात, आलमे नवातात और आलमे हैयानात का कि तमाम ज़ेहरों से बहकर बनी नूरे इन्सान को हलाक किया है। दुनिया में जिस क़दर ख़ौफ़नाक जंग हुए जिस क़दर अज़ाब वरपा किये गये जिस क़दर मज़हब के नाम पर क़ल व ख़ून हुए, उनमें से निस्फ़ से ज़्यादा इस ग़लत अक़ीदे की बिना पर वरपा हुए और इस तमाम कुश्लो ख़ून ने ज़मीन के बहिश्ती चेहरे को जहन्नम में तबदील कर दिया इसलिये अगरचे मैं इस अंगूरिस्तान का एक मामूली मज़दूर हूँ और अगरचे मैं स्वामी दयानन्द की ज़ुती का तसमा खोलने के भी लायक ख़्याल न किया जाऊँगा। मगर मैं इस ज़ेहरीले और खौफ़नाक अक़ीदे के बरख़िलाफ़ जो कि स्वामी दयानन्द ने बतौर बुनियादी उसूल के अपनी सोसायटी में दाख़िल किया है अपनी कमज़ोर आवाज़ उठाने से नहीं रह सकता। आओ! ज़रा बाज़ेह तीर से हम इस बात पर विचार करें कि वेदों को मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने का क्या मतलब है। वेदों को मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने का ये मतलब है कि इस पुरोहित को भी जो कि इनकी चाबी अपने हाथ में रखता है और जिसके कौल की आम आदमी पैरवी करते हैं। मुनज़ज़ा मिनल ख़ता तसलीम किया जाये। चुनांचे गुज़िश्ता तारीख़ इसकी शाहिद है और मौजूदा ज़माने में भी इसकी मिसालें मिलती हैं कि कोई मुक़द्दस किताब ख़्वाह कितने ही साफ़ अल्फ़ाज़ में क्यों न लिखी हुई हो। इसमें कुछ न कुछ ऐसे फ़िक़रात ज़रूर मिलेंगे जिनके कि दो तरह पर मज़नी किये जा सकते हों। इस तरह पुरोहित को मौका मिल जाता है कि वह इस बात का फ़ैसला करे कि दोनों में से किन मज़नी को ठीक तसलीम किया जाये। लेकिन अग्रे वाकिआ ये है कि कुतुबे मुक़द्दस का ज़्यादा हिस्सा ऐसा होता है जो बाज़ेह

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

नहीं होता। उनमें से बहुत-सी किताबों की ज़बान पेशतर इसके कि उनको मुनज़ज़ा मिनल ख़ता तसलीम किया जाये, मर चुकती हैं यानी व न बोली जाती है, न समझी जाती है और बार बार के उलट फेर से उनमें अक्सर पाठ, भेद और मिलावट आ जाती है। और उनमें मुतज़ाद बयानात पाये जाते हैं। इस तरह ये शक पैदा हो जाता है कि कौनसा हिस्सा असली और कौन सा मावाद की मिलावट है। अगर ये भी तसलीम कर लिया जाये कि किसी बहुत दूर के ज़माना साबका में किसी किताब को कोई ख़ास पुरोहित या पुरोहितों की जमाअत या कोई सोसायटी या चर्च मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानती थी तो ये नतीजा नहीं निकल सकता कि मावाद के लोग भी इसको वैसा ही मानें। इसलिये जो आदमी इन तमाम हालात वाकिआत पर ग़ौर करते हैं वह इस बात को तसलीम करने के बग़ैर नहीं रह सकते कि किसी मुक़द्दस किताब को मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने का ये मतलब है कि पुरोहित क्लास को लोगों की रूढ़ पर जुल्म व ज़ुल्म से इक़तदार हासिल रहे और जो लोग तारीख़ से वाकिफ़ हैं वह वज़ूही जानते हैं कि अगरचे पुरोहित क्लास में बड़े बड़े आलिम मुत्तफ़ी, परहेज़गार, साधू संत भी होते रहे हैं लेकिन बनी नूरे इन्सान पर तबाही इस ग़िरोह ने वरपा की है। इसका निस्फ़ भी बड़ी से बड़ी वबा और दीगर हलाकतों से नहीं आयी अगर ये भी तसलीम कर लिया जाये कि कोई किताब शुरू में मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानी जाती थी तो मौजूदा ज़माने में इसके मुनज़ज़ा मिनल ख़ता होने का वअज़ करना मज़न शरारत है। अब्बल तो इसलिये कि तजुर्वे ने ऐसे ग़लत अक़ीदे के प्रचार के ख़तरनाक नताईज़ को बुनिया पर ज़ाहिर कर दिया है। दूसरे कोई भी दयानतदार आलिम शख्स इस बात को तसलीम नहीं कर सकता कि दो हज़ार साल पहले किरसी किताब का असली मज़मून क्या था या इस मज़मून का असली मफ़हूम क्या था। इसलिये अगर स्वामी दयानन्द ये वअज़ कर रहा है कि वेदों का मुनज़ज़ा मिनल ख़ता है तो इसका मक़सद ख़्वाह कैसा ही आला हो लेकिन फिर भी यही कहा जायेगा कि वह एक शरारत फैला रहा है और वह अज़सरे नी बनी नूरे इन्सान के हाथ पाँव में वह ज़ुंज ख़ुर्बा पर नई हथकड़ियाँ और वेड़ियाँ डाल रहा है जिनके ज़रिये से पुरोहित क्लास ने बनी नूरे इन्सान को एक मुद्दत से जकड़ रखा था और जो वेड़ियाँ कि अब ढीली होती चली जा रही हैं। मैंने जहाँ तक वेद के मंतरों और उनके तराजिम को जो कि यूरोपियन

ग़ाज़ी महमूद बर्मापाल



आलिमों और हिन्दुस्तानी पंडितों ने किये हैं, पड़ा है। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि उनमें अक्सर मक़ामात पर खींच तान से काम लिया गया है। लेकिन अगर मैं इस बात को तसलीम कर लूँ कि स्वामी दयानन्द वेदों का जो तर्जुमा कर रहा है वह मुन्ज़ज़ा मिनल ख़ता है तो इसका ये मतलब होगा कि वह खुदा को उसके नज़दीक वेदों के इलहाम का मिम्बअ है, वराबरी का दावा करता है या वह इस मिम्बअ से ताज़ा इलहाम पाने का जिसके ज़रिये कि वह मुन्ज़ज़ा मिनल ख़ता तर्जुमा कर रहा है। मुद्दई है मैं विल्कुल निज़र होकर इसको चैलेंज देता हूँ कि वह या तो वेदों के मुन्ज़ज़ा मिनल ख़ता होने के बड़े अक़ीदे को ठीक साबित करे या वह इस बात का सबूत दे कि वह खुद भी मुलद्मि है।

मैं इस बात को वाज़ेह कर देना चाहता हूँ कि मुझे स्वामी दयानन्द की इल्मियत पर कोई ऐतराज़ नहीं है। मुम्किन है वह इस ज़माने में वेदों का सबसे बड़ा आलिम हो या ना हो लेकिन अगर वह खुद मुलद्मि नहीं है तो इसको वेदों का भाष्य महज़ उसकी अपनी ज़ाती राय हो सकती है जो कि मुम्किन है दुस्त हो और मुम्किन है गुलत हो। लाज़मी तो यही है कि इसमें दीगर इन्सान मुसन्निफ़ों की तरह बहुत सी ग़लतियाँ हों और किसी इन्सान की राय पर यूँ ही मुन्ज़ज़ा मिनल ख़ता होने की मुहर लगा देना, मेरे नज़दीक महज़ कुफ़्र है। लेकिन अगर स्वामी दयानन्द ताज़ा इलहाम का मुद्दई है तो उसके पास इस दावे का क्या सबूत है। उसने कौनसा अज़ीमुश्शान काम करके दिखाया है। उसने इस बात की क्या शहादत पेश की है कि वह जो कुछ बोल रहा है वह खुदा की ख़ालिस आवाज़ है और कि इसमें किसी दूसरी आसामानी या ज़ामीनी आवाज़ की मिलावट नहीं है। इस जैसे बहुत से आलिम और नेक इन्सान भी मौजूद हैं जो कि इस के भाषीय के बहुत से हिस्से को महज़ गुलत करार देते हैं। इसके पास क्या वजह है कि हम इन आलिमों के ख़्यालात पर इसको तरज़ीह दें।

(थ्योसोफ़्ट मार्च १८६३ ई०)

मिस्टर ब्रूम आंजहाँनी ने अपने मज़मून में खुद इस बात का इक्वाल किया है कि उन्होंने स्वामी दयानन्द के लिये सज़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं मुझे ज़रूरत नहीं है कि मैं उनकी तरफ़ से अल्फ़ाज़ की सज़ती के लिये मज़ज़रत करूँ जबकि वह खुद इस बात को तसलीम कर रहे हैं कि उन्होंने

सज़्त कलामी की है। लेकिन मेरे नज़दीक महज़ सज़्त कलामी कोई दलील नहीं है। वल्कि दावे की कमज़ोरी की अलामत है तावक़ते कि दावे के सबूत में अल्फ़ाज़ से बढ़कर सज़्त वाकिआत और संगीन दलाईल पेश न किये जायें। मुझे इस बात को अफ़सोस के साथ तसलीम करना पड़ता है कि मिस्टर ब्रूम ने स्वामी दयानन्द की पोज़िशन को कमज़ोर साबित करने के लिये सज़्त वाकिआत और संगीन दलाईल से इस क़दर काम नहीं लिया जिस क़दर कि उन्होंने सज़्त अल्फ़ाज़ से काम लिया है वह इस बात को तो सज़ती से महसूस करते हैं कि किसी किताब को इलहामी मानना पुरोहितों के हाथ में रज़ानी आज़ादी को फ़रोज़ कर देना है जो कि इलहाम की आड़ में मज़हबी मज़ालिम करते हैं लेकिन मिस्टर ब्रूम की ये दलील चन्दों ज़वरदस्त नहीं है। क्योंकि अगर पुरोहित इलहामी किताब की आड़ में वशतें कि वह दर हकीकत जोर व जुल्म का मजमुआ हो मज़हबी मज़ालिम कर सकते हैं तो इसी तरह वह इलहामी किताब के ज़रिये वशतें कि वह ख़ैर व वरक़त का मजमुआ हो मज़हबी दुनिया में अमन व अमान की भी वारिश कर सकते हैं पर किसी इलहामी किताब के बरख़िलाफ़ जिहाद शुरू करने से पेशतर इस बात का जानना ज़रूरी है कि वह इलहामी किताब जोर व जुल्म का मजमुआ है या नहीं। अगर ऐसा हो तो उसके बरख़िलाफ़ सज़्त से सज़्त अल्फ़ाज़ में जंग करना चाहिये। लेकिन अगर इस में इस किस्म के एहक़ाम नहीं हैं वल्कि वह ख़ैरो वरक़त की तालीम देती है। तो हमें महज़ इस लिये इसके बरख़िलाफ़ जिहाद नहीं करना चाहिये कि इसको इलहामी तसलीम किया गया है। मेरे नज़दीक इलहाम ऐसी ख़तरनाक चीज़ नहीं है जैसा कि मिस्टर ब्रूम ने इसको फ़र्ज़ किया है। पर मैं मिस्टर ब्रूम की स्प्रिट में किसी मुक़द्दस किताब की महज़ इस बिना पर मुज़ालफ़त करने के लिये तैयार नहीं हूँ कि वह किताब इलहामी तसलीम की गयी है या मैं किसी शख्स को महज़ इसलिये काविले मलामत या ग़द्दार करार नहीं दूँगा कि वह किसी किताब के इलहामी होने की तालीम देता है। वल्कि अपना फ़तवा देने से पेशतर मैं इस बात को देखने की कोशिश करूँगा कि इस किताब की तालीम क्या है और कि इस शख्स पर पुरोहित का इस किताब की तालीम के बारे में क्या बयान है पर मैं महज़ इस बिना पर कि ज़माना गुज़िश्ता में दूँकि पुरोहित क्लास ने इलहामी कुतुब की आड़ में लोगों पर जुल्म किये गये हैं। इसलिये हर एक पुरोहित काविले

मलामत है। मैं किसी मज़हब के पुरोहित के वरखिलाफ़ फतवे देने को गुनाह समझता हूँ तावज़ते कि पहले इस पुरोहित के अपने बयान को न सुन लिया जाये। आम अदालतों में भी यही दस्तूर देखने में आता है कि मुलाज़िम पर फर्द जुर्म लगाने से पेशतर इसके बयान को सुन लिया जाता है। या कम से कम सज़ा देने से पहले इसको डिफेंस का मौका दिया जाता है पर लाज़मी है कि पहले हम इस बात की पड़ताल करें कि जिन वेदों को स्वामी दयानन्द ने इलाहामी माना है उनके बारे में स्वामी दयानन्द का अपना बयान किया है अगर स्वामी दयानन्द के अपने वेद भाष्य के ज़रिये वेदों में से कोई ऐसी बात सावित होती हो जो कि पुरोहितों के हाथ में जाकर दुनिया में कुशत व खून का बाइस होने का एह्तमाल रखती हो तो वक़ौल मिस्टर ब्रूम स्वामी दयानन्द के वेद के हक में जिस कदर सख्त से सख्त अल्फाज़ इस्तेमाल किये जायें वह कम हैं। लेकिन अगर स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य से वेद विल्कुल ख़ैर व वरकत का मजमूआ सावित होते हों तो हर एक शख्स को स्वामी दयानन्द के नाम पर नारा-ए-आफ़रीं बुलन्द करना चाहिये। मेरे ख़्याल में ये एक ऐसी मुनसिफ़ाना पोज़िशन है जो कि हर एक मुहक्किक या सदाकत पसन्द को मद्दे नज़र रखनी चाहिये ताकि वह सदाकत की तलाश में राहें रास्त से न भटकने पाये मुझे उम्मीद है कि वह असहाय जो वेदों को इलाहामी मानते हैं और वह असहाय जो वेदों को इलाहामी नहीं मानते। वह जो वेदों को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं और वह जो वेदों को इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखते मेरे मज़कूर वाला पोज़िशन को विल्कुल मुनसिफ़ाना करार दूँगे।

दूसरी फसल

## स्वामी दयानन्द के कदमों में

मैं कह चुका हूँ कि किसी मज़हब या किसी शख्स पर नुकताबीनी करने से पेशतर इस बात का जानना निहायत ज़रूरी है कि उस मज़हब या उस शख्स के कौन से मसलमात हैं जिनको वह अपने नज़दीक आला से आला मसलमात करार देता है। वह कौन सी किताब को अपने नज़दीक वेहतरून किताब समझता है किसी मज़हब या किसी शख्स को फतह पाने की गुर्ज़ से गिराने की कोशिश करना हक़ व वातिल की तमीज़ में मबद्दगार नहीं हो सकता। किसी मज़हब या मज़हबी किताब पर नुकताबीनी करते वक़्त उन ज़मीन दोज़ रास्तों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिये जो कि उस मज़हब या मज़हबी किताब के मदाह के नज़दीक मतरुक ख़्याल किये जाते हैं। निहायत ज़रूरी अम्र तो ये है कि पहले फ़रीक़ सानी को बयान को मुकम्मल ग़ौर और सन्न से सुना जाये कि वह क्या कहता है। अगर इस का बयान दरहक़ीक़त माकूल है तो उसको इसलिये नामाकूल सावित करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये कि उसको गिराना मफ़सूद है। इस उसूल को मबद्देनज़र रखते हुए इस बात की तहक़ीक़त करनी चाहिये कि आया स्वामी दयानन्द वेदों को इलाहामी या मुनज़ज़ा मिनल ख़ता मानने की वजह से मिस्टर ब्रूम के अल्फाज़ में वाकई गुदर था या नहीं और आया वेद दरहक़ीक़त खुदा का कलाम हो सकते हैं या नहीं? लाज़मी है कि सबसे पहले स्वामी दयानन्द के बयान को निहायत ग़ौर से सुन लिया जाये।

मिस्टर ब्रूम ने स्वामी दयानन्द को जिस सोसायटी का बानी करार दिया है वह सोसायटी इस बात को तस्लीम करती है कि सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द की किताब है अगर कोई ये कहे कि ये किताब स्वामी दयानन्द की नहीं है तो वह सोसायटी इस बात को हरगिज़ तसलीम नहीं करेगी। इसलिये अगर स्वामी जी के मसलमात या ख़्यालात का सही सही पता लगाना हो तो उसको इस किताब को पढ़ना चाहिये जो कि स्वामी दयानन्द की मुसतनद तसनीफ़ ख़्याल की जाती है। सत्यार्थ प्रकाश के बारहवें समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने चारदाक के सत का खंडन करते हुए उनकी किताब में से एक

जगह चन्द श्लोक दर्ज किये हैं जिनका तर्जुमा सत्यार्थ प्रकाश में मुफ़्फ़सला जैल है।

“वेद के बनाने वाले षाँड, धूर्त और निशाचर यानी राक्षस ये तीन हैं। जिरफरी, तिरफरी वगैरह पंडितों के मकर की बातें हैं। देखो धूर्तों की काररवाई कि घोड़े के लंग की औरत पकड़े, यजमान की औरत का इसके साथ हम सोहवत कराना और लड़की से टट्टा करना वगैरह लिखा है। वह धूर्तों के सिवाये और किसी का काम नहीं हो सकता और जहाँ गोशत खाना लिखा है वह वेद का डिस्सा राक्षस का बनाया हुआ है।” (सत्यार्थ प्रकाश पेज नं. २७८ समूलास १२)

वेदों के बारे में मज़कूरा वाला राय चारवाक मज़हब वालों की है। अगर इस राय को सही तसलीम कर लिया जाये तो वेद काविले तक हो जाते हैं। लेकिन स्वामी दयानन्द इस राय को ग़लत करार देता है। इसलिये चारवाक वालों की राय स्वामी दयानन्द आर्य समाज के लिये कोई हुज्जत नहीं हो सकती। स्वामी दयानन्द ने इसका ये जवाब दिया है।

“अब कहिये अगर चारवाक वगैरह ने वेद वगैरह सच्चे शास्त्र देखे सुने या पढ़े होते तो कभी इस तरह वेदों की मज़मूत न करते कि वेद षाँड, धूर्त और निशाचर जैसे आदमियों के बनाये हुए हैं। वह ऐसी बात हरगिज़ न निकालते। अलबत्ता मझीधर वगैरह, टीकाकार (मुफ़्फ़सरीन) षाँड, धूर्त और निशाचर थे ये उनकी मक्कारी है वेदों का कसूर नहीं है लेकिन चारवाक, अभाजन बोध और जैनियों पर अफ़सोस है कि उन्होंने चार वेदों की असली संहिताओं को न सुना, न देखा और न किसी आलिम से पढ़ा। इसी वजह से उनकी अक्ल मारी गयी और वह वे सरो पा वेदों की मज़मूत करने लगे। बदकिरदार वाम मार्गियों के वेसवत मनगढ़त और वाद्विगत शरहों को देख कर वेदों के मुखालिफ़ बन गये और वे इस्लामी के अथाह समन्दर में जा गिरे। जाये गौर है कि औरत से घोड़े का लिंग पकड़वाकर इससे सोहवत करवाना और जजमान की कन्या से हँसी टट्टा वगैरह करना वाम मार्गियों के सिवाये और किसी आदमी का काम नहीं वाद्विगत मनश वेदों के खिलाफ़ और ग़लत शरह उन मझपापी वाम मार्गियों के सिवाये और कौन करता। वज़ा अफ़सोस तो इन चारवाक

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

वगैरह पर आता है कि वह विला सोचे समझे वेदों की मज़मूत करने पर मुस्तेद हो गये ज़रा तो अपनी अक्ल से काम लेते मगर बेचारे करते क्या उनमें इतना इत्म ही नहीं था कि हक़ व वातिल पर गौर करके हक़ की ताईद और वातिल की तरदीद कर सकते। गोशतख़ोरी भी उनही वाम मार्गी शारहों की कार्यवाही है इसलिये उनकी को राक्षस कहना बजा है। लेकिन वेदों में किसी जगह गोशत का खाना नहीं लिखा इसलिये विला शक़ व शुबहा ऐसी ऐसी झूठी बातों का पाप इन शारहों को और नीज़ उनको जिन्होंने वेदों को जानने सुनने के बगैर ही मनमानी मज़मूत की है लगेगा। सच तो ये है कि जिन्होंने वेदों की मुखालफ़त की और करते हैं या करेंगे वह जिज़ललत के अंधेरे में पड़े हुए सुख के अवज़ जितना हैवतनाक़ दुख़ पायें उतना ही थोड़ा है इसलिये कुल नूए इन्सान को वेदों के मुताबिक़ चलना निहायत वाजिब है। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १२ पेज २७६)

इस बात का वाकई अफ़सोस करना चाहिये कि मज़कूरा वाला तहरीर में वअज़ ऐसे अल्फ़ाज़ मौजूद हैं जो कि एक संजीदा और शार्दस्ता बहस में नहीं होने चाहिये जिस तरह मिस्टर ह्यूम ने अपने मज़मूत में स्वामी दयानन्द के लिये सख़्त अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किये हैं। इस तरह बल्कि इससे ज़्यादा स्वामी दयानन्द ने अपने मुखालफ़ीन के लिये मज़कूरा वाला तहरीर में सख़्त अल्फ़ाज़ का इस्तेमाल किया है। अल्फ़ाज़ की सख़्ती या भद्रपेन को नज़र अन्बाज़ करते हुए इस बात का देखना निहायत ज़रूरी है कि स्वामी दयानन्द की पोज़िशन क्या है। स्वामी दयानन्द चारवाक वालों, बुद्धों और जैनियों के वरख़िलाफ़ ये सगीन फ़तवा देता है कि उनकी अक्ल मारी गयी है क्योंकि उनमें कोई वेदों का आलिम या वेदों का मझनों से पढ़ने और सुनने वाला मौजूद नहीं है। स्वामी दयानन्द का ये फ़तवा लाज़मी नहीं है कि रास्ती पर मुबनी हो। लेकिन स्वामी दयानन्द और वेदों की पोज़िशन को समझने के लिये स्वामी दयानन्द का बयान सत्र से सुन लेना ज़रूरी है। स्वामी दयानन्द कहता है कि जिन तफ़ासीर की बिना पर चारवाक वाले वेदों की मज़मूत करते हैं वह वाम मार्गियों की तफ़ासीर हैं और कि वाम मार्गी वेदों से कतई अंधेरे में थे। अगरचे स्वामी दयानन्द के मुखालिफ़ स्वामी दयानन्द के बारे में भी यही फ़तवे देते हैं कि दरअसल स्वामी दयानन्द वेदों को नहीं समझता था। लेकिन

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

इस वहस में पड़ना चन्दों ज़रूरी नहीं है जबकि इस बात का पता लगाना मद्दे नज़र हो कि वह शख्स जो प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर के अल्फ़ाज़ में “वेदों के पीछे दीवाना हो रहा हो” वह वेदों को किस शक्त में पेश करता है इसका फ़ैसला इस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक इस बात को तस्लीम या कम अज़ कम फ़र्ज़ न कर लिया जाये कि वाक़ई स्वामी दयानन्द का वाम मार्गियों की तफ़सीरों के बारे में जो ख़्याल है वह दुरुस्त है इसलिये अगर हमें स्वामी दयानन्द की पोलिशन को समझना हो तो हमें कमाल इज़्ज़त से इसकी बात को सुनना पड़ेगा और अगर हम ये कहेंगे कि जिन मुफ़रिसरीन को स्वामी दयानन्द वाम मार्गी बनाता है वह दरअसल दुरुस्त तफ़सीर कर गये हैं और ये कि स्वामी दयानन्द की तफ़सीर ग़लत है तो ये स्वामी दयानन्द और उन मुफ़रिसरीन का वाहमी दंगल करवाना है। इसलिये हमें वेदों के बारे में कोई ठीक ठीक राय कायम करने का मौक़ा नहीं मिलेगा। न ही उन मुफ़रिसरीन की राय जिनकी कि स्वामी दयानन्द के नज़दीक “अक्ल मारी गयी” थी स्वामी दयानन्द के लिये कोई सनद हो सकती है और न ही उन मुफ़रिसरीन की राय का इस सोसायटी पर कोई असर पड़ सकता है जो कि वेदों को स्वामी दयानन्द की तफ़सीर के मुताबिक़ खुदा का क़लाम मानती है पस लाज़मी बात है कि स्वामी दयानन्द और वेदों की पोज़िशन को समझने के लिये हम अगर दिल से नहीं तो कम अज़ कम हकीक़त को जानने की ख़ातिर स्वामी दयानन्द के क़दमों में बैठकर इन बातों का इक़रार करें कि -

- (१) चारवाक वालों ने न वेदों को पढ़ा न सुना न देखा। वेदों का लासानी आलिम स्वामी दयानन्द था।
- (२) सुधीर वग़ैरह मुफ़रिसरीन शॉड व धूर्त, निशाचर और वाम मार्गी थे। उनकी तफ़सीर हरगिज़ क़ाबिले ऐतबार नहीं हैं बल्कि उनके मुक़ाबले में स्वामी दयानन्द की तफ़सीर वेदों पर सनद है क्योंकि स्वामी दयानन्द आलिम फ़ाज़िल, योगी, ऋषि और मुर्ताज़ था।
- (३) चारवाक, बोध, अभ्रानक और जैनियों ने न वेदों को पढ़ा न सुना, न देखा इसलिये उन की अक्ल मारी गयी और वह बेसरो पा वेदों की मज़मूत करने लग गये और वाम मार्गियों की तफ़सीरों को देखकर वेदों के मुख़ालिफ़ बन गये और जिहालत के अथाह समन्दर में जा गिरे मगर स्वामी दयानन्द ने वेदों को पढ़ा सुना और देखा बल्कि

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

उनका भापीय भी किया और वह दिल व जान से वेदों का आशिक़ बल्कि वेदों के पीछे दीवाना था और कि वह हर एक किस्म की जिहालत से पाक था।

- (४) जिन लोगों ने ऐसी शरहें लिखी हैं और जो वेदों को जानने और सुनने के बग़ैर ही वेदों की मज़मूत करते हैं वह पापी हैं मगर स्वामी दयानन्द ने जो तफ़सीर लिखी है इसमें इस किस्म की कोई मज़मूत नहीं है इसलिये इस तफ़सीर को पढ़ने वाले पाप के नहीं बल्कि सवाब के मुस्ताब्कि हैं।

- (५) अलगरज़ वेदों के बारे में सही सही राय कायम करने के लिये स्वामी दयानन्द की तफ़सीर सनद है। वाक़ी तमाम तफ़सीर जिनका कि खुद स्वामी दयानन्द ने रद कर दिया है मरदूर हैं और वह हमारे लिये सनद नहीं हैं।

स्वामी दयानन्द के क़दमों में बैठकर अब ये प्रार्थना है कि वेदों की जिन तफ़सीर को आप ने ग़लत क़रार दिया है वे वाक़ई ग़लत हैं। अब आप कृपा करके हमें अपनी तफ़सीर दीजिये ताकि हम जो वेदों के बारे में “वाम मार्गियों की तफ़सीरों को पढ़ पढ़कर हैरान व परेशान हो रहे थे आप की तफ़सीरों से वेदों पर हमारा ऐतकाद ज़म जाये और हम उनको खुदा का क़लाम मानने लग जायें। ये एक ऐसी माकूल पोज़िशन और प्रार्थना है कि जिसको स्वामी दयानन्द या कोई दूसरा माकूल इन्सान नापसन्द नहीं कर सकता। अब जबकि हम पहली तमाम तफ़सीर को स्वामी दयानन्द के इरशद के मुताबिक़ हाथ से फेंक चुके हैं। देखना चाहिये कि स्वामी दयानन्द इसके अवज़ में हमारे हाथ में क्या देता है।’

ग़ज़ा महमूद धर्मपाल

तीसरी फसल

## स्वामी दयानन्द और उनका मैयार standard

स्वामी दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के सातवें समुल्लास में ईश्वर प्रार्थना का मज़मून दर्ज करते हुए लिखते हैं-

इस किस्म की प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और परमेश्वर इसको कबूल करता है जैसे कि ये हैं कि ऐ परमेश्वर आप मेरे दुश्मनों को फना करो, मुझको सबसे बड़ा बनाओ, मेरी ही नेक नामी हो और सब मेरे मातेहत हो जायें वगैरह वगैरह। क्योंकि अगर दोनों दुश्मन एक दूसरे के फना के वास्ते प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों को फना कर देवे। अगर कोई कहे कि जिसकी मुहब्बत ज्यादा होगी इसकी प्रार्थना सफल हो जायेगी तो हम कह सकते हैं कि जिसकी मुहब्बत कम हो उसका दुश्मन भी कम दर्जा फना होना चाहिये। ऐसी जिहालत की प्रार्थना करते करते कोई ऐसी प्रार्थना भी करने लग जायेगा कि ऐसे परमेश्वर आप रोटी बनाकर हम को खिलाइये मेरे मकान में झाड़ू लगाइये, कपड़े धो दीजिये और खेती बाड़ी भी कर दीजिये। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ७)

स्वामी दयानन्द का मज़कूरा वाला ज़्यालालत जिहायत ही माकूल है वाकई जो शख्स ये प्रार्थना करता है कि इसके दुश्मन फना हो जायें और वही ज़िन्दा रहे वह एक जाहिल इन्सान है और उसकी इस किस्म की प्रार्थना खुद स्वामी दयानन्द के अल्फाज़ में महज़ जिहालत की प्रार्थना है। इससे भी बढ़कर अगर कोई शख्स हमें इस किस्म की प्रार्थना की तालीम दे तो वह उसको उज़ल समझना चाहिये और जिस किताब में इस किस्म की प्रार्थनावर्ण दर्ज हो वह किताब किसी सूत्र में भी माकूल नहीं कही जायेगी। इस पहलू में स्वामी दयानन्द की पोज़िशन बहुत माकूल है इसी उसूल की विना पर स्वामी दयानन्द ने दीगर मज़ाहिब की मुक़द्दस किताबों पर बड़ी सख्त नुक़तावीनी की है। मेरा मक़सद यहाँ पर ज़ाहिर करना नहीं है कि वह नुक़तावीनी कहाँ तक दुस्तत है या ग़लत है। बल्कि स्वामी दयानन्द के इस उसूल को मालूम करना है जिनकी विना पर वह दीगर मज़ाहिब की मानी हुई मुक़द्दस किताबों को खुदा

का कलाम मानने से मुनकिर हैं और वह उनके मुकाबले में वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं। स्वामी दयानन्द के इस मैयार या उसूल का पता लगाने के लिये मैं मुनासिब समझता हूँ कि यहाँ पर स्वामी दयानन्द की इस नुक़तावीनी की घन्द मिसालें दर्ज कर दी जायें जो कि उन्होंने कलामे मजीद पर की हैं। कुरआन मजीद अहले इस्लाम की मज़हबी किताब है और मुसलमान इसको खुदा का कलाम मानते हैं। बल्कि कलामे मजीद का दूसरा नाम कलामुल्लाह यानी खुदा का कलाम है। इस बात को बताने की ज़रूरत है कि कुरआन मजीद अरबी ज़बान में है। ये भी साफ़ बात है कि स्वामी दयानन्द अरबी से बिल्कुल नायाकिफ़ थे। मगर चूँकि कुरआन के आला से आला तर्जुमे दुनिया की मुस्तलिफ़ ज़बानों में मौजूद हैं और उनमें वअज़ तराज़िम अहले इस्लाम के आला पावे के उलेमा के लिये हुए हैं। इसलिये ये ऐतराज़ कि चूँकि स्वामी दयानन्द अरबी नहीं जानते थे। लिहाज़ा वह कुरआन मजीद पर किसी किस्म की नुक़तावीनी करने का हक़ नहीं रखते थे। चन्द दिन वज़नवार नहीं रह जाता जबकि यह कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द ने उन ही तर्जुमों को अपने लिये काफी समझा। जिनके बारे में उनको बताया गया था कि वह अहले इस्लाम के नज़दीक मुस्तनद हैं गो अहले इस्लाम उनको मुस्तनद न मानते हों चूनांचे खुद स्वामी दयानन्द ने कुरआन मजीद पर नुक़ता वीनी शुरू करने से पेशतर अपनी इस पोज़िशन को बर्दी अल्फाज़ वाज़ेह कर दिया है।

जो ये चीज़ें सब समुल्लास मुसलमानों के मज़हब की बावत लिखा है वह सिर्फ़ कुरआन की रू से लिखा गया है किसी और किताब के अकाईद की रू से नहीं। क्योंकि मुसलमान कुरआन शरीफ़ ही पर पूरा ऐतकाद रखते हैं। अगरचे मुस्तलिफ़ फिरके होने के बावज़ किसी ख़ास लफ़्ज़ के मअ्नी वगैरह में इज़्तिलाफ़ रखें। तो भी कुरआन के बारे में सब मुत्ताफ़िक़ हैं। कुरआन अरबी ज़बान में है। इसका जो तर्जुमा उर्दू में मौलवियों ने किया है इस तर्जुमे को बाइरुफ़ देवनागरी बज़वान आर्य भाषा अरबी के बड़े बड़े आलिमों से सही करवाने के बाद लिखा गया है। अगर कोई कहे कि ये तर्जुमा ठीक नहीं है तो इसको लाज़िम है कि मौलवी साहेबान की ठीक किये हुये तर्जुमे की पहले तरदीद करे बाद अज़ां

इस मज़मून पर कलम उठाये। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४)

स्वामी दयानन्द की मज़कूरा वाला तद्वरीर से ज़ाहिर होता है कि उनके पास कुरआन मजीद का कोई ऐसा तर्जुमा मौजूद था उनके ख्याल में मौलवियों ने किया था और जिसको स्वामी दयानन्द ने बज़ज़म खुद “अरबी के बड़े बड़े आलिमों से सही करवाया, बहुत अच्छा होता अगर स्वामी दयानन्द अरबी के उन बड़े बड़े आलिमों के नाम” भी ज़ाहिर कर देते। जिनसे कि वह तर्जुमा दुरुस्त करवाया था ताकि इस बात का फैसला हो जाता कि आया ऐसे उलेमा का तर्जुमा अहले इस्लाम के नज़दीक सनद हो सकता है या नहीं। मगर स्वामी दयानन्द ने उनके नाम को पोशीदा रखने में जो मसलेहत समझी होगी उस पर वहस करना बड़ा मुश्किल है। ताहम इतना कलम जा सकता है कि स्वामी दयानन्द ने कुरआन मजीद के जिस तर्जुमे की बिना पर कुरआन मजीद पर ऐतराज़ करते हैं वह तर्जुमा अहले इस्लाम के उलेमा का किया हुआ या मुस्तनद मालूम नहीं होता। इसलिये जब तर्जुमा ही ग़ैर मुस्तनद हो तो इस पर जिस क़द्र भी नुकताचीनी की जायेगी वह ज़मीन पर गिर जायेगी। मैं इस बात को एक गिसाल के ज़रिये वाज़ेह कर देना चाहता हूँ कुरआन मजीद में इस बात को बतौर दावे के पेश किया गया है कि वह फ़साहत या बलागत में लासानी किलाव है। चुनांचे मुसालिफ़ीने कुरआन मजीद को इसमें एक जगह वर्दी अल्फ़ाज़ विलेन्न दिया गया है।

وَأِنْ كُنْتُمْ فَسَى زَنْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا شُعْبَدَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ فَإِنْ لَمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُفْئِدَهَا النَّاسَ وَالْحِجَارَةُ إِعْذَاتٌ لِّلْكَافِرِينَ (ب : البقرة २४)

“और वह जो हम ने अपने बन्दे (मुहम्मद स०अ०व०) पर (कुरआन) उतारा है। अगर तुमको इस में शक हो और ये समझते हो कि ये किताव खुदा की किताव नहीं। बल्कि आदमी की बनायी हुई है और तुम अपने इस दावे में सच्चे हो तो इसी जैसी एक सूरत तुम भी बना लाओ और अल्लाह के सिया अपने हिमायतियों को बुला लो। पस अगर (स) इतनी बात भी न कर सको और तुम हरगिज़ न कर सको तो बोज़ख़ की आग से डरो जिसका ईधन आदमी और पत्थर होगे और वह (बोज़ख़) मुनकिरों के लिये

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

दहकी दहकाई तैयार है (स)।”

(तर्जुमा मौलवी हाफ़िज़ नज़ीर अहमद साहब) मज़कूरा वाला तर्जुमे में जिन अल्फ़ाज़ को (स) में कर दिया गया है उनको मद्दे नज़र रखना चाहिये क्योंकि इस तर्जुमे का स्वामी दयानन्द के “उलेमा” के तर्जुमे से मुकाबला करने में मदद मिलेगी स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास में जो कि कुरआन मजीद पर नुकताचीनी का वाव है। इस आयत के ऊपर भी ऐतराज़ किया है। लेकिन उन्होंने अरबी के उलेमा का जो तर्जुमा इस आयत का सत्यार्थ प्रकाश में दर्ज किया है वह वर्दी अल्फ़ाज़ है और जो तुम इस चीज़ से शक सें हो जो हम ने अपने पैगम्बर के ऊपर उतारी तो इसकी सी एक सूरत ले आओ और शाहिदों अपने को पुकारो। सिवाये अल्लाह के अगर हो तुम सच्चे फिर अगर न करो और हरगिज़ न करोगे तुम इस आग से डरो कि जिसका ईधन आदमी है और काफ़िरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये हैं। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास १४, ऐतराज़ नं. ८)

मज़कूरा वाला तर्जुमे के जिस आख़री हिस्से पर ख़त कर दिया गया वह काविले ग़ीर है। इस बात का पता नहीं लग सकता कि अरबी के जिन उलेमा ने स्वामी दयानन्द को ये सही तर्जुमा करके दिया था वह किस दाख़लजलूम के सनद याफ़ता था। लेकिन मामूली अरबी जानने वाला शङ्स भी यह कह सकता है कि ये तर्जुमा बिल्कुल ग़लत है क्योंकि मज़कूरा वाला आयत में ऐसे अल्फ़ाज़ नबारद हैं कि जिनका तर्जुमा “काफ़िरों के वास्ते पत्थर तैयार किये गये हैं” हो सकता है पस जिस सूरत में कुरआन मजीद में ऐसी आयत भी नबारद है कि जिसका तर्जुमा सत्यार्थ प्रकाश में मज़कूरा वाला अल्फ़ाज़ में दिया गया है तो इस वेबुनियाद बात पर जिस क़द्र नुकताचीनी होगी वह नुकता चीनी भी ज़मीन पर गिर जायेगी। लिहाज़ा मज़कूरा वाला वेबुनियाद तर्जुमे की बिना पर स्वामी दयानन्द का ये लिखना कि उन्होंने कुरआन मजीद पर नुकताचीनी करने के लिये जिस तर्जुमे को आगे रखा है। वह बड़े बड़े मौलवियों और अरबी के उलेमा का सही किया हुआ तर्जुमा है। एक वेबुनियाद बात साबित होती है। ऐसी सूरत में सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की बुनियाद दरिया के किनारे की रेत में डेह जाती है। ज़ाहिर है कि बुनियाद के गिरने के साथ ही इस पर जिस क़द्र मज़ल तैयार किया गया हो वह भी गिर

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

जाता है। लिहाजा सत्यार्थ प्रकाश का चौदहवाँ समुल्लास कुरआन मजीद के बारे में कोई दुरुस्त नुकता चीनी नहीं कहा जा सकता और वह सारे का सारा जमीन पर गिर जाता है।

.....एडिटर.....  
(स्वामी दयानन्द इस चैलेंज के जवाब में १४ समुल्लास की ८ वीं समीक्षा में कहते हैं फ़ेजी ने अकबर के समय में कुरआन बना लिया था, हैरत की बात है सभी जानते हैं कि फ़ेजी ने टीका कमेंटरी में एक फन दिखाया था, उसने बिना नुक्ते यानि बिन्दी का प्रयोग किये बिना कुरआन की तफ़्तीर लिखी थी, जिस पर इस्लामी दुनिया का नाज है , यह सारा भी हमेशा सच की ओर बुलाने को प्रेरित करती रही है)

*And if you (Arab pagans, Jews, and Christians) are in doubt concerning that which We have sent down (i.e. the Qur'an) to Our slave (Muhammad, Peace be upon him), then produce a surah (chapter) of the like thereof and call your witnesses (supporters and helpers) besides Allah, if you are truthful. [Qur'an 2:23]*

***This is a challenge that still stands today, as no one has met this challenge in the over one thousand four hundred (1,400) years since it was first made. This is a point upon which we ask the reader to ponder.***

.....एडिटर.....  
इस वयान से मेरा मतलब कुरआन मजीद का डिफेंस करना नहीं है और न ही कुरआन मजीद को मेरे डिफेंस की ज़रूरत है। बल्कि यहाँ पर मेरा मुद्दा स्वामी दयानन्द जैसे मुहक्किफ़ की पोज़िशन का पता लगाना है कि वह किन वज़ाहत पर किसी मुक़द्दस या इल्लामी किताब का फ़ैसला करने के लिये तैयार हैं। नकर कुफ़ कुफ़ तवाशद को मद्दे नज़र रखते हुये ज़रूरी

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

मालूम होता है कि मैं यहाँ पर चन्द ऐसी इबारतें सत्यार्थ प्रकाश में से नक़ल कर दूँ कि जिनकी बिना पर स्वामी दयानन्द ने कुरआन मजीद को इल्लामी किताब मानने से इनकार कर दिया है। चुनांचे वह बर्दी अल्फ़ाज़ है।

कुरआन (१)

सब तारीफ़ वास्ते अल्लाह के जो परवरदिगार आलमों का वख़्शिश करने वाला मेहरबान है।

स्वामी दयानन्द (१)

अगर कुरआन का खुदा दुनिया का परवरदिगार होता और सब पर वख़्शिश और रहम किया करता तो दूसरे मज़हब वालों और हैवानात वग़ैरह को भी क़त्ल करवाने का हुक्म न देता।

कुरआन (१५)

और जब लिया हम ने अहद तुम्हारा न डालो तुम लहू अपने आपस के और न निकाल दो किसी आपसी अपने को घरों अपने से फिर इकरार किया तुम ने और तुम शाहिद हो फिर तुम वह लोग हो कि मार डालते हो आपस अपने को और निकाल देते हो एक फिरके को आप में से घरों उनके से।

स्वामी दयानन्द (१७)

भला इकरार करना और कराना महबूदुल अक़ल आदमियों की यात है या खुदा की आपस में लहू न वहाना और अपने हम मज़हबों को घर से न निकालना और दूसरे मज़हब वालों का लहू वहाना और घर से उन्हें निकाल देना भला कौन सी अच्छी बात है। ये तो बेवकूफी और तरफ़दारी से भरी हुई फज़ूल बात है।

कुरआन (२०)

काफ़िरों पर लानत अल्लाह की।

स्वामी दयानन्द (२०)

जिस तरह तुम ग़ैर मज़हब वालों को काफ़िर कहते हो उसी तरह क्या वे तुम को काफ़िर नहीं कहते और वह अपने मज़हब की तरफ़ से तुम्हें लानत देते हैं। ये सब झगड़े जिहालत के हैं।

कुरआन (३३)

तुम पर मुरदार लहू और गोशत सुअर का हराम है।

स्वामी दयानन्द (३३)

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल



जिस जानदार से ज्यादा फायदा पहुँचे मसलन गाय वगैरह उनके मारने की मुझालफत न करने से खुदा दुनिया को नुकसार पहुँचाने वाला साबित होता है और ईजा रसानी के गुनाह से बचना भी हो जाता है। ऐसी बातें खुदा और खुदा की किताब की हरगिज़ नहीं हो सकती।

कुरआन (३५)

अल्लाह की राह में लड़ो, उनसे जो तुम से लड़ते हैं, मार डालो तुम उसको जहाँ पाओ क़त्ल से कुफ़ बुरा है।

स्वामी दयानन्द (३५)

विला कसूर किसी को मारना सख़्त गुनाह है। उनके नज़दीक मज़हब का कबूल न करना कुफ़ है और काफ़िर के क़त्ल को मुसलमान लोग अच्छा मानते हैं। उनका मज़हब ग़ैर मज़हब वालों से सख़्त कलम करना सिखाता है। ये बात न खुदा की न खुदा के मोअज़तकिद आलिम की और न खुदा की किताब की हो सकती है।

कुरआन (३६)

और अल्लाह नहीं दोस्त रखता फ़साद को। ऐ लोगो कि ईमान लाये हो दाख़िल हो वीच इस्लाम के।

स्वामी दयानन्द (३६)

अगर अल्लाह फ़साद नहीं चाहता तो क्यों आप ही मुसलमानों को फ़साद करने पर आमादा करता है। और मुफ़सिद मुसलमानों से दोस्ती करता है। अगर मुसलमानों के मज़हब में दाख़िल होने से खुदा राज़ी होता है। तो वह मुसलमानों का ही तरफ़दार है। सब दुनिया का खुदा नहीं। इससे ये ज़ाहिर होता है कि न कुरआन खुदा का बना हुआ न उसमें क़हा हुआ सच्चा खुदा हो सकता है।

कुरआन (४८)

मुसलमानों को चाहिये कि वह काफ़िरों को दोस्त न बनायें, सिवायें मुसलमानों के जो कोई ये करे सो वह अल्लाह की तरफ़ से नहीं है।

स्वामी दयानन्द (४८)

अब देखिये तअस्सुब की बातें जो दीने इस्लाम में नहीं हैं। उनको काफ़िर करार दिया गया है। ग़ैर मज़हब के नेक़कारों से भी दोस्ती न रखना और वद मुसलमानों ही से दोस्ती रखने की तालीम देना खुदा के शायान नहीं।

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

इसलिये ये कुरआन कुरआन का खुदा और मुसलमान लोग महज़ तअस्सुब जिद्दालत से पुर हैं और मुसलमान लोग तारीकी में हैं।

कुरआन (५२)

और मदद दे हम को ऊपर क़ौमे काफ़िरों के।

स्वामी दयानन्द (५२)

देखिये मुसलमानों की ग़लती कि जो अपने मज़हब के नहीं। उनके मारने के वास्ते खुदा से दुआ करते हैं। क्या खुदा साबा लौह है जो उनकी बात मान लेगा।

कुरआन (५८)

और न वन्द करें हाथों अपने को पस पकड़ो उनको और मार डालो उनको जहाँ पाओ।

स्वामी दयानन्द (५८)

अब देखिये परले दर्जे के तअस्सुब की बात कि जो मुसलमान न हो। इसको जहाँ पाओ मार डालो। और मुसलमान को न मारो, भूल से भी मुसलमान के मारने में दोख़ और औरों के मारने में बहिश्त मिलेगा। ऐसी तालीम कुरे में डालनी चाहिये, ऐसी किताब ऐसे पैगम्बर, ऐसे खुदा और ऐसे मज़हब से सिवाये नुकसान के फ़ायदा कुछ भी नहीं। उनको न होना अच्छा है। ऐसे जाहिलाना मज़हबों से अक्लमंदों को अलेहदा रहकर वेदिक अहकाम को तसलीम करना चाहिये क्योंकि उनमें झूठ जरा भी नहीं है।

कुरआन (७६)

सवाल करते हैं तुझ को लूटों से कि लूटें वास्ते अल्लाह के और रसूल के हैं पस डरो अल्लाह से।

स्वामी दयानन्द (७६)

तअन्जुब है कि जो लूट मचावें, डाकू के काम करें, करावें वह खुदा पैगम्बर और ईमानदार कहलावें। साथ ही अल्लाह का डर वतलाते और डाका मारते जाते हैं। फिर ये कहते शर्म नहीं आती कि हमारा मज़हब अच्छा है। इससे बड़कर और क्या बुरी बात हो सकती है कि तअस्सुब को छोड़कर सच्चे वेदिक धर्म को मुसलमान कबूल नहीं करते।

कुरआन (७७)

और काटे जड़ काफ़िरों की। पस मारो ऊपर गर्दन के और मारो उनमें

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

से हर एक पूरी पर।

स्वामी दयानन्द (७७)

वाह जी वाह खुदा और पैगम्बर खूब रहम दिल् हैं। जो लोग मज़हबे इस्लाम में नहीं। उन काफ़िरो की जड़ काटने इनकी गर्दन मारने और उनको जोड़ों को काटने का खुदा हुक्म देता है और इस काम में उनका मदद व मआविन वनता है। क्या ये खुदा रायण से कुछ कम है। वह सब फ़रेव कुरआन के मुसत्रिफ़ का है। खुदा का नहीं। अगर खुदा का हो। तो ऐसा खुदा हम से दूर रहे और हम उससे दूर रहें।

कुरआन (८७)

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो लड़ो उन लोगों से जो लोगों से पास तुम्हारे हैं, काफ़िरो में से।

स्वामी दयानन्द (८७)

देखिये मुहसिन कशी की तालीम, खुदा मुसलमानों को सिखलाता है कि पड़ोसियों और गुलामों से लड़ाई करो और मौफ़ा पाकर लड़ो या क़त्ल करो।

कुरआन (१२८)

और वह लोग कि ईजा देते हैं। मुसलमानों को और मुसलमान औरतों को दंगर इसके कि बुरा किया हो उन्होंने पस तहकीक़ उठाया उन्होंने युद्धान और गुनाह ज़ाहिर लानत है। उन पर मारे जायें। जहाँ पाये जायें पकड़े जायें और क़त्ल किये जायें।

स्वामी दयानन्द (१२८)

वाह रे शहर मचाने वाले खुदा और नबी तुम से तो बेरहम दुनिया में बहुत थोड़े होंगे। ये जो लिखा है कि शेर लोग जहाँ मिलें उनको पकड़ें और मारें। वैसा ही अगर मुसलमानों से शेर मज़हब वाले बरताव करें। तो उनको ये बात बुरी लगेगी या नहीं। वाह कैसे मूजी पैगम्बर हैं कि खुदा से दूसरों को दुख देने की दुआ माँगते हैं। उससे उनकी तरफ़दारी, खुदगज़ी और सज़्ज जुल्म का सबूत मिलता है।

कुरआन (१४०)

पस जब मुलाकात करो तुम इन लोगों से कि काफ़िर हुये पस मारो गर्दन उनकी यहाँ तक कि जब बुर कर दो उनको। पस मुहकिम करो। क़ैद करना और बहुत बस्तियाँ थीं कि वह सज़्ज थीं कुव्वत में बस्ती तेरी से जिसने

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

निकाल दिया तुझ को। हलाक किया हम ने उनको पस न हुआ कोई मदद देने वाला वास्ते उनके।

स्वामी दयानन्द (१४०)

इसलिये ये कुरआन, खुदा और मुसलमान शहर मचाने तकलीफ़ देने और अपना मतलब निकालने वाले ज़ालिम हैं। जैसा यहाँ लिखा है। वैसा ही अगर दूसरा कोई शेर मज़हब वाला मुसलमानों पर करे। तो मुसलमानों को भी वैसा ही दुख जैसा कि दूसरों को देते हैं हो या नहीं और खुदा की तरफ़दारी देखिये। जिन्होंने मुहम्मद स०अ०व० साहब को निकाल दिया। उनको खुदा ने हलाक कर डाला।

कुरआन (१४२)

तहकीक़ अल्लाह दोस्त रखता है। उन लोगों को कि लड़ते हैं बीच राह उसकी के।

स्वामी दयानन्द (१४२)

वाह ठीक है। ऐसी ऐसी बातों की हिदायत करके बेचारे एक अरब के वाशिनदों को सबसे लड़ाया दुश्मन बनाकर बाह्य तकलीफ़ दिलाई और मज़हब का झंडा बुलन्द करके लड़ाई फैलाई। ऐसे को कोई अक़लमंद खुदा कभी नहीं मान सकता। जो क़ीम में फ़साद बढ़ा दे। यही सब को तकलीफ़ देह होता है।

स्वामी दयानन्द

अब इस कुरआन के मज़मून को लिखकर आकिलों के पेशे नज़र करता हूँ कि ये किताब कैसी है मुझ से पूछो। तो ये किताब न खुदा न आलिम की बनाई हुई और न इल्म की हो सकती है। ये तो बहुत थोड़े से नुक्स ज़ाहिर किये। इसलिये कि लोग थोड़े में पड़कर अपनी उम्र बेफ़ायदा जाये न करें। जो कुछ इस में थोड़ी सी सच्चाई है वह वेद वगैरह इल्मी किताबों के मुताबिक़ होने से जैसे मुझको मन्ज़ूर है वैसे और भी मज़हब के ज़िद और तअस्सुब से मुवर्रा आलिमों और आकिलों को मन्ज़ूर है। इसके सिवाये जो कुछ इसमें हैं वह सब लाहल्मी की बातें और तोहमत हैं। और इन्सान की रूढ़ को मिसल हैवान के बनाने, अमन में ख़लल डालकर फ़साद मचाने, इन्सानों में नाइतफ़ाकी फैलाने, बाह्य तकलीफ़ को बढ़ाने वाला मज़मून है और ख़ैर व बरक़त दोष का तो गोया कुरआन ख़ज़ाना ही है।

ग़ज़ी महमूद धर्मपाल

मज़कूरा वाला नुकताचीनी को मैंने इसलिये नक़ल किया है ताकि स्वामी दयानन्द की इलहामी किताब के बारे में सही पोज़िशन का पता लग सके যে कहना कुरआन मजीद के जिन तराजिम की बिना पर स्वामी दयानन्द ने इस पर नुकताचीनी की है इन तराजिम में कुरआन मजीद के सही मफहूम को समझकर नुकता चीनी की है एक बहस तलवे मआमला है जिसका किसी कद्र जवाब इस मज़मून के शुरू में दिया जा चुका है। जैसे कि मैं पहले भी अर्ज कर चुका हूँ। इस जगह मेरा मुद्दा कुरआन मजीद को डिफेन्ड करना नहीं है बल्कि स्वामी दयानन्द की तहकीकात से फायदा उठाना है कि वह किन वजूहत पर किसी किताब के इलहामी या खुदा के कलाम हो सकते हैं। चुनांचे उनके मज़कूरा वाला इयालात से जो कि उन्होंने कुरआन मजीद के बारे में जाहिर किये हैं, मुख्तसररुन् अल्फाज़ में नतीजा निकाला जा सकता है कि वह किसी ऐसी किताब को इलहामी नहीं मान सकते जिसमें कि हैवानों के मारने, अपने दुशमनों से सख्ती करने, उनको क़त्ल करने ग़ैर मज़हब के लोगों को काफ़िर कहने और उनको क़त्ल करने वग़ैरह की तालीम मौजूद हो। या दूसरे लफ़्ज़ों में खुदा का कलाम वही किताब हो सकती है, जिसमें इन्सानों या हैवानों के क़त्ल करने की तालीम मौजूद न हो वग़ैरह वग़ैरह, उन मैअयारों में से जो स्वामी दयानन्द की तहरीर के मुतालफ़े से मज़हबी किताबों के इलहामी होने या न होने के बारे में कायम किये जा सकते हैं। ये एक मैअयार या उसूल है। स्वामी दयानन्द ने इसी मैअयार से अहले इस्लाम की मुकद्दस किताब को परखा और इसी उसूल की बिना पर इसको इलहामी किताब के दर्जे से साफ़ित कर दिया और इसकी वज़ाये वेदों को इलहामी या खुदा का कलाम करार दिया। मैं ये नहीं कहूँगा कि स्वामी दयानन्द का ये मैअयार ग़लत है। बल्कि देखना चाहिये कि आया इसी मैअयार पर अगर वेदों को रखकर परखा जाये तो वह इलहामी या खुदा का कलाम हो सकता है या नहीं। मैं इस बात पर बहस नहीं करूँगा कि वेद में ख़रगोश, हिरन, ऊँट, बकरा, नील गाय वग़ैरह के मारने की इजाज़त है। ये तो वेदों की मामूली सी बात है। (देखो यजुर्वेद अध्याय १३) बल्कि मैं इस बात पर बहस करूँगा कि वेद में इन्सानों के साथ किस किस का सुलूक रवा रखा गया है।

चौथी फ़सल

## स्वामी दयानन्द और वेद

पेशतर इसके कि स्वामी दयानन्द के पेशकरदा मैअयार पर वेद को परखा जाये ये ज़रूरी मालूम होता है कि मैं एक ऐतराज़ का जवाब दे दूँ जिस वक़्त मैंने पहले ही पहले वेदों के इलहामी होने से इनकार का ऐलान किया था उस वक़्त वेदों को इलहामी मानने वालों ने मेरी बात का जवाब देने की बजाये ये हुज़्जत खड़ी की थी कि चूँकि तुमने वेदों को नहीं पढ़ा इसलिये तुम क्योकर कह सकते हो कि वेद ख़ुदा का कलाम नहीं है। पर मुझरा कोई हक़ नहीं है कि तुम वेदों पर नुकता चीनी करो। अगर इस हुज़्जत को सही तसलीम कर लिया जाये तो सवाल पैदा होगा कि स्वामी दयानन्द का क्या हक़ था कि उन्होंने कुरआन पर नुकताचीनी की जबकि ये अम्र वाकिअ है कि स्वामी दयानन्द अरबी, फ़ारसी, उर्दू और अंग्रेज़ी से क़तई महसूस थे और ये भी अम्र वाकिअ है कि स्वामी दयानन्द के ज़माने में अगरवे कुरआन अरबी में मौजूद था और इसके तराजिम फ़ारसी उर्दू और अंग्रेज़ी में भी मौजूद थे मगर हिन्दी में इसका कोई तर्जुमा नहीं था और स्वामी दयानन्द सिवाये हिन्दी और संस्कृत के मज़कूरा वाला ज़वानों से क़तई नावलद थे। इसी तरह स्वामी दयानन्द का क्या हक़ था कि उन्होंने सिखों की मुकद्दस किताब ग्रंथा साहिब पर नुकता चीनी की। हालाँकि ये किताब गुरुमुखी में है और स्वामी दयानन्द गुरुमुखी से बिल्कुल नाआशान थे पर अगर वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों की मज़कूरा वाला हुज़्जत को तसलीम कर लिया जाये तो स्वामी दयानन्द की पोज़िशन बहुत नाजुक हो जाती है। अगर स्वामी दयानन्द इस हुज़्जत का कायल होता तो वह कम से कम कुरआन और गुरुग्रंथ साहिब के बारे में एक लफ़्ज़ भी न लिख सकता। मगर स्वामी दयानन्द एक माकूल इन्सान था और वह इस किस्म की नामाकूल हुज़्जतों को ज़्यादा बुक़अत नहीं देता था जिस तरह इस ने दीगर मज़ाहिब की कुतुबे मुकद्दसा के इन तराजिम को जो कि उसको मुस्ततब बताये गये थे गो वह दर हकीकत मुस्ततब न हों। आगे रखकर उन पर नुकता चीनी करते हुए अपनी राय का इज़हार किया है इसी तरह हर एक शख्स को ये हक़ हासिल है कि वह स्वामी दयानन्द के वेद

भाषीय को जो कि स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के नज़दीक मुसतनद है, सामने रखकर वेदों के मुतअल्लिक अपनी राय का इज़हार करे। स्वामी दयानन्द ने कुरआन पर नुकता चीनी करने से पहले ही लिख दिया था कि-

“अगर कोई कहे कि ये तर्जुमा ठीक नहीं है तो इसको लाज़िम है कि मौलवी साहेबान के किये हुए तर्जुमों की पहले तरदीद करे इसके बाद इस मज़मून पर कलम उठाये। दीवाचा ज़िम्नी समुल्लास नम्बर १४ सत्यार्थ प्रकाश”।

इसी तरह जो शज़्स स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय को मुसतनद मानकर इसकी बिना पर वेदों के मुतअल्लिक कुछ लिखता है। इसका वह मज़मून उस वक़्त तक रह नहीं हो सकता जब तक कि स्वामी दयानन्द के भाषीय को ज़लत साबित करके स्वामी दयानन्द पर वही फ़तवा न लगाया जाये जो कि उसने महेधर वगैरह मुफ़स्सरीन पर लगाया है। ग़ालिबनू कोई शज़्स भी स्वामी दयानन्द पर ऐसा फ़तवा लगाने के लिये तैयार नहीं होगा। चूँकि स्वामी दयानन्द वेदों को कलामे इलाही मानता था और उनके लिये इसके दिल में अज़हद इज़ज़त थी और वेदों की ख़ातिर ही उसने दीगर मज़हब की मुकद़स किताबों का खंडन किया। इसलिये ये नामुस्किन है कि उसने वेदों की तफ़सीर करते वक़्त इस नियत से काम लिया हो जिस नियत से कि इसके नज़दीक दीगर मुफ़स्सरीन वेद ने काम लिया था। वेदों के बारे में स्वामी दयानन्द के क़ौल की तसदीक़ स्वामी दयानन्द की तफ़सीर बढ़कर और किसी तरह नहीं हो सकती। मैं इस बात को ज़रूरी नहीं समझता कि यहाँ पर वेद मंतरों की इबारत को नक़ल करके बल्कि इस तर्जुमे को भी मज़हबालात के पेश करता जाऊँगा जो कि स्वामी दयानन्द ने किया है और जिसको मैंने लफ़्ज़ वालफ़्ज़ उर्दू ह़रफ़ में किताब की शव़ल में शायेज़ कर दिया है। सिर्फ़ इस बात को देखना चाहता हूँ कि आया वेदों को इसी रोशनी में पढ़कर जिस रोशनी में कि स्वामी दयानन्द को पेश करता है। उनको खुदा का कलाम माना जा सकता है या नहीं। मैं अब स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाषीय में से चन्द मंत्र यहाँ पर पेश करूँगा और ये दिखाऊँगा कि खुद स्वामी दयानन्द का उसूल या सिख़ान्त क्या है जो कि वह कुरआन पर नुकताचीनी करते हुए ज़ाहिर कर चुके हैं। और जिसकी चन्द मिसालें मैं ऊपर दर्ज कर चुका हूँ। और वेद क्या तालीम देता है आया वह तालीम स्वामी दयानन्द के खुद मुक़र्रर कर्फ़ मयार

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

सिख़ान्त के मुताबिक़ खुदा की किताब की तालीम हो सकती है या कि महज़ इन्साना दिमाग़ की इख़्ताराज़ है चुनांचे -

### धर्म के मुख़ालिफ़ों को ज़िन्दा आग में जला दो

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जिस किताब की ये तालीम हो कि जो तुम्हारे मज़हब को नहीं मानते उनको क़त्ल कर डालो ऐसी तालीम को कुरे में डाल देना चाहिये। क्यों कि ऐसी किताब और इस किताब के खुदा को मानने में सिवायें नुक़सान के कुछ फ़ायदा नहीं हैं। उनका न होना अच्छा है, ऐसी जाहिलाना मज़हबों से अक्लमंदों को अलेहदा रहकर वेदों के अहक़ाम को तसलीम करना चाहिये क्यों कि इनमें झूठ ज़रा भी नहीं है। ये स्वामी दयानन्द कापेश करदा मैअयार है। अब इसी मैअयार पर वेद के अहक़ाम को परखना चाहिये। वेद में लिखा है।

“ऐ राजपुरुष! आप धर्म के मुख़ालिफ़ दुशमनों को आग में जला डालें ऐ जाह व जलाल वाले पुरुष वह जो हमारे दुशमनों को हीसला देता है। आप इसको उल्टा लटकाकर खुशक लंकड़ी की तरह जलायें। (यजुर्वेद १२/१२)”

चूँकि वेद के मज़क़ूरा वाला हुक्म में धर्म के मुख़ालिफ़ों को ज़िन्दा आग में जला डालने की तालीम है इसलिये स्वामी दयानन्द के खुद पेशकरदा मैअयार के मुताबिक़ ये तालीम कुरे में डालने के लायक़ है या मानने के लायक़? इस का फ़ैसला बड़ा आसान है और स्वामी दयानन्द के अपने ही अल्फ़ाज़ में ऐसी किताब और इस किताब के खुदा को मानने में सिवायें नुक़सान के कुछ फ़ायदा नहीं हैं। क्योंकि वक़ील स्वामी दयानन्द इनका न होना अच्छा है और कि ऐसी जाहिलाना तालीम से अक्लमंदों को अलेहदा रहना चाहिये चूँकि स्वामी दयानन्द का इरशाद निहायत माकूल है। इसलिये मैं ऐसी किताब को वक़ीले स्वामी दयानन्द सरासर नुक़सानदेह समझता हूँ और मैं इसको किसी सूरत में खुदा की किताब तसलीम नहीं कर सकता। दीगर अक्लमंदों को भी वक़ील स्वामी दयानन्द ऐसी जाहिलाना तालीम से अलेहदा रहना चाहिये।

### दुशमनों के गाँव को उजाड़ दो

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि ये सख़्त वेशर्मी की बात है कि एक तरफ़

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

तो लूट मचाई जाये, डाके मारे जायें और दूसरी तरफ ये भी कहा जाये कि ये खुदा की तालीम है। जिस मज़हब में ऐसी तालीम हो इसको तरक करके वेदों को न मानना सख्त बुरी बात है। स्वामी दयानन्द का मज़कूरा वाला मैअयार बहुत उमदा है। अब इसी मैअयार पर वेदों की तालीम को रखकर देखना चाहिये। वेद में लिखा है।

“ऐ तेजधारी विद्वान पुरुष! आप तेज-रो दुश्मन के खाने पीने या दीगर काम काज के मकामात को अच्छी तरह उजाड़ें और इनको अपनी तमाम ताकत से मारें। (यजुर्वेद १३/१३)”

चूँकि मज़कूरा वाला वेद मंत्र में जिसका कि स्वामी दयानन्द ने खुद ही तर्जुमा किया। दुश्मनों के खेतों को उजाड़ने और उनके गाँव को लूटने का हुक्म है। इसलिये वकील स्वामी दयानन्द ये सख्त शर्म की बात है कि ऐसी तालीम को खुदा की तरफ मनसूब किया जाये। मेरे नज़दीक स्वामी दयानन्द की बात ज्यादा माकूल है। वास्तव्यत इस हुक्म के जो कि वेद में खुदा की तरफ मनसूब किया जाता है। अगर मैं ऐसी तालीम को तर्क न करूँ तो ये वकील स्वामी दयानन्द सख्त बुरी बात होगी। यही वजह है कि मैं वेद को खुदा का कलाम नहीं मानता और नहीं मान सकता और किसी भी हक पसन्द को इस किस्म की तालीम को खुदा की तरफ मनसूब करते हुए उरना चाहिये।

### अपने मुख़ालिफों को शेर के मुँह में डाल दो

स्वामी दयानन्द का सिद्धान्त है कि जिस तरह दूसरे लोग अगर तुम से दुश्मनी करें तो वह तुम को बुरे लगते हैं। इसी तरह अगर तुम उनसे दुश्मनी करोगे। तुम उनको बुरे लगोगे पस दुश्मनी की बिना पर दूसरों को कत्ल करना और अपने आप को दुश्मनी से याज़ न रखना मूजी लोगों का काम है क्योंकि ये सख्त तरफ़दारी और खुदगर्ज़ी की बात है। स्वामी दयानन्द का सिद्धान्त बहुत उमदा है मगर वेद इसके बारे में क्या कहता है, लिखा है—

“जिस ईश्वरवाँ शस्त्र की हम लोग मुख़ालिफ़ करते हैं या जो ईजा देने वाला हम से दुश्मनी करता है इसको हम शेर वगैरह के मुँह में डाल दें। (यजुर्वेद १५/१५)”

मज़कूरा वाला वेद मंत्र में वकील स्वामी दयानन्द इस बात की तालीम है कि अगर हम किसी से दुश्मनी करें तो वह शस्त्र शेर के मुँह में डाला जाये और अगर वह शस्त्र हम से दुश्मनी करे तो भी उसी को शेर के मुँह में

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

डाला जाये गोया दोनों सूरतों में इसी को मुलज़िम गरदाना गया है पस वकील स्वामी दयानन्द आया ये सख्त मूजीपन है या नहीं। इस का फैसला अक्लमंद खुद कर सकते हैं। इस में सख्त तरफ़दारी और खुदगर्ज़ी पायी जाती है क्योंकि अगर दुश्मनी की सज़ा शेर के मुँह में डालना ही है तो फिर हम को किसी से दुश्मनी करने की पादाश में शेर के मुँह में क्यों न डाला जाये पस वकील स्वामी दयानन्द ये महज़ खुदगर्ज़ लोगों की तालीम है। खुदा का इसमें कोई बख़ल नहीं है। स्वामी दयानन्द का सिद्धान्त है कि जिस तरह तुम दूसरों को दुष्ट और काफ़िर कहते हैं उसी तरह वह तुमको दुष्ट और काफ़िर कहते हैं।

### द्वेष करने वालों को हवा से हलाक करो

फिर क्या वजह है कि उनको तो कत्ल किया जाये और तुमको छोड़ दिया जाये जिस किताब में ऐसी तालीम हो। वह खुदा की किताब नहीं हो सकती। स्वामी दयानन्द के इस सिद्धान्त के मुताबिक वेद का दूसरा मंत्र लेकर देखा जाता है चुनावे लिखा है।

“जिस दुष्ट से हम लोग द्वेष करें या जो दुष्ट हम से द्वेष करें हम उसको हवाओं से हलाक करें। (यजुर्वेद १५/१६)”

स्वामी दयानन्द के मज़कूरा वाला सिद्धान्त के मुताबिक वेद का ये मंत्र किसी सूरत में भी खुदा का कलाम नहीं हो सकता क्योंकि इसमें द्वेष करने वाले दोनों हैं मगर एक को तो हलाक करने की तालीम है और दूसरे को जो द्वेष करता है हलाक करने की कोई तालीम नहीं है। ये महज़ इन्साने दिमाग की इह्तराज़ है। पस वकील स्वामी दयानन्द ये बात छोड़ने के काबिल है।

### राजा हमारे दुश्मन को शेर के मुँह में डाल दे

स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि जो लोग वेगुनाहो को मारते, ग़दर मचाते और दूसरों से दुश्मनी करते हैं वह सख्त मूजी हैं और ये कि जिस किताब में इस किस्म की तालीम हो वह किताब अब जाहिलों की किताब समझनी चाहिये। स्वामी दयानन्द का इरशाद बहुत माकूल है मगर वेद में लिखा है —

“हम लोग जिससे दुश्मनी करें और जो हम से दुश्मनी करे इसको हम शेर वगैरह के मुँह में डाल दें। राजा भी इसको शेर के मुँह में डाल दे। (यजुर्वेद १७/१५)”

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

ये स्वामी दयानन्द का वेद मंतर का खुद कर्वा तर्जुमा है। इसमें इन लोगों को जो गो हम से दुशमनी वगैरह रखते हों मगर चूँकि हम इन से दुशमनी रखते हैं इसलिये इनको शेर के मुँह में डाल देना चाहिये और अगर हम खुद ऐसा न कर सकें। तो राजा की मदद से इसको शेर के पिंजरे में डाल देना चाहिये ख्वाह वह भला मानस किताना भी विल्लाये कि महाराज मैं आप का दुशमन नहीं हूँ वैशक वह हमारा दुशमन नहीं है लेकिन हम तो उसके दुशमन हैं इसलिये इसकी सज़ा मौत है कैसा आला इनसाफ है। इसी किताब को खुदा का कलाम मानना वक़ील स्वामी दयानन्द सख़्त जिहालत है।

### अपने मुख़ालिफ़ों को पानी में गर्क कर दो

अगर खुदा नख़्वास्ता हम किसी ऐसी जगह रहते हों जहाँ अपने दुशमनों को हम शेर के मुँह में न डाल सकें या शेर हम को वहाँ न मिले तो हम अपने दुशमनों से क्या सुलूक करें इसका हल वेद में लिखा है—

“जिससे हम द्वेष करते हैं या जो हम से द्वेष करता है इसको हम हवा और पानी के दुख देने वाले गन रूपी मुँह में डाल दें। (यजुर्वेद १८/१५)”

या दूसरे अल्फ़ाज़ में हम को चाहिये कि अपने दुशमनों को जहाज़ में भरकर समन्दर में गर्क कर दें या कुएँ, तालाब और दरिया में डुबों दें अलगरज़ इनको इस दुनिया से ख़ूबसत ज़रूर कर देना चाहिये क्योंकि वेद की यही तालीम है।

### अपने दुशमनों को दरिन्दों से चरवा दो

मगर जो वेदों को खुदा का कलाम मानने वाले हैं उनकी तमाम कोशिश यही होनी चाहिये कि वह अपने दुशमनों को दरिन्दों के मुँह में डाल दें, चुनांचे लिखा है—

“हम लोग जिस दुष्ट से द्वेष करें या जो हम से द्वेष करे उसको हम लोग खूँख़ार जानवरों के मुँह में डाल दें। (यजुर्वेद १८/१५)”

इससे मालूम होता है कि वेदों के ऐसे ऐसे मंत्र इस वदशी ज़माने की याद हैं जबकि इन्सानों को दरिन्दों से चरवा डाला जाता था चुनांचे रोमियों के ज़माने में गुलामों को शेरों के आगे डाल कर फड़वा डाला जाता था अगर गुलाम लोग अपने आकाओं के बदख़्वाह नहीं होते थे मगर चूँकि आका इनको नापसन्द करते थे।

इसलिये वेद मंत्र के ऐन मुताबिक वह गुलामों को दरिन्दों से मरवा डालते

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

थे। अंडरविकलीज़ नामी गुलाम की इसी किस्म की कहानी बहुत से लोगों ने सुनी होगी।

### दुशमनों को तड़पा तड़पा कर मारो

वेद के मंत्र जिस किस्म के ज़माने की याद दिलाते हैं उसको सामने लाकर वदन पर रेंगते खड़े हो जाते हैं।

स्वामी दयानन्द ने हर चन्द इस बात को साबित करने की कोशिश की है कि वेद वदशी लोगों के गीत नहीं हैं मगर खुद उनके वेद भाषीय से जाबजा इस बात का पता लगता है कि वे दरहकीकत इस वदशी ज़माने की मुक़द्दस यादगार हैं जबकि गुलामों, महकूमों, या दुशमनों को अनवाअ व अक़साम की अज़ियतों से हलाक किया जाता था और हलाक करने वाले, इसमें ख़ास लज़ज़त पाते थे। चुनांचे स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय में लिखा है “जिनसे हम लोग नफरत करते हैं या जिन को हम नाराज़ करते हैं या जो हम को दुख देते हैं उनको हम इन हवाओं के मुँह में डाल कर इस तरह दुख दें जिस तरह विल्ली के मुँह में चूहे। (यजुर्वेद ६५-६६)”

इससे मालूम होता है कि जिन लोगों को पुरोहित लोग नापसन्द करते थे या जिन से वह नाराज़ हो जाते थे उनको वह हवा में मुअल्लक लटकाकर इस तरह तड़पा तड़पा कर मारा करते थे जिस तरह विल्ली चूहे को मारती है चुनांचे तीन मंत्रों में मुतयातिर इस बात का जिक्र आया है कि जिन लोगों से तुम नफरत करते हो या जिन लोगों से तुम नाराज़ हो या जो लोग तुम्हारी तकलीफ का मौजब हैं, उनको इस तरह तड़पा तड़पा कर मार दो जिस तरह विल्ली चूहे को मारती है अगरचे पीछे लिखा जा चुका है कि वेद में उनको उल्टा करके ज़िन्दा आग में जला डालने की सज़ा भी तजवीज़ की गयी है। मगर चूहे की तरह तड़पा तड़पा कर मारना बैरहमी और संग दिली की इन्तहा है। जिस किताब में इस किस्म की तालीम हो वह किताब वक़ील स्वामी दयानन्द इन्सान की रूढ़ को मिसल हैवान के बनाने के, अमन में ख़लल डालने, फ़सादे मचाने, इन्सानों में ना इत्ताफ़ाकी फैलाने, उनकी तकलीफ को बढ़ाने वाली साबित होती है और वक़ील स्वामी दयानन्द ऐसी किताब न खुदा की बनाई हो सकती है न किसी आलिम की।

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

## दुश्मनों के गाँव को जला दो

दुश्मनों के साथ जिस बैरहमी का सुलूक करने की वेद में तालीम दी गयी है वह अपनी नज़ीर आप ही है। इसके अलावा दुश्मनों के गाँव को जलाकर खाक सियाह कर देने की वेद में जा वजा तालीम दी गयी है। चुनांचे खुद स्वामी दयानन्द एक मंत्र का बर्दी अल्फ़ाज़ तर्जुमा करता है।

“ऐ ताक़तवर और रोशन ज़मीरे आलम इन्सान! जिस तब्र हम् लोग रोज़ खुले स्वाभाव वालों के गाँव को आग की मानिन्द मारने वाले तुझ ख़ूबसूरत विद्वान को सब तरह से धारण करें, उसी तरह तू हम को धारण कर। (यजुर्वेद २६-११)”

ऐ राजा! जिस तरह हिफ़ाज़त करने वाले आलम को पुत्र शागिर्द सुख देने वाले.....आग वगैरह पदार्थों को हासिल करके वेदों के इत्य को जानने वाला होकर दुश्मनों को मारने वाला और दुश्मनों के गाँव को तबाह करके आप की जाह व इशमत को दो वाला करता है उसी तरह दीगर विद्वान लोग भी आपको विद्या और रोने से तरक्की दें। (यजुर्वेद ३३-११)

मज़क़ूरा वाला वेद मंत्रों से साफ़ ज़ाहिर है कि किस तरह दुश्मनों के गाँव को आग लगाने और उनकी तबाह करने के काम को “रोशन ज़मीर इन्सानों” और “वेदों के आलिमों” का फ़र्ज़ मनसबी करार दिया गया है। स्वामी दयानन्द ने कुरआन और बाइबिल पर नुक़ता चीनी करते हुए जाबजा अपने उसूल का बर्दी अल्फ़ाज़ इज़हार किया है कि जिस किताब में इस किस्म की तालीम हो। वह आलिमों की किताब नहीं हो सकती बल्कि इसको वाइशियों की किताब कहना चाहिये। स्वामी दयानन्द की इस कसौटी पर परखने से इस बात का अफ़सोस से इफ़रार करना पड़ता है कि वेद भी आलिमों की किताब साबित नहीं होते। उसको खुदा का कलाम मानना तो महज़ कुफ़ है।

## औरतों को क़त्ले आम करने का हुक्म

स्वामी दयानन्द ने कुरआन पर नुक़ता चीनी करते हुए ऐतराज़ नम्बर १४० में अपने ख़्यालात को बर्दी अल्फ़ाज़ ज़ाहिर किया है कि जो किताब या खुदा इस किस्म की तालीम देते हों कि विला वग़द ग़दर मचाओ, बैठे बिठाये लोगों को ख़्वाह मख़्वाह तकलीफ़ दो और अपने मतलब की खातिर दूसरों की गर्दन काटो वह किताब न तो खुदा की किताब हो सकती है और न ऐसा खुदा

मानने के लायक है। कुरआन में इस किस्म की तालीम है या नहीं। इस बात का जवाब कुरआन वाले दें। लेकिन इस में शक नहीं कि स्वामी दयानन्द का मैअयार बहुत दुरुस्त है। देखना चाहिये कि स्वामी दयानन्द वेदों से कैसी तालीम निकालते हैं पढ़ते दिखाया जा चुका है कि वेदों की तालीम के मुताबिक़ दुश्मनों से किस किस्म का सुलूक किया जाना चाहिये। वह तो मर्दों की वावत था। अब औरतों की वावत भी देखो चुनांचे लिखा है।

“ऐ सिपेहसालार की स्त्री! तू मैदाने जंग की ख़्वाहिश करती हुई दूर देश में जाकर दुश्मनों से लड़ाई कर और उनको मार कर फ़तह हासिल कर तू। उन दूर दराज़ के मुल्कों में रहने वाले दुश्मनों में से एक को भी मारने के वगैर मत छोड़।” (यजुर्वेद ४५-१०)

स्वामी दयानन्द के मैअयार के मुताबिक़ मज़क़ूरा वाला वेद मंत्र न तो खुदा का हुक्म हो सकता है न खुदा की किताब का क्योंकि इसमें अपने मुल्क से दूर बैठे हुए लोगों को ख़्वाह मख़्वाह जंग करने उन पर जाकर छापा मारने और उनका क़त्ले आम करने की तालीम है। वह भी मर्दों के हाथ से नहीं बल्कि औरतों के हाथ से, जिस सूरत में कि वेदों के ज़माने में औरतें अपने दुश्मनों का क़त्ले आम करती हों, इस सूरत में मर्द जिस क़दर उनकी गर्दन काटते हों उसी क़दर थोड़ा है। इससे मालूम होता है कि वेदों में वअज़ मंत्र ऐसी ख़ौफ़नाक और ख़तरनाक स्ट्रिट अपने अन्दर रखते हैं जो कि इस वग़शी ज़माने की याद है जबकि वेदों के मंत्र धड़े ये कहना कि ऐसे मंत्रों का प्रकाश खुदा ने खुद ही शुरू आगाज़े दुनिया में किया था बिल्कुल जिहालत और वकील स्वामी दयानन्द खुदा की ज़ात पाक पर एक वदनुमा धव्वा है।

## बदकिरदारों की गर्दन काटो

स्वामी दयानन्द ने ज़ाहिर किया है कि जो किताब ये तालीम देती हो कि बदकिरदारों या काफ़िरों की गर्दन का उनकी बेख़क़नी करो और इस काम में उनका खुदा उनकी मदद करता हो। न तो वह किताब खुदा की हो सकती है न ऐसा खुदा खुदा हो सकता है। बल्कि ये सब इस किताब के मुसल्निफ़ का फ़रेव समझना चाहिये। स्वामी दयानन्द का ये उसूल बहुत अच्छा है। मगर देखना चाहिये कि आया वेद इस उसूल के मुताबिक़ खुदा की किताब साबित हो सकता है, या नहीं चुनांचे लिखा है।

“ऐ इन्सान जिस तरह मैं बदकिरदारों की गर्दन काटता हूँ वैसे तू भी



काट ।” (यजुर्वेद २२-५)

स्वामी दयानन्द के खुद साझा मैथिल्यार के मुताबिक जिस वेद में इस किस्म की तालीम हो कि जिसको वेदों के मानने वाले बदकिरदार होने का फतवा दे दें। उसकी ही गर्दन काट दी जाये ख्वाह वह दरअसल बदकिरदार न भी हो। वह किताब किसी सूत्र में भी खुदा की किताब नहीं हो सकती और दूसरे अगर ये मान भी लिया जाये कि कोई बदकिरदार है तो क्या उसकी बदकिरदारी का इलाज उसकी गर्दन काटना ही हो सकता है हरगिज़ नहीं कोई डाक्टर ये नहीं कहेगा कि बीमारी का आसान इलाज बीमार की गर्दन काटना है। अगर खुदा को ये मन्ज़ूर है कि इन्सान रूहानी अमराज़ से शिफा पाये तो उन अमराज़ का इलाज होना चाहिये न कि मरीज़ों की ही गर्दन काट देनी चाहिये। पर वकील स्वामी दयानन्द वेद खुदा की किताब नहीं है। बल्कि ये महज़ चन्द इन्सानों के ख्यालात के इज़हार का मजमूआ है। इन ख्यालात में से वअज़ अच्छे हैं और वअज़ सख्त वशतनाक और फासिद हैं।

### मुख़ालिफ़ों को हब्ब दवामी की सज़ा

ऐसे लोगों को जो हमारी किसी नाजायज़ हरकत से हम से नाराज़ हो जाते हों क्या सज़ा मिलनी चाहिये इसके मुतअल्लिक़ वेद में लिखा है-

“जो दुष्ट हम लोगों से मुख़ालफ़त करता है या जिस दुष्ट से हम लोग मुख़ालफ़त करते हैं तुम इस बदकिरदार दुश्मन को मुख़्तलिफ़ ज़ंजीरों से जकड़ो और उसको उन ज़ंजीरों से कभी मत छोड़ो। (यजुर्वेद १५-२६/१)”

गोया इसको हमेशा के लिये कैद में मरने दिया जाये ख्वाह वह हम से दुश्मनी न भी करता हो और हमारा बड़ा ख़ैरख्वाह हो। मगर वूँकि हम इससे दुश्मनी करते हैं इसलिये इसको कैद कर दो ये महज़ इन्साफ़ का खून करना है।

### दुष्टों के साथ कैद में सुलूक

और फिर ऐसे कैदियों के साथ कैदख़ाने की कोठरी में क्या सुलूक करना चाहिये इसका ज़िक्र बर्दी अल्फ़ाज़ में किया गया है।

“ऐ दुष्ट इन्सान तू कभी भी हिदायत की रोशनी हासिल न कर सके तेरा आनन्द देने वाला इल्म का रस तुझे कभी भी आनन्द न दे।” (यजुर्वेद २६-१)

मौज़ूदा गवर्नमेन्ट का कायदा है कि वह कैदियों की तालीम व तरबीयत का भी इन्तज़ाम करती हैं और उनको सुधारने की कोशिश करती हैं मगर वेद कहता है कि ऐसे कैदियों को जिनको हम ने इसलिये उम्र कैद की सज़ा दी है क्योंकि हम उनसे नाराज़ हो गये हैं कभी भी हिदायत की रोशनी नसीब न हो और वह हमेशा इल्म से महसूम रहें बल्कि अपना पहला लिखा पढ़ा भी भूल जायें ऐसी ख़ौफनाक तालीम को वकील स्वामी दयानन्द खुदा की तरफ़ मनसूब करना सख्त जिहालत है।

### जायज़ व नाजायज़ तरीकों से मुख़ालिफ़ों को हलाक़ करो

अपने मुख़ालिफ़ों को हलाक़ करने में जायज़ व नाजायज़ वसाईल की मुतलक़ परवाह नहीं करनी चाहिये चुनांचे लिखा है-

“ऐ इन्सान.....जिस तरह भी दुश्मनों को हलाक़ किया जा सके उसी किस्म के कामों को करके सदा ही राहत से ज़िन्दगी बसर करो।” (यजुर्वेद २५/१)

इससे मालूम होता है कि दुश्मनों को हलाक़ करने के लिये ख्वाह तुम को नापाक से नापाक शर्मनाक से शर्मनाक काम भी करना पड़े तो भी कर डालो। धर्म अधर्म की मुतलक़ परवाह न करो ऐसी तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब करना सख्त जुल्म है बल्कि वकील स्वामी दयानन्द इस किस्म की बातें मुसन्निफ़ों के अपने ही फासिद ख्यालात होते हैं, खुदा को इनसे क्या तअज़ल्लुक़।

### दुश्मनों की हलाक़त के लिये प्रार्थना

स्वामी दयानन्द के नज़दीक दुश्मनों की हलाक़त के लिये परमात्मा से प्रार्थना करना जिहालत की बात है, जैसा कि पढ़ले दिखाया जा चुका है, लेकिन वेदों में जावजा ऐसे मंतर आते हैं जिनमें सिर्फ़ परमात्मा से दुश्मनों की हलाक़त के लिये प्रार्थना की गयी है बल्कि खुद परमात्मा ने बशर्तेकि वेदों को इसका कलाम कहा जाये, ऐसे मंतरों को प्रकाश किया है मसलन्

(१) “हे परमात्मन! मैं बदकिरदार या दुश्मनों की हलाक़त के लिये...

आप को अपने दिल में कायम करता हूँ।” (यजुर्वेद १/१०१)

(२) “हे परमेश्वर! मैं दुश्मनों की हलाक़त के लिये ... आपको अपने दिल में कायम करता हूँ। ऐ सबको धारण करने वाले परमेश्वर... मैं दुश्मनों की हलाक़त के लिये आपको ... बार बार अपने दिल में कायम करता

हूँ।” (यजुर्वेद १/१८)

स्वामी दयानन्द के मैत्रियार के मुताबिक वेदों के इस किस्म के मंत्र जिन में कि परमात्मा से दुश्मनों की हलाकत के लिये प्रार्थन की गयी है, महज जिहालत की अलामत है जिस किताब में इस किस्म की बातें हों, इसको बकौल स्वामी दयानन्द खुदा का कलाम मानना सख्त जिहालत है, पस वेद कलामे इलाही नहीं।

### अपने दुश्मनों की बेखकीनी करो

वेद में तमाम इन्सानों के कत्ल की तालीम है जो वेदों के मैत्रियार के मुताबिक बदकिरदार, बंद अवतार, खुरदगर्ज, ज़ालिम, दान पुण्य न करने वाले हैं मसलन् -

“मुझ को चाहिये कि कोशिश करके बदकिरदार और बंदअवतार इन्सान की यकीनन् बेखकीनी करूँ और जो दान पुण्य व धर्म से खाली, ज़ालिम, बदकिरदार, दुश्मन हैं उनकी सरीहन् बेखकीनी करूँ।” (यजुर्वेद १/७)

इस मंत्र से हर एक शब्द जो वेदों को खुदा का कलाम मानने वालों के किसी इंस्टीट्यूशन को दान नहीं देता, या वह उनकी मुख़ालफ़त करता है वह ज़ालिम, बदकिरदार और वेदों का दुश्मन है। मज़कूरा वाला सज़ा का मुस्तहक़ हो सकता है, ऐसे मंत्रों को खुदा की तरफ़ मनसूब करना जो हर एक नेक व बंद को रोज़ी देता और उनकी परवरिश करता है, सख़्त गुनाह है। बकौल स्वामी दयानन्द ऐसी किताब न खुदा की हो सकती है न किसी आलिम और नेक शाइख़ की।

### निहायत ही नामाकूल और कमीनेपन की दुआ

तू तो वेद के जिस क़द्र मंत्र ऊपर बर्न किये गये हैं उनमें से एक से एक ख़तरनाक तालीम का मज़हब है। लेकिन बअज़ मंत्रों में परमात्मा से और राजा से सख़्त नामाकूल और कमीनगी से भरी हुई प्रार्थना की गयी है मसलन्-

“हे परमात्मन् आप की कृपा से हम लोगों के पानी और अनाज वग़ैरह नवातात सरीशत मित्र (बेस्त) की मानिन्द हों और जो हम लोगों से दुश्मनी रखता है या जिससे हम लोग दुश्मनी करते हैं उसके लिये जल और अनाज वग़ैरह सबके सब दुख़ देने वाले दुश्मन की मानिन्द हों। (यजुर्वेद २२/६)

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

स्वामी दयानन्द ने इस किस्म की प्रार्थनाओं को सत्यार्थ प्रकाश में महज़ जिहालत की प्रार्थनायें लिखा है क्योंकि ये साफ़ ज़ाहिर है कि हमारे क़दने से परमात्मा हमारे दुश्मनों पर अनाज और पानी का दरवाज़ा कभी बन्द नहीं कर सकता और फिर ये किस क़द्र कमीनेपन की दुआ है कि हम परमात्मा से ये दुआ करें कि अनाज पानी और हवा हमारे लिये तो आराम देने का मूजिव हों लेकिन जिन लोगों से हम दुश्मनी करते हैं ख़्वाब वह लोग हम से दुश्मनी न भी करते हों या जो लोग हम से हमारी किसी नाजायज़ हरकत पर दुश्मनी करते हों उनके लिये अनाज पानी और हवा ज़ेहरीली हो जायें और वह उनको खाने पीने के साथ ही मर जायें। इस मुल्क में बअज़ कम्बख़्त जाहिल औरतों की आदत है कि जब वह आपस में लड़ पड़ा करती हैं तो यह एक दूसरे के बूध पूत की तवाही के लिये बंदुआ करती हैं। दुश्मनी के बारे में ये प्रार्थना करना उनके लिये हवा, पानी और अनाज को परमात्मा ज़ेहरीला कर दे, इसी किस्म की कमीनेपन की प्रार्थना है जो कि जाहिल के मज़कूरा वाला फ़अल से भी बंदतर है। क्या वह परमात्मा जिसने हर एक नेक व बंद के लिये अनाज पानी हवा और सूरज और ज़मीन को यकसों पैदा किया है वह ऐसा कमीना हो सकता है कि वह इन्सानों को इस किस्म का इलज़ाम दे कि तुम मुझे दुआ करो कि मैं तुम्हारे दुश्मनों के लिये पानी, हवा अनाज को ज़ेहरीला कर दूँ। हालाँकि वह उन लोगों को भी हवा और पानी बग़ैरह देता है जो कि परमात्मा को गालियाँ देते हैं और वह उनकी भी परवरिश करता है जो परमात्मा की हस्ती से मुनकिर हैं और वह ज़ेहरीले साँपों और ख़तरनाक बन्दों को भी ये चीज़ें देता है। फिर ये क्योकर तसलीम किया जाये कि वह इन्सानों को मज़कूरा वाला किस्म की सख़्त नामाकूल और कमीनेपन की प्रार्थनायें करने का उपदेश कर सकता है। यकीनन् वह इस किस्म की कमीनगी का सबूत दे सकता, जब स्वामी दयानन्द जैसा माकूल शाइख़ भी इस किस्म की दुआओं को जिहालत वताता है तो क्या परमात्मा स्वामी दयानन्द से भी माकूल नहीं है कि वह इस किस्म की प्रार्थना करने के लिये इन्सानों को उपदेश न करे पस इस किस्म के मंत्रों को खुदा की ज़ात पाक की तरफ़ मनसूब करना, खुदा पर ख़तरनाक नामाकूल और कमीनेपन का इलज़ाम लगाना है। अलग़रज़ वेदों में अपने धर्म के मुख़ालिफ़ों या दुश्मनों की बेखकीनी करने उनकी गर्दन काटने, उनको ज़िन्दा आग में जलाने,

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

समन्दर में गर्क करने, दरख्तों से लटकाकर मारने, शेरों और भेड़ियों और दीगर खतरनाक दरिन्दों के मुँह में डालने और उनको अनवाञ्छ व अक़साम के अज़ाबों से मारने के बारे में सैंकड़ों मंतर दर्ज हैं मजकूरा वाला चन्द मंतर नमूने के तौर पर सिर्फ़ यजुर्वेद में से पेश किये गये हैं। उन मंतरों का तर्जुमा वही किया गया है जो कि स्वामी दयानन्द ने किया है। जब मैं इन मंतरों का मुतालेआ करता हूँ तो मेरी स्रष्ट कौंप जाती है कि मैं वेद को खुदा का कलाम मानूँ चुनांचे मैं इसको खुदा का कलाम मानना सख्त कुफ़ और गुनाह समझता हूँ और मेरा ये ख्याल है कि कोई भी दयानतदार शख्स वेदों की ऐसी तालीम को देखकर उनको खुदा का कलाम तसलीम नहीं करेगा। ये तालीम हमें इस वक़्त चन्दों नुक़सानदेह मालूम न हो, इसलिये कि इस पर अमल करने के लिये हमारे हाथ में पोलिटिकल या हुकूमत की ताकत नहीं है। लेकिन ऐसी तालीम के ख़ौफ़नाक नताईज का इस वक़्त पता लग सकता है जबकि ये तालीम एक ऐसी कौम के हाथ में आ जाती है जो कि वरसरे हुकूमत हो और वह अपने दुशमनों या मज़हब के मुख़ालिफ़ों की सज़ा दही के लिये आख़री फ़तवे वेदों से माँगती हो। इस सूरत में वेद अपने दुशमनों के साथी इसी सुलूक का फ़तवा देगा। जिसका कि ऊपर ज़िक्र किया गया है वूँकि इस फ़तवे को अमली जामा पहनाने वाले पुरोहित होते हैं पस पुरोहित अपनी मज़ी या हाकिम की मज़ी या अपने दिली ज़ुब़ात या इन्तक़ाम की सेरी के लिये हरवे गीफ़ा वेद में से अपने मुख़ालिफ़ों की हलाक़त का फ़तवा निकाल देगा। इस तरह इल्लामी किताब बक़ौल मिस्टर ह्यूम पुरोहितों के हाथ में इन्सानों की ख़ूबों पर जोर व जुल्म करने का एक हथियार बना रहा है और बना रह सकता है वूँकि हिन्दुस्तान में हुकूमत करने वाली पार्टी की मुशीरेकार हमेशा पुरोहित क्लास रही है। इसलिये पुरोहित क्लास ने हाकिमों के हाथ से उनकी वेदों की तालीम की आड़ में अपने मुख़ालिफ़ों या दुशमनों के साथ जिस वेदार्थ और संगदिली का सुलूक किया है बक़ौल मिस्टर ह्यूम तारीख़ के औरक इसकी याद में ख़ून से रंगे हुए हैं। ऐसे हालात में हर एक दयानतदार शख्स को मिस्टर ह्यूम के मुफ़ससला ज़ैल सख़्त मगर दुरुस्त अल्फ़ाज़ के साथ विव्कुल इत्फ़ाक़ करने के लिये मजबूर होना पड़ता है।

“ख़्वाह स्वामी दयानन्द इससे दस गुनाह आलिम और नेक दिल भी होता जितना कि वह दरङ्कीकृत है ख़्वाह उसके इरादे

इससे सी गुना नेक आला और वे गुर्ज़ा न होते जितने कि वह हैं फिर भी ये हर एक शख्स का ख़्वाह वह कितना ही अदना और कम इल्म हो मगर उसने तारीख़ की शहादत से इस निहायत ही ख़तरनाक अक्कीदे के सख़्त ख़तरनाक नताईज से आगाही हासिल कर ली हो फ़र्ज़ होना चाहिये कि वह कम से कम इस पहलू में स्वामी दयानन्द की वझापुराना मुख़ालफ़त करे जबकि वह इस अक्कीदे को (कि वेद खुदा का कलाम है) बतौर एक सनद को हम से मनवाने की कोशिश करता है और इसको साफ़ अल्फ़ाज़ में बताया जाये कि अगरचे वह दीगर मामलात में एक देवता कहा जा सकता है। मगर इस अक्कीदे में उसकी पोज़िशन एक ऐसे ग़द्दार की पोज़िशन है जो कि इनसानी वेइबूदी और सदाक़त के हक़ में ख़तरनाक ग़द्दारी कर रहा हो।” (थ्योसोफ़िस्ट मार्च १८६३ ई०)

## एक ज़रूरी सवाल

अब यहाँ पर ये ज़रूरी सवाल पैदा होता है स्वामी दयानन्द ने किस किताब को इल्लामी के दर्जे से साफ़ित करने के लिये जो मैझार कायम किया है और जिस मैझार की बिना पर जैसा कि पीछे बयान किया जा चुका है वह अग़ले इस्लाम की मज़हबी किताब को खुदा की किताब होने के दर्जे से साफ़ित कर चुके हैं बिला लिबाज़ इसके कि उन्होंने इसके मतलब को समझाया नहीं। अब जबकि इसी मैझार पर वेदों की तालीम को खुद स्वामी दयानन्द के ही अल्फ़ाज़ में रखकर परखा जाता है तो वेद सिर्फ़ यही नहीं कि खुदा की किताब साबित नहीं होने बल्कि वह एक बदतरनी किताब साबित होते हैं। तो फिर क्या वजह है कि स्वामी दयानन्द ने उनको खुदा का कलाम तसलीम किया। ये एक ऐसा ग़दरा और पेचीदा सवाल है कि जिसका जवाब स्वामी दयानन्द के नोशतों के सिवाये दूसरी जगह मिलना मुश्किल है जब स्वामी दयानन्द के नोशतों को खोला जाता है तो हमें पता लगता है कि स्वामी दयानन्द, दयानतदारी का इस क़दम मोअतकिद नहीं था। जिस क़दम कि वह दुशमन को नीचा दिखाने का तरफ़दार था। वह मिस्टर हरबर्ट स्पेन्सर के अल्फ़ाज़ में हक़ व हक़क़ानियत की फ़तह का ज़्यादा ख़्वाहिशमंद था चुनांचे सत्यार्थ प्रकाश के ग़्यारहवें समुल्लसल में इसके अल्फ़ाज़ मुफ़रसला ज़ैल हैं।

“अब इसमें गौर करना चाहिये कि अगर जीव ब्रह्म की एकता और दुनिया का झूठा होना शंकराचार्य का ज्ञाती ऐतकाद था तो वह उमदा ऐतकाद नहीं और अगर जैनियों की तरदीद के लिये इस ऐतकाद को इख्तिवार किया हो तो कुछ अच्छा है।”  
(सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११)

स्वामी दयानन्द की मज़कूर वाला तद्वरीर से साफ़ सावित होता है कि अगर मुखालिफ़ को नीचा दिखाने के लिये एक ग़लत ऐतकाद को दुस्स्त भी मान लिया जाये तो ये कोई गुनाह नहीं है। वह अपने इस उसूल के मुताबिक़ न सिर्फ़ स्वामी शंकराचार्य को ही रियाकार सावित करता है बल्कि वह खुद भी रियाकारी को कोई अज़्लाकी गुनाह नहीं मानता और मैं एक वेद मंत्र के ज़रिये पीछे दिखा आया हूँ कि खुद वेद ने इस बात की तालीम दी है कि मुखालिफ़ को नीचा दिखाने के लिये तमाम जायज़ और नाजायज़ वसाईल से काम लेना चाहिये। ऐसे वेद मंत्र की मौजूदगी में मुखालिफ़ों को सरनर्तु करने की ख़ातिर अगर स्वामी दयानन्द रियाकारी को कोई अज़्लाकी गुनाह नहीं समझता तो इसके ज़मीर को कोई तंगी महसूस नहीं हो सकती जबकि वह ये ऐतकाद रखता है कि जिस खुदा को वह मानता है या जिस खुदा की तरफ़ वह वेद को मनसूब करता है खुद वह खुदा भी इंसानों को रियाकारी की इजाज़त देता है लेकिन जो शक़्स इस किस्म के अज़्लाकी तनज़ुल की तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब करता या जो दयानतदारी को रियाकारी पर तरज़ीह देता है वह ये मुनासिब समझेगा कि वेधों को इन्सानों की बनायी हुई किताब तसलीम करे वनिसवत इसके कि वह महज़ मुखालिफ़ों को नीचा दिखाने के लिए उनको खुदा का कलाम मानकर रियाकारी का जामा ओढ़े। यहाँ पर सवाल किया जायेगा कि स्वामी शंकराचार्य ने तो बुद्धों को नीचा दिखाना था जो खुदा की हस्ती के कायल नहीं थे। या वेधों से मुनिकर थे लेकिन स्वामी दयानन्द ने किन लोगों को नीचा दिखाने के लिये दयानतदारी के हथियार को हाथ से फेंक कर वेधों को खुदा का कलाम माना इसका जवाब बड़ा आसान है जबकि ये देखा जाता है कि स्वामी दयानन्द के सामने मुसलमानों ने एक ऐसी किताब को पेश किया जिसको कि वह खुदा का कलाम तसलीम करते थे। स्वामी दयानन्द ने इस किताब को खुदा का कलाम तसलीम करने से इनकार कर दिया और एक किताब की वजाये चार किताबें खुदा की तरफ़

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

मनसूब करके मुसलमानों की बात का जवाब दे दिया। इसी तरह जब मसीही लोगों ने वाईबिल के बअज़ नोशतों को पाँच हज़ार साल का पुराना बताया तो स्वामी दयानन्द ने उनकी तरदीद का आसान तरीका ये समझा कि उसने उनके मुकाबले में वेधों को एक अरब कई करोड़ बरस का पुराना बता दिया इस तरह इसने पंजाबी की ज़रबुल मिस्त जाट के सर पर खाट और तेली के सर पर कोल्हू रखने का अमल किया वरना अग्रे वाकिफ़ा तो ये है कि किसी किताब को इलहामी होने के बर्जे से साफ़ित करने के लिए स्वामी दयानन्द ने जो मैअयार मुकर्रर किया है और जो ऊपर दिखाया जा चुका है। इसी मैअयार पर परखने से वेद एक बदतरीन किताब सावित होती है। क्योंकि इसमें अपने दुश्मनों के साथ महज़ इस बिना पर कि हम इनको अपना दुश्मन समझते हैं ऐसे जालिमाना सुलूक की तालीम दी गयी है जिसका कि इस किताब में जिसको कि स्वामी दयानन्द वहशियों की किताब करार देता है। नाम व निशान भी नहीं मिलता ये तालीम कि इन लोगों से जो तुम को तंग करते हैं या तुम पर जुल्म करते हैं या तुम्हारे अयाल व अतफ़ाल को अनवाअ व अक़साम की तकलीफ़ पहुँचाते हैं। तुम उनको मुकाबले में अपने आप को डिफ़ेन्ड करो। इस कदर ख़ीफ़नाक नहीं है, जिस कदर कि ये तालीम ख़तरनाक है कि तुम लोगों को जिन्दा आग में जला दो। समन्दर में गर्क कर दो। शेर के मुँह में डाल दो, बरिन्दों से चरवा दो, जो ख़्वाह तुम से किसी किस्म की दुश्मनी या अनाद न रखते हो तुम उनसे नाखुश हो, या उनको बुरा समझते हो, या उनसे दुश्मनी रखते हो, ये ऐसी तालीम है खुदा का ज़ावता तो एक तरफ़ दुनिया के मुरब्बजा क़वानीन के मुताबिक़ भी क़ाविले तारीफ़ नहीं कही जा सकती क्योंकि जहाँ मुरब्बजा क़वानीन गवर्नमेन्ट सेल्फ़ डिफ़ेन्स को बअज़ हालात में ज़ुम् करार नहीं देते वहाँ वह ऑफ़ेन्सो पोलिसी को मतऊन गरदाते हैं। ये ताजनुब की बात है कि स्वामी दयानन्द सेल्फ़ डिफ़ेन्स की तालीम को तो वहशियों की तालीम बताता है। लेकिन वह ऑफ़ेन्सो पोलिसी की तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब करता है हालाँकि कोई दयानतदार शक़्स अपनी आँख के शहतीर को तिनका और दूसरे की आँख के तिनके को शहतीर ज़ाहिर नहीं करेगा। बल्कि इसकी दयानतदारी का तकाज़ा ये होगा कि तिनका ख़्वाह मुखालिफ़ की आँख में हो ख़्वाह इसकी अपनी आँख में हो वह इसको तिनका की कड़े और हत्ताउल

ग़ाज़ी महमूद बर्मापाल

मकड़ूर उसको निकालने की कोशिश करे। मगर जैसा कि ऊपर दिखाया जा चुका है कि स्वामी दयानन्द ने अपने पुत्रालिपुओं की किताबों के तिनके को शहतीर और वेदों के शहतीरों को तिनके वल्कि सुमें के खूबसूरत डोरे ज़ाहिर किया है। इसकी वजह सिवाये इसके कुछ नहीं हो सकती है कि वह मुहम्मिक की पोज़िशन में मिस्टर हरवर्ट स्पेन्सर के अल्फ़ाज़ में मुल्की, कीमी, नसली और पैदाइशी तअस्सुवात से आज़ाद नहीं था। चुनावें इनकी तहरीर से जावजा इस बात का पता लगता है मसलन् वह ब्रह्मो समाजियों का खंडन करते हुए लिखते हैं -

(१) वेद विद्या से ये वहरा लोगों के ख़्यालात बिल्कुल सच्चे क्योकर हो सकते हैं...

उन लोगों में अपने मुल्क की हमदर्दी बहुत कम है, उन्होंने ईसाइयों के चलन बहुत से इश्तिहार किये हैं।

(२) अपने मुल्क की तारीफ़ या बुजुर्गों की वड़ाई करनी तो दूर रही इसके अवज़ में पेट भरकर मज़मूत करते हैं। लेकचरों में ईसाई वगैरह अंग्रेज़ों की तारीफ़ दिल खोलकर करते हैं। ब्रह्मा वगैरह महर्षियों के नाम भी नहीं लेते।'

(३) भला जब आर्यवृत्त में पैदा हुए और इस मुल्क का आवो दाना ख़ाया पिया और अब भी खाते पीते हैं तो अपने माँ बाप दादा के रास्ते को छोड़कर दीगर गैर मुमालिक के मज़हबों की तरफ़ ज़्यादा माइल हो जाना और ब्रह्म समाजी और प्रार्थना समाजियों का इस मुल्क में रहकर इल्म संस्कृत से बेवहरा होकर अपने को आलिम ज़ाहिर करना। अंग्रेज़ी पढ़कर पंडित का धमण्ड करना और फ़ौरन् एक मज़हब चलाने के लिये राशिब हो जाना ये इन्सानों के लिए मुस्ताहक़म और उनकी तरक्की करने वाला काम क्योकर हो सकता है।

(४) अंग्रेज़ मुसलमान चन्डाल वगैरह से भी खाने पीने की तमीज़ नहीं रखी .... उन्होंने यही समझा होगा कि खाने और ज़ात का इन्तियाज़ तोड़ने से हम और हमारा मुल्क सुधर जायेगा लेकिन ऐसी बातों से सुधार तो कहां है उल्टा बिगाड़ होता है।

(५) जब कुल सच्चाइयों वेदों से हासिल होती हैं जिनमें कि झूठ ज़रा भी नहीं है तो उनके तसलीम करने में शक करना अपना और दूसरेका महज़ नुकसान करना है। इसी वजह से तुम को आर्य वृत्ती लोग अपना नहीं

**'वेद और स्वामी दयानन्द'**

समझते और तुम आर्य वृत्त की तरक्की का बाइस भी नहीं हो सकते।

(६) भला वेद वगैरह सच्चे शास्त्रों को माने वगैरह तुम अपने कौल की सच्चाई और झूठ की आजमाईश और आर्य वृत्त की तरक्की भी कभी कर सकते हो। जिस मुल्क को बीमारी हुई है उसकी दवाई तुम्हारे पास नहीं है और यूरोपियन लोग तुम्हारी परवाह नहीं करते और आर्य वृत्ती लोग तुमको दीगर मज़हब वालों की मानिन्द समझते हैं। अब भी समझ कर वेद वगैरह की क़द्र करने से मुल्क की तरक्की करने लगे तो भी अच्छा है।'

(७) हम और आप को निहायत मुनासिब है कि जिस मुल्क की अश्या से अपना जिस्म बना और अब भी परवरिश पा रहा है और आइन्दा पायेगा उसकी तरक्की तन धन से सब लोग फ़िक्र मुहब्बत से करें इसलिये जैसा कि आर्य समाज मुल्क आर्यवृत्त की तरक्की का बाइस है वैसा और कोई नहीं हो सकता। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ११)

मज़कूरा वाला चन्द इकतवासते से ता लग सकता है कि स्वामी दयानन्द मुल्की कीमी, नसली और पैदाइशी तअस्सुवात का शिकार था, गो इससे इसका आला दर्जे का पोलिटिकल रिफ़ॉर्म और देशभक्त होना तो साबित होता है जो कि कोई गुनाह की बात नहीं है लेकिन वह वे लाग मुहम्मिक और सदाकत को तरफ़दार नहीं था। यही वजह है कि दीगर मज़हबी कुतुब के असली या फ़र्ज़ी उजूब के बरख़िलाफ़ तो वह वेरहमी से कुल्छाड़ा चलाता गया। लेकिन जब उनसे हज़ार दर्जे बढ़कर उजूब इसको वेदों में नज़र आये तो इसका हाथ काँप गया। वह सिर्फ़ यही नहीं कि उन उजूब के बरख़िलाफ़ आवाज़ न उठा सका बल्कि उसने एक मामला की मारी हुई माँ की तरह जो दूसरे के बच्चों को ख़्वाह वह कैसे ही खूबसूरत और साफ़ सुथरे हों नफरत करती हो और अपने पेट से पैदा शुदा बच्चे को ख़्वाह वह कैसा ही लूला, लंगड़ा, लुंजा और अंधा हो बूस चाटकर छाती से लगा लेती हो। वेदों की मज़कूरा वाला सख़्त ख़तरनाक तालीम को अपने मैश्रयार और उसूल के बरख़िलाफ़ पाकर भी निहायत ही ध्यार और मुहब्बत के साथ सिर्फ़ अपने दिल में जगह दी बल्कि उनको खुदावेदे कुड़ूस की किताब तसलीम किया। इन तमाम हालात का मुतालाआ करके हर एक हक़ पसन्द शख्स इस नतीजे पर पहुँचेगा कि वेदों को खुदा का कलाम तसलीम करने में स्वामी दयानन्द ने दयनतदारी को रियाकारी पर कुर्यान कर दिया और अपने इस फ़ज़ल की

**ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल**

ताईद में इसने स्वामी शंकराचार्य को भी अपने साथ मिला लिया'' जैसा कि पीछे दिखाया जा चुका है। मिस्टर ब्रूम के अल्फ़ान में हक व हक्कानियत के तमाम आशिकों को इस बात पर वाकई अफ़सोस करना चाहिये।

पाँचवीं फ़सल

## वेद और आलमगीर शान्ति

अर्थात् विश्व-शान्ति

अब मैं इस बात पर वदस कसँगा कि वेदों को खुदा का कलाम मानने वाले जो ये दावे करते हैं कि दुनिया में जिस कद्र जंग व जवाल, कूल व खून और मादुदा परस्ती का इस वक्त ज़ोर है वह सब वेदों की तालीम से बेवहारा रहने का वाइस है और कि अगर दुनिया में वेदों की तालीम फैल जाये तो चारों तरफ़ अमन व अमान और आलमगीरी शान्ति का राज हो जायेगा। देखना चाहिये कि ये दावा वाकिफ़ात की बिना पर कहीं तक सच है। पेशतर इसके इस दाव को शुरू किया जाये मैं मुनासिब समझता हूँ कि एक दफ़ा स्वामी दयानन्द को इस कौल को जिसको मैं पीछे भी नक़ल कर चुका हूँ, यहाँ पर दोबारा नक़ल कर दूँ। स्वामी दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं -

“इस किस्म की प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और न परमेश्वर इसको कबूल करता है जैसा कि ये है कि ऐ परमेश्वर! आप मेरे दुश्मनों को फ़ना करो मुझ को सबसे बड़ा बनाओ। मेरी ही नेक नामी हो और सब मेरे मातेहत हो जाये वगैरह वगैरह क्योंकि अगर दोनों दुश्मन एक दूसरे के फ़ना होने के वास्ते प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों को फ़ना कर देवे अगर कोई कहे कि जिसकी मुहब्बत ज्यादा होगी इसकी प्रार्थना सफल हो जायेगी तो हम कह सकते हैं कि जिसकी मुहब्बत कम हो उसका दुश्मन भी कम बनें फ़ना होना चाहिये। ऐसी जिहालत की प्रार्थना करते करते कोई ऐसी प्रार्थना भी करने लग जायेगा वगैरह। (समुल्लास ७)”

स्वामी दयानन्द की ये पोलिशन जैसा कि पीछे दिखाया जा चुका है, बिल्कुल माकूल है। इस माकूलियत के मुकाबले में वेदों के वह तमाम मंत्र जो कि ऊपर दर्ज किये जा चुके हैं बिल्कुल लगू (बेकार) हो जाते हैं और खुद स्वामी दयानन्द के कौल के मुताबिक वह महज़ जिहालत की प्रार्थनायें रह जाते हैं और ये है भी बिल्कुल ठीक। क्योंकि अगर इन मंत्रों को खुदा का कलाम

मान लिया जाये तो खुदा की पोजिशन एक तमाश वीन इन्सान से ज्यादा बेहतर साबित नहीं हो सकती। जिन लोगों को वुटेरे या मुर्ग लड़ाने का शौक होता है उनका कायदा होता है कि वह अपने अपने जानवरों को खूब मोटा ताज़ा करते हैं और फिर लड़ने के लिये छोड़ देते हैं, जब वह लड़ते लड़ते थक जाते हैं तो वह उनकी पानी और थापी देकर फिर लड़ाते हैं। चूँकि वह तमाशा वीन होते हैं इसलिये वह दानिस्ता जानवरों को आपस में लड़ाते हैं। अगर वेदों को मज़कूरा वाला मंत्रों को खुदा का कलाम तसलीम कर लिया जाये तो खुदा की पोजिशन हमारे नज़दीक इसी किस्म के एक तमाशवीन इन्सान की सी हो जाती है जबकि हम देखते हैं कि ऐसे मंत्रों का इलाहाम देने वाला हम को भी अनाज पानी हवा सूरज की रोशनी वगैरह नेअमलों से बेहरवर करता है। और जिन के हक में वह हमें ये वद दुआ करने की तालीम देता है कि ये वीज़ें उनके लिये ज़ेहर हो जायें वह उनको भी यही वीज़ें अता करता है बल्कि अक्सर सूरतों में उनको हम से ज्यादा बेहतर और कसरत से देता है। अब हमें तो खुदा वेदों में ये तालीम देता है कि तुम अपने दुशमनों की हलाकत के लिये मुझ से ये दुआ करो उधर वह हमारे दुशमनों के साथ जा सकता है और उनको हर एक किस्म की चीज़ों से मदद देता है। न सिर्फ़ यही बल्कि वह हमारे दुशमनों को भी यही दुआ सिखाता है कि वह हमारी हलाकत के लिये इससे बद्दुआ करें। अब एक तरफ़ तो वेदों में दिये गये इलाही अहकाम के मुताबिक़ हम अपने दुशमनों के लिये बद्दुआ कर रहे हैं और उनकी हलाकत के मनसूबे सोच रहे हैं और दूसरी तरफ़ हमारे दुशमन हमारी हलाकत के लिये बद्दुआ करते और मनसूबे सोचते हैं। लुफ़ ये है कि हम दोनों ही वेदों के मंत्रों से अपने अपने रबैये की तसदीक़ करते हैं गोया ऐसी हालत में खुदा एक तरफ़ हमारे दिल में भी दुशमनों के साथ लड़ने का जोश भर रहा है और दूसरी तरफ़ हमारे दुशमनों के दिल में भी हमारे मुकाबले पर डटे रहने का ख़याल मज़बूत कर रहा है। सोचना चाहिये कि आया खुदा की ये पोजिशन जो कि वेद हमें बताता है विएयतिही मुर्ग़ को इन्सान की सी पोजिशन नहीं है। वरना अगर खुदा दरहकीक़त हमारे दुशमनों की हलाकत चाहता तो या वह दरहकीक़त पानी हवा अनाज वगैरह को उनके हक़ में ज़ेहरीला करना चाहता हो तो उसको क्या ज़रूरत पड़ी है कि वह इन बातों की तकमील के लिये हमारे कानों में आकर फूँक़ मारे और हमको यह

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

इलाहाम दे कि हम उससे दुआ करें कि हमारे दुशमनों के लिये पानी हवा अनाज वगैरह ज़िन्दगी के सामान सबके सब ज़ेहरीले हो जायें। जब वह कादिये मुतलक और अलीम कुल है। तो क्यों नहीं वह अपने इत्म से जान कर ज़्यादा करने वालों और पापियों के लिये अपनी हवा को बन्द कर देता, पानी को शुष्क कर देता या अनाज को ज़ेहरीला बना देता या किसी और तरीक़े पर सज़ा दे देता। इसको हमारी दुआ या सिफ़ारिश की हरगिज़ ज़रूरत नहीं हो सकती। तावक़ते कि हम उसको लूला, लंगड़ा या गुंगा, बेहरा या सोया हुआ न फ़र्ज़ कर लें जिसको कि पापियों का नाश करने के लिये उसी तरह जाकर इतला देने या जगाने की ज़रूरत हो सकती है जिस तरह कि हम कोतवाली में जाकर जगाते या मुतलज़ करते हैं। चूँकि खुदावन्दे कुद़दूस की ज्ञाते पाक इन बातों से अरफ़अ व आला है इसलिये लाज़मी तौर पर यही तसलीम करना पड़ता है कि मज़कूरा वाला किस्म की प्रार्थनायें न तो खुदा का कलाम हैं न उनको खुदा की तरफ़ मनसूब करना चाहिये। बल्कि वकील स्वामी दयानन्द ये सब महज़ जाहिलों के अपने ख़यालात हैं जो कि खुदावन्दे कुद़दूस की ज्ञाते वाला सिफ़ात से अंधेरे में थे और वह खुदा को महज़ अपने ही शहर का कोतवाल समझते थे। अगर वेदों के मंत्रों के बनाने वालों को खुदावन्दे कुद़दूस की ज्ञात के बारे में कमाहिका इल्म होता तो वह कम इससे इस किस्म की नामाकूल प्रार्थनायें कभी न करते। मगर चूँकि वह खुद ग़ैज़ व ग़ज़ब और हसद व बुर्ज़ का शिकार थे इसलिये उन्होंने दुशमनों के लिये भी जो प्रार्थनायें की हैं वह ग़ैज़ व ग़ज़ब हसद व बुर्ज़ की मुजस्सम तसवीरें हैं। शाक्यमणी गीतम दुख़ की तालीम में ये ख़याल बहुत ज़बरदस्त अल्फ़ाज़ में पाया जाता है कि दुशमन को दुशमनी से दूर नहीं किया जा सकता बल्कि मुहव्वत से दूर किया जा सकता है अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे दुशमन तुम से मुहव्वत करें तो तुम उनसे मुहव्वत करो यही ख़याल हमें हज़रत ईसा मसीह की तालीम में मिलता है जबकि वह वहीं अल्फ़ाज़ उपदेश करते हैं-

तुम सुन चुके हो कि कहा गया है अपने पड़ोसियों से दोस्ती रख और अपने दुशमन से अवावत लेकिन मैं तुम्हें कहता हूँ कि अपने दुशमनों को प्यार करो और जो तुम पर लातन करें उन के लिये बरकत चाहो जो तुम से कीना रखें उनका भला करो और जो तुम्हें दुख़ दें और सतायें उनके लिये

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल



दुआ करे ताकि तुम अपने बाप के जो आसामान पर है फ़रज़न्द हो क्योंकि वह अपने सूरज को बँटूँ और नेकियों पर यकतौँ उगाता है और रास्तों और ना रास्तियों पर मीढ़ वरसाता है क्योंकि अगर तुम उन्हीं को प्यार करो जो तुम्हें प्यार करते हैं तो तुम्हारे लिये क्या अज़्र है कि क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते। (मता बाव ५ आयत: ४३-४७)

हज़रत ईसा मसीह की मज़कूर वाला तालीम वेदों के मज़कूर वाला मंत्रों की तालीम से बदरज्हा अफ़ज़ल है। अगर हज़रत मसीह और वेदों के मंत्रों के इल्लहाम देने वाले का वाहम मुक़ाबला करना हो तो यकीनन् हज़रत मसीह का दर्जा ऐसे इल्लहाम के मालिक से लाखों गुना बड़कर रहेगा। क्योंकि हज़रत मसीह खुदावन्दे कुद़ूस की स्प्रिट में मुजस्सम प्रेम, अफ़ और दरगुज़र की तालीम देते हैं, जबकि वेदों के मज़कूर वाला मंत्रों का प्रकाशक (जैसा कि वेदों को इल्लहामी मानने वालों का ख़्याल है) निहायत ही कीना तोज़ वुरज़ व हसद व ग़ैज़ व ग़ज़व का शिकार नज़र आता है।

रसूले अरबी हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की मुक़द्दस और पाकीज़ा ज़िन्दगी से भी ऐसे बहुत से वाकिआत पेश किये जा सकते हैं कि जिन लोगों ने आप को अनवाअ व अक़साम की त्कालीफ़ दी थी आप पर जादू चलाये थे, कीचड़ फेंका था, गालियाँ दी थीं, आपको मारा था, ज़ुल्मी किया था, आपके दाँत तोड़े थे और आप को कल के मनसूबे बाँधे थे, घर से बेघर कर दिया था, आप का और आप के असहाब का माल व दौलत और घर बार भी लूट लिया था, लेकिन जब इस किस्म के आपके दुश्मन आपको सुपुर्द गिरफ़्तार करके लाये थे या लाये जाते तो आप हमेशा उनको माफ़ कर देते और आपने कभी किसी दुश्मन से बदला न लिया बल्कि उहद के मौक़े पर जबकि आपको दुश्मनों ने ज़ुल्मी करके एक ग़ार में फेंक दिया तो आपके कई रफ़का ने आप से अर्ज़ किया कि आप खुदावन्दे कुद़ूस से ऐसे बदकिरदार दुश्मनों की हलाकत के लिये वदुआ करें तो आप ने कमाले नमी और इसतक़लाल से फ़रमाया-

अनुवाद: “यानी मैं अपने दुश्मनों पर लानत करने या उनके हक़ में वदुआ करना के लिये नहीं भेजा गया बल्कि मुझे खुदावन्दे कुद़ूस ने इस ख़िदमत पर मामून् किया है कि मैं उनको खुदावन्द की तरफ़ बुलाऊँ और उनके हक़ में अयरे रहमत बँटूँ। ऐ मेरे खुदावन्द! तू मेरी कीम को बिनायत

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

दे क्योंकि वह नहीं जानते कि मेरे साथ क्या सुलूक कर रहे हैं।”

यकीनन् हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की ये स्प्रिट हुस्ने अज़्लाक और दरगुज़र का एक नमूना है। लेकिन मुझे अफ़सोस के साथ इस बात का इक़बाल करना पड़ता है कि दुश्मनों से दरगुज़र करने उनकी बड़बूदी चाहने और उनसे प्रेम व मुहब्बत करने की तालीम का जो अमली नमूना महात्मा बुद्ध और हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब अपनी मुक़द्दस ज़िन्दगियों में दिखा गये, उसका यानी दुश्मनों के साथ नेकी करने या उनसे दरगुज़र करने का वेद में कहीं नाम व निशान भी नहीं मिलता बल्कि जावजा यही तालीम है कि दुश्मनों की गर्दन काटो, उनको ज़िन्दा आग में जला दो, शेरों से फड़वा दो, समन्दर में गर्फ़ कर दो, दरिन्दों से चरवा दो, फाँसी पर चढ़ा दो वगैरह वगैरह। हालाँकि वेदों को खुदा का कलाम कहा जाता है। अगर खुदा का कलाम यही है तो यकीनन् ग़ैतम बुद्ध और हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की ज्ञाते वाला सिफ़ात अरफ़ज़ व आला समझनी चाहिये। ऐसी सूरत में लाज़िम हो जाता है कि हम ऐसे खुदा की वजाये अपनी इताअत व फ़रमाँवरदारी का गुँह ग़हात्ता बुद्ध या हज़रत ईसा मसीह या हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब की तरफ़ फेर दें या इस बात को तसलीम करें कि खुदावन्दे कुद़ूस की ज्ञात वाला सिफ़ात, उन इल्लामों से मुवर्रा है जो कि मंत्रों में इस पर लगाये गये हैं और ये कि वेद किसी सूरत में खुदावन्दे कुद़ूस का कलाम नहीं है। सिर्फ़ यही नहीं कि वेद में अपने दुश्मनों के लिये सज़त से सज़त सज़ायें और कमीने से कमीना बद्दुआयें तजवीज़ की गयी हैं बल्कि ख़ौफ़नाक जंग व जदल की भी तालीम दी गयी है। वह लोग जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं उनको ये दावा है कि दुनिया में इस वक़्त जिस कद्र जंग व जदल और कश्त व खून हो रहे हैं वह उस वक़्त तक मौकूफ़ नहीं होंगे जब तक कि वेदों का प्रचार नहीं होगा और कि दुनिया में अगर आलमगीर अमन की बादशाहत कायम हो सकती है तो वह महज़ वेदों के प्रचार से ही हो सकती है, वेदों की तालीम की मौजूदगी में ये दावा ऐसा वे बुनियाद दावा मालूम होता है कि जिससे बड़कर बेबुनियाद और झूठा दावा दुनिया में कोई नहीं होगा जो लोग ऐसा दावा करते हैं ग़ालिवन् उन्होंने वेदों का मुतालेआ नहीं किया होगा कम से कम वह स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का ही मुतालेआ कर लें जिसको मैंने आम लोगों

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

की वाकिफयत के लिये उर्दू का जामा पहना दिया है तो उनका ये ख्याल इस तरह उनके दिल से काफूर हो जायेगा। जिस तरह कि सूरज के सामने शवनाम, पेशतर इसके कि मैं जंग व जदल और कश्त व खून के बारे में वेद मंत्रों को यहाँ पर दर्ज करूँ। मैं एक दूसरे दावे पर भी यहाँ पर चन्द जुमले लिख देना चाहता हूँ। चुनांचे वह लोग जो वेदों को खुदा का कलाम मानते हैं वह ये भी कहते हैं कि इवतदाये आफरीनिश में भी इन्सान पैदा हुआ ही था कि इसकी रहबरी के लिये वेद नाज़िल हो गये। ये एक आम बात है कि पैदाइश के वक़्त इन्सान का दिल बिल्कुल साफ़ और हर एक किस्म की शरारतों से پاک होता है। उस वक़्त इसके दिल पर जो बात नक्श करना चाहो वह आसानी से नक्श हो सकती है। इवतदाये आफरीनिश के बच्चों के दिल भी हस्वे कायदा तमाम शरारतों से پاک थे। और वह आपस में दंगा फ़साद कुश्त व खून नहीं करते थे। इस वक़्त अगर उनको किसी किस्म की तालीम की ज़रूरत थी तो वह आपस में प्रेम, मुहब्बत सुलह से रहने की तालीम की ज़रूरत थी, ये बात तो उनके कान तक भी नहीं पहुँचनी चाहिये थी कि तुम आपस में जंग करो, तीर कमान बनाओ, तोप और बन्दूक तैयार करो, फौजें भर्ती करो, अपने दुश्मनों की गर्दन काटो, उन्हें ज़िन्दा आग में जला दो, मगर इवतदाये आफरीनिश में इन्सानों को कुश्त, खून व जंग व जदल की मारधाड़, दुश्मनी और अदावत की तालीम देने वाला अगर कोई हो सकता है तो वह वेदों के मंत्र थे जिनको पढ़कर वह उन ख़तरनाक बातों का शिकार हो गये और उन्होंने वेदों को पढ़कर तीर कमान, तोप, बन्दूक, तलवार हथियार वगैरह बनाने सीखे और ये खुद उन लोगों का जो कि वेदों को सब से पहला इल्लहाम मानते हैं दावा है कि वेदों में इस किस्म के हथियार बनाने की तालीम मौजूद है। बनी नूप इन्सान का कोई बहीख़्वाह तोप और बन्दूक और दूसरे ख़तरनाक हथियारों के मौजूद या मुअल्लिम को मुवारकवाद देने के लिये तैयार नहीं होगा जबकि ये अम्ने वाकिअ है कि इन चीज़ों ने ज़मीन के फ़र्श को इन्सान की खून से रंग डाला और इन चीज़ों को इन्सानों के हक़ में लानत और शरारत बना दिया। बहुत से बनी नूप इन्सान के बही ख़्वाह ये तजावीज़ सोचने के लिये मजबूर हो रहे हैं कि इस शरारत और लानत को कर्बोकर दूर या कम से कम घटाया जा सकता है। अगर ये दावे सच हैं कि वेदों का इल्लहाम इवतदाये आफरीनिश में हुआ। अगर ये दावा भी

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

सच है कि वेदों ने ही सब से पहले अपने हम जिनसों का गला काटने के लिये इस किस्म के हथियार बनाने की तालीम दी (जैसा कि वेदों को इल्लहामी मानने वाले बता रहे हैं) तो ज़मीन की मौजूदा लानत का सरचश्मा वेद को करार देना बिल्कुल मुनासिब और दुस्तत होगा। लेकिन अगर ये कहा जाये कि वेदों के इज़हार से पेशतर दुनिया में इस किस्म के कुश्त व खून और जंग व हदल जारी थे और कि वेदों की तालीम से पहले ही लोग तोप बन्दूक और तीर व कमान से एक दूसरे को हलाक कर रहे थे तो उनसे सिर्फ़ यही नहीं कि इस दावे की कि वेदों का इल्लहाम शुरू दुनिया में हुआ, तरदीब हो जाती है। बल्कि वेदों के सर पर ये इल्लहाम आयद हो जाता है कि जिस सूरत में कि ये जंग व हदल और कुश्त व खून वेदों से पहले ही जारी थे तो वेदों ने अपनी तालीम से बजाये इनका ख़ात्मा करने या सुलह की तालीम देने के ज़लती आग पर और भी धी डाल दिया और जंग व जदल कुश्त व खून करने फौज भर्ती करने, तीर कमान, तोप बन्दूक और अनवाअ व अक़साम के आतिशी और विजली के असलहे तैयार करने की ऐसी ख़तरनाक तालीम दी कि तमाम दुनिया शोला-ए-ग़ार बन गयी, नमूने के तीर पर मैं इस निहायत ही ख़तरनाक कुश्त व खून और जंग व जदल की तालीम देने वाले चन्द वेद मंत्रों को यहाँ पर यज़ुर्वेद में से पेश करता हूँ -

(१) वह जो हवाई जहाज़ में बैठकर हवा में उड़ते हैं जिनके तीर हवा की मानिन्द चलने वाले हैं इन पुरानों की मानिन्द बहादुरों को हमारा सल्कार हो।” (यज़ुर्वेद १६/२५)

(२) जिन के तीर बारिश की मानिन्द वरसने वाले हैं हम लोग दुश्मनों को मारने वाले इन बहादुरों का सल्कार करते हैं।” (यज़ुर्वेद १६/५१)

(३) ऐ सिफ़सालार आप हम को दिल्ली राहद देने वाले हैं आप हमारी हिफ़ाज़त की खातिर तलवार, तोप बन्दूक को ग्रहण करें। आप हिरन की खाल को पहने हुए हमारी हिफ़ाज़त के लिये आये और दुश्मनों की ज़बरदस्त फौज को दरख़्त की मानिन्द काट कर फ़तह कीजिये। (१६/५१)

(४) ऐ सूर की मानिन्द सोने से नफ़रत करने वाले राजा! आप के जो अनवाअ व अक़साम के हथियार हैं वह हमारे सिवाये दुश्मनों को मारने का मौजिब हैं। (१६/५२)

(५) ऐ खुश किस्मत सिफ़सालार आप अपने ज़ोर आवर वायुओं से

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

वैशुमार हथियारों का कमाहिका इस्तेमाल करने वाले हैं। (१६/५३)

(६) ऐ इन्सानो! जिस तरह हम लोग हज़ारों जीव जन्तुओं से भरी हुई और ज़मीन के हज़ारों पूजन लम्बे चौड़े देश व देशान्तर में अपनी कमान को चल्ले पर चड़ाते हैं उसी तरह तुम भी करो। (१६/५४)

(७) हम लोग दुश्मनों को मारने और उनको ताड़ने का काम करने वालों का सत्कार करते हैं। (१६/४५)

(८) हम लोग ख़ूब ख़ोर दुश्मन को मारने वाले तीर बनाने वाले कमान बनाने वाले तीरो तफ़ंग चलाने वाले तुम लोगों का सत्कार करते हैं। (१६/४६)

(९) जो दुश्मनों को पहले से ही घेर लेने और कैद कर लेने वाले और दुष्टों को मारने और उनकी विल्कुल बेख़कनी करने वाले और दुश्मनों को काटने वाले और हरे वालों वाले चीज़वान या हरे दरख़्तों को अनाज और पानी देता है, वह सुख को प्राप्त करता है। (१६/४८)

(१०) वह जो जंगल में रहने वालों को □□ह तेज़ रफ़तार फ़ौज के सिपहसालार को तेज़ रफ़तार रथों के मालिक को कोचवान को दुश्मनों को मारने वाले और उनको तितर बितर करने वाले वहादुरों और एलचियों को अनाज देते हैं वह फ़तह नसीब होते हैं। (१६/३४)

(११) ऐ राजा और प्रजा के पुरुषों! तुम लोग बलम और फ़तह लगाने वाले और उनका मुनासिब इस्तेमाल करने वाले पुरुषों का सत्कार करो□□ह सिपहसालार और कमान अफसरों को बाजा बजाने वाले बैन्ड मास्टर का और वहादुरों को मैदाने जंग में जोश दिलाने के लिये ज़रीमा गीत गाने वाले का सत्कार करो। (१६/३५)

(१२) राजा और प्रजा के पुरुषों को चाहिये कि वह बहुत से हथियारों से मुसल्लह और तीरों से भरे हुए तरकश वाले का सत्कार करें तेज़ हथियारों और तोप बन्दूक से मुसल्लह फ़ौज के सिपहसालार का सत्कार करें, ख़ूबसूरत हथियारों वाले और उमदा कमानों वाले पुरुषों और उनके मुहाफ़िज़ों को अनाज दें। (१६/३६)

(१३) राजा अधिकारी पुरुषों को चाहिये कि वह दुश्मनों को ख़लाने वाले और दुश्मनों की फ़ौज को मिट्टी में मिलाने वाले वहादुरों को अनाज वग़ैरह दें। (१६/१८)

(१४) इन्सानों को चाहिये कि जिसके पास तलवार, बन्दूक वग़ैरह बहुत से हथियार हों उसको अनाज वग़ैरह दें। (१६/४०)

(१५) ऐ इन्सानो! तुम सबको बता दो कि हम लोग दुश्मनों पर हथियार चलाने वाले को तुम में से दुश्मनों को हथियार से मारने वालों को अनाज देंगे। (१६/३३)

(१६) हम अदल व इन्साफ़ करने वाली स्त्रियों का और तुम में से सभा की रक्षा करने वाले राजाओं का सत्कार करेंगे, घोड़े की रक्षा करने वालों को, दुश्मनों की फ़ौज को मारने वाली अपनी फ़ौज को और तुम में से जो स्त्रियाँ दुश्मनों की फ़ौज के वहादुरों को मारने वाली हों और मुक़तलिफ़ तरकों वाली हों और मैदाने जंग में दुश्मनों को मारती हुई स्त्रियों को अनाज देंगे और उनको कमाहिका इस्तेमाल करेंगे। (१६/२४)

(१७) ऐ दुश्मनों को मारने वाले राजा तेरे लिये अनाज प्राप्त हो, तेरे वाजुओं से दुश्मनों को वज्र प्राप्त हो। (१६/१९)

(१८) ऐ बादल की तरह तीरों की वारिश करने वाले सिपहसालार! तेरा तीर को हाथ में लेना और इसको चलाना मंगलकारी हो। (१६/३१)

(१९) वह सिपहसालार जो गले में नीलम की माला पहने हुए है जो दुश्मनों को ख़लाने वाला है वह हम को सुख देने वाला हो। (१६/७)

(२०) ऐ बुलन्द इक़बाल सिपहसालार! तेरे हाथ में जो तीर हैं तू उनको कमान में रखकर कमान के दोनों गोशों को मिलाकर बड़े ज़ोर से दुश्मन पर छोड़ और तीर दुश्मन तुझ पर चलावे तो अपने आप को उनकी ज़ब से दूर रखे। (१६/९)

(२१) ऐ फ़नून जंग में माहिर इन्सानो! इस जटायारी सिपहसालार की कमान कभी भी चल्ले से उतरने न पाये और इसके तीर की नोक कभी न टूटे इस मुसल्लह सिपहसालार का तरकश कभी भी तीरों से ख़ाली न होने पाये उसका तरकश हमेशा तीरों से भरा रहे। मगर इसका तरकश तीरों से ख़ाली हो जाये तो इसको नये तीरों से भर दो। (१६/१०)

(२२) ऐ बहुत ज़्यादा डेरिया सींचने वाले सिपहसालार! तेरे हाथ में जो तीर व कमान हैं तेरे मुत्तीज़ जो फ़ौज है तू इस तीर व कमान और फ़तह नसीब फ़ौज के ज़रिये हमारी सब तरफ़ से हिफ़ाज़त कर। (१६/११)

(२३) ऐ सिपह सालार! तू अपनी तीर अन्दाज़ कमान के साथ हमारी दूर

और नज़दीक सब तरफ से रक्षा कर, आप हमारे नज़दीक ही अपने तरकश को तीरों से भरकर धारण कीजिय। (१६/१२)

(२४) ऐ मैदान जंग में चारों तरफ नज़र दौड़ाने वाले तीर कमान से मुसल्लाह फौज के सिपहसालार तू अपनी कमान को फैला और नोकदार तीरों को दुश्मनों पर चला और उनको हलाक करके हमें दिली राहत देने वाला हो। (१६/१३)

(२५) ऐ कुव्वते बाज़ू रखने वाले फौज के सिपहसालार! तुझे हथियार प्राप्त हों। (१६/१७)

(२६) ऐ राजा! आप हमारे ज़ोर आवर दुश्मनों पर फ़तह हासिल कीजिये। (१५/२)

(२७) ऐ तेज़ हथियारों का इस्तेमाल करने वाले, मजकूर वाला और साफ से मीसूफ सरदार जिस तरह सूरज की तेज़ किरणें सुबह के वक़्त रात को दूर करके दिन को प्रकाशित करती हैं। इसी तरह तू भी अपने तेज़ स्वभाव से रात की मानिन्द राक्षसों को यकीनन भस्म कर। (१५/३७)

(२८) ऐ राजा! आप हमारे लिये मैदान जंग में दुश्मनों पर फ़तह पाने वाले हैं। आप की फौज मैदान जंग में कारहाये नुमायों करने वाली हो। (१५/३६)

(२९) ऐ राजा! आप अपनी फौज की ताक़त को मुस्तक़िल तौर पर बढ़ायें। (१५/४०)

(३०) ऐ सिपेहसालार! आप अपना जवा दिखायें और मुल्क गिरी कीजिय। (१५/५२)

(३१) ऐ सिपेहसालार! आप ताक़त हासिल करें और इस ज़मीन को अपने दाम तसख़्म में लायें। दुश्मनों को मुँह के बल गिरायें हाथी और फौज के मालिक राजा की मानिन्द आप अपने दुश्मनों को निहायत ही दुख देने वाले हथियारों से मारते हुए उनके गले में फाँसी डालें और उनको ख़बर लानत फटकार करें। (१२/९)

(३२) ऐ सिपेहसालार! आपकी बहादुरों की फौज विजली की तरह कड़कती और चमकती हुई चारों तरफ से दुश्मनों की फौज पर हमलावर हो। ऐ सिपेहसालार तू अपनी फौज की ताक़त को बढ़ा और उसको ख़ूब तरबियत कर जिस तरह आग पर धी डालने से शोले बुलन्द होते हैं उसी तरह तू

‘वेद और स्वामी वयानन्द’

दुश्मनों की फौज पर विजली के हथियार चला। (१३/१०)

(३३) ऐ मेरी बहादुर बीवी! दुश्मन तेरी नज़र को नहीं सहार सकता तू अपने आप ही दुश्मन की फौज से लड़ती हुई दुश्मन के हमलों को रोकती है। (१३/२६)

(३४) ऐ आलिम वाअमल और पुर जलाल महात्मन्! आप के घोड़े मज़िल मकसूद तक पहुँचाने वाले बड़े सभे हुए दुश्मन पर हमला करने के लिये बड़े जोश और ताक़त के साथ रथ को खींचने वाले हैं। (१३/३६)

(३५) ऐ आलिम वाअमल महात्मन्! आप के जिन घोड़ों को चाबुक सवारों ने सहाया हुआ है। आप उनको दुश्मनों की फौज के मुकाबले में रथ में जोड़िये। (१३/३७)

(३६) ऐ वेद के जानने वाले राजा! तुम अपने रिआया के दुश्मनों को आग की मानिन्द तपाओ और अपनी रिआया की मदद से अपने दुश्मनों पर फ़तह हासिल करो। (१२/१६)

(३७) राजा को चाहिये कि आग की तरह दुश्मनों को तवाह करे। (१२/१३)

(३८) ऐ इन्सानो! तुम्हारा जो सिपहसालार है वह सूरज की मानिन्द आव व ताव वाला हो, वह दुश्मनों के हक में बर्क़ दरख़्शां हो। ऐसा ही सिपहसालार हमारी फौजों की कमान करे।

(३९) जो इन्सान सूरज की मानिन्द दुश्मनों से लड़ने वाला हो वही ग्रहस्त आश्रम में दाख़िल होने के लायक है। (१३/६६)

(४०) ऐ शान्ति स्वभाव पुरुष! आप दुश्मनों को नीचा दिखने वाले फ़न जंग को सीखें। (१२/१३)

(४१) ऐ राजा तेरा दुश्मनों के मुकाबले पर जाना मुबारक हो तू अपनी ताक़तवर फौज के साथ वद किरदार दुश्मनों की फौज पर हमला कर और उसको तहे तेग़ कर तू दुश्मनों के मुल्क को पामाल करता हुआ वापस आ तू हमें सुख दे। दुश्मनों को ख़लाने वाला तेरा सिपहसालार तेरे साथ हो। (११/१५)

(४२) ऐ राजा जिस तरह तेज़ रफ़तार घोड़ा! मैदान जंग में अपनी ज़ोलांनी से ज़मीन को हिला देता है वैसे ही तू भी मैदान जंग में धूम मचा। (१२/१८)

ग़ज़ा महमूद धर्मपाल

(४३) ऐ राजा तू कमाले मुहर व मुहव्वत से अपने दुश्मनों को पायमाल करके अपनी राज भूमि में इल्म की रोशनी फैलाने की ख्वाहिश कर। (११/१६)

(४४) ऐ राजा! तू अपनी फौज के साथ दुश्मन के मुकाबले पर कायम हो। (११/२०)

(४५) ऐ राजा! जिस तरह हिफाजत करने वाले आलिम को पौत्र शागिर्द सुख देने वाले आग वगैरह पदार्थों को हासिल करके वेदों के अर्थ को जानने वाला और तमाम उलूम में माहिर और दुश्मनों को मारने वाला और दुश्मनों के गाँव को तबाह करके आप के जाह व हशमत को घोषाला करना है, उसी तरह दीगर विद्वान लोग भी आपको विद्या और रोने से तरक्की दें। (११/२३)

(४६) ऐ पानी की मानिन्द नेक और साफ रखने वाली स्त्रियों! अगर तुमको सुख भोगने की ख्वाहिश है तो तुम बड़े बड़े लड़ाई के मैदानों और ताकत व शुजाअत के हाथों में हमारे पहलू वा पहलू कदम मारो। (११/५०)

(४७) ऐ सिपेहसालार! जिस तरह मैं मुकाबले पर आकर लड़ने वाले, मुख्तलिफ़ किसम की धमकियाँ देने वाली हथियारों से मुसल्लह हुई दुश्मन की फौज को जलती हुई आग की लपेट में गिराता हूँ उसी तरह तू भी ऐसे आदमियों को भस्म किया कर। (११/७७)

(४८) ऐ सभा और फौज के स्वामी! जो लोग हम से दुश्मनी करते हैं जो हमारे साथ द्वेष करते हैं जो हमारी निन्दा करते हैं जो हम को धोखा दे और मक्कारी करे तो ऐसे तमाम इन्सानों का जलाकर भस्म कर डाल। (२१/८०)

(४९) ऐ राजा! तेरा राज दुश्मनों को हलाक करके तेरे लिये निद्रायत की खुशी का देने वाला हो। (६/४)

(५०) ऐ वीर पुरुष! जिस मैदाने जंग में तू जाओ हशमत वाले राजा के संगरा मूलका विभाग करने वाला, वज्र की मानिन्द दुश्मनों को काटने वाला और प्रजा की रक्षा करने वाला हो, इस मैदाने जंग का आप के साथ ये पुरुष इन्तज़ाम करे। (६/५)

(५१) ऐ राजा! जिस तरह बाज़ हवा में चारों तरफ़ तेज़ी से उड़ता है उसी तरह आप भी हमारे लिये फौज की ताकत से ताकतवर हो जाइये। (६/९)

(५२) ऐ आलिम इन्सानो! तुम इस राजा की फ़नून जंग में वाकिफ़यत को

ज्यादा करो ऐ दुश्मनों की वेखूकनी करने वाले राजा! आप दुश्मनों पर फ़तह हासिल करके इक़बाल मंद हों। (६/११)

(५३) ऐ राजपुरुषो! तुम लोग जाह व हशमत के देने वाले सिपेहसालार को मैदाने जंग में फ़तह नसीब करो। (६/१२)

(५४) ऐ इल्म की ताकत से आरास्ता मैदाने जंग को जीतने वाले चारों तरफ़ से दुश्मनों की देखभाल करके उनको घेरने वाले लोगो! जैसे तुम लोग चारों तरफ़ चलते हो वैसे ही हम भी चलें। (६/१३)

(५५) सिपेहसालार को चाहिये कि वह अपनी फौज को तमाम कील काँटे से लैस करके बोली पर चलने के लिये तैयार रखे।

(५६) ऐ राजा! मैं राक्षसों के नाश करने के लिये आपको ब्रह्मण करता हूँ जिस तरह तूने दुष्ट को मारा है वैसे ही हम भी दुष्टों को मारें वह दुष्ट नष्ट हो जाये वैसे हम लोग भी उन सब को नष्ट करें। (६/३८)

(५७) ऐ सभापति! आप अपनी फौज के साथ अपनी हर एक किसम की ताकत को बढ़ावें। (८/२६)

(५८) ऐ काली घटा की मानिन्द फौज के बहादुरो! तुम दोनों इन तमाम दुश्मनों को जो हमारी फौज से लड़ना चाहें तीर व तफंग से हलाक करो और दुश्मनों की जो फौज तुम्हारे सामने आये और जो भी तुम्हारे सामने अकड़फूँ करे तुम लोग उनको मार भगाओ। (८/५३)

(५९) मैदाने जंग में वैदिक विद्या को प्रकाश करने वाला हम को वैदिक और बुद्ध की शिक्षा वुक्त वाणी से आनन्द देने वाला हो, दूसरा बहादुर मैदान में दुश्मनों की पामाल करता हुआ आगे चले। तीसरा बहादुर मैदाने जंग में वीर रस से लड़ने वालों को जोश दिलाता रहे चौथा बहादुर कसाल आनन्द से धर्म के दुश्मनों पर फ़तह हासिल करे। (७/४४)

(६०) ऐ राजनू! जिस तरह मैं बुरे काम करने वाले जीवों को गले काटता हूँ वैसे तू भी काट, मुझ से द्वेष वा नफरत करने वाले दुश्मनों को दूर कर जो मेरे सरीहनु दुश्मन हैं उनको अलग कर। (६/१)

(६१) ऐ सिपेहसालार! तू तमाम बहादुरों की फौज के दुश्मनों को चारों तरफ़ से घेरने के लिये शुमाल जुनुव, मशरिफ़ मगरिव में बाँट। (६/१६)

(६२) ऐ सभापति! जिस कर्म से बड़े बड़े धमण्डी दुश्मन मारे जायें, इस परम उत्तम दुश्मनों को हलाक करने वालो काम के लिये आपको जो कि

आला जाह व हशमत के धारण करने वाले हैं और युद्ध वगैरह कामों में वाज वगैरह जानवरों की मानिन्द लपेट मारने वाले हैं, हम लोग आप को स्वीकार करते हैं। (६/३२)

(६३) ऐ आलमे इन्सान जिस तरह तू धार्मिक विद्वानों में जलवा गर है उसी तरह तू राखसों वदकिरदारों को तवाह करने वाला हो जिस तरह तू सब जगह जलवागर होता है उसी तरह तू अपने दुश्मनों को हलाक करने वाला बन।

(६४) ऐ राजसभा के पालन करने वाले इन्सानो! मैं आप लोगों की पैरवी करता हुआ मैदाने जंग में घमण्डी को नीचा दिखाऊँ जैसे आप राखसों और वदकिरदारों को मारने वाले हैं वैसे ही मैं दुश्मनों की फौज की ताकत का पता लगाकर वदकिरदारों को दूर करूँ। (५/२५)

(६५) जैसे बहादुर आदमी मैदाने जंग में अपनी फौज के साथ दुश्मनों को पहले ही जाकर घेर लेता है। इसी तरह फुन महारवा में माहिर ये सेनापति मैदाने जंग में मुकम्मल फुतह हासिल करे ये सेनापति हर एक किस्म के खौफ से अलग होकर बिल्कुल आनन्द से मैदाने जंग में क्वाइदान फौज को अच्छी तरह से बोली देता हुआ फुतह को हासिल करे। (५/२७)

(६६) ऐ दुश्मनों को खलाने वाले सिपेहसालार! तू मैदाने जंग के लिये अपने धनुष को फैलाने वाला हथियारों के जरिये अपने दुश्मनों की ताकत को पीसकर अपनी रक्षा करने वाला, जरा बकतर लगाने वाला सब सुखो को देने वाला है ऐ बहादुर सेनापति! मंजघास से छपे हुए पन्नाओं की दूसरी तरफ के मुल्क में दुश्मनों को फुतह कर। (३/६९)

(६७) मैं मादी आग और चन्द्र लोग के दुखों को बर्दाश्त करने के काबिल दुश्मनों को अच्छी तरह उम्दा दलाईल से मुजयन करूँ। (२/१५)

(६८) आकिल इन्सान जीवन का हित करने वाली इस ज़मीन के सहारे से फौज और असलहे सिलसिलावारलेकर जंगजुओं इन्सानों को अपना रोअव और अपनी हशमत दिखाते हुए दुश्मनों के आज्ञा काटने वाले मैदाने जंग में ग़नीम पर फुतह पाकर राज को हासिल करते हैं। (१/२८)

(६९) मैं इस मैदाने जंग को जो नियायत वसीअ और दुश्मनों को हलाक करने वाला है .... इस हंगामाखेज मैदाने जंग को अनाज वगैरह अशवा से ताकतवर की गयी फौज के साथ जंग के तरीकों से अच्छी तरह पाक करता

हूँ। (१/२६)

(७०) जिस तरह मैं इस जंग में जिसमें कि आलिम लोग अच्छे अच्छे पद्धार्थ या आला से आला विद्वानों की संगत को प्राप्त होते हैं। इस जंग में दुश्मनों को मारता हूँ, वैसे तुम लोग भी मारो। (१/२६)

(७१) हम लोग तुम्हारे साथ आकर आला तरीके से ग़नीम को शिकस्त दें और भारी लड़ाइयों में सब तरह से फुतह हासिल करें क्योंकि आप इल्म जंग के जानने वाले हैं। (१/१६)

(७२) जो बहादुर सवार होते वक़्त थोड़े को सीधा चलाता है और भूखा प्यासा मैदाने जंग में लड़ता और फुतह पाता है वही राज करने के लायक होता है। (२७/१०)

(७३) ऐ सभापति! तेरी मुसल्लह फौज हमारे सिवाये दूसरों को दुख देने वाली हो। (१७/११)

(७४) ऐ राजा! आप के हथियार हम को छोड़कर बाकी दुश्मनों को दुखी करने वाले हों। (१७/१५)

(७५) वह जो तमाम इन्सानों में चुरत व चालाक हो, ताकतवर बेल की, मानिन्द खौफ दिताने वाला हो, दुश्मनों को रात दिन मारने डराने, और खलाने वाला जरदीद रोज़गार हो। ऐसा बहादुर हम लोगों में से दुश्मनों पर फुतह पाने वाली और दुश्मनों को बाँधने वाली फौजों का सिपेहसालार हो। (१७/३३)

(७६) एक जंगजू बहादुरो! तुम हमेशा दुश्मनो से लड़ते भिड़ते और उनको दुख देते रहे तुम्हारे हाथ में हमेशा ही मज़बूत तीर रहें। (१७/३४)

(७७) सिपेहसालार को चाहिये कि वह तोप बन्दूक तलवार और दीगर आतिशी असलहे से मुसल्लह फौज को हर वक़्त मुस्तैद रखे, वह तमाम असलहे का इस्तेमाल जानने वाला हो, ऐसा सिपेहसालार ही सामने आये हुए दुश्मन पर फुतह पाता है। इसकी कमान तेज़ होती है वह मैदाने जंग का आशिक होता है, वह ख़ूब हथियार चलाता और दुश्मनों को मारता है ऐसा सिपेहसालार ही एक क्वाइदान फौज के साथ दुश्मनों पर फुतह पाता है।

(७८) तू रथ में सवार फौज के साथ दुश्मनों को चारों तरफ से काटता हुआ फुतह हासिल कर। (१७/३६)

(७९) ऐ सिपेहसालार! तू अपनी फौज को बढ़ाने वाला है तू वड़ा बहादुर

ताकतवर और शास्त्रों को जानने वाला है तू सुख दुख को वर्दाश करने वाला और दुश्मनों को बड़ी फुर्ती से मारने वाला है। मैदाने जंग में लड़ने वाले बहादुर आप की आँख को इशारे पर चलने वाले हैं। (१७/३७)

(८०) वह सिपेहसालार जो कि अपनी अक्ल और ताकत के ज़ोर से दुश्मनों के जल्थों को छिन्न भिन्न करता, उनकी जड़ काटता, उनकी ज़मीन को छीन लेता और अपने हाथ में हथियार लिये रहता है और मैदाने का कारेज़ार में अच्छी तरह दुश्मनों को हलाक करता है और उन पर फ़तह पाता है ऐसे सिपेहसालार को तुम इस तरह से हौसला दो और जंग को शुरू करो। (१७/३८)

(८१) इस मैदाने जंग में जहाँपर कि हर एक किस्म के जोड़ तोड़ किये जाते हैं वह सिपेहसालार जो कि पूरी ताकत के साथ दुश्मनों का बीज नाश करता हुआ और उनको अच्छी तरह पाँव के नीचे रौंदा हुआ और उन पर किसी किस्म का रहम न करता हुआ और हर एक किस्म के ग़ैज़ व ग़जब से भरा हुआ दुश्मनों की फ़ौज को मग़लूब करता है और उनको आइन्दा लड़ने के काबिल नहीं रहने देता, ऐसा बहादुर शख्स हमारी फ़ौजों की कमान करे और वही सिपेहसालार हो। (१७/३९)

(८२) मैदाने जंग में दुश्मन की फ़ौज को सब तरफ़ से मारती हुई और उन पर फ़तह पाती हुई क़वाइदान फ़ौज का सिपेहसालार उनके पीछे पीछे चले और फ़ौज के तमाम अधीकारों का रखने वाला दायीं तरफ़ और फ़ौज को जोश देने वाला दायीं तरफ़ चले और हकी मानिन्द तेज़ रफ़तार और जंगज़ू बहादुर आगे आगे चलें। (१७/४०)

(८३) सिपेहसालार को चाहिये कि सबसे पहले वह मैदाने जंग में जोश दिलाने वाला गीत बाजा के ज़रिये बुलन्द करवाये। (१७/४१)

(८४) ऐ बादलों की तरह दुश्मनों को छिन्न भिन्न करने वाले क़ाबिले तारीफ़ सिपेहसालार! आप हमारी फ़ौज के जंगज़ू बहादुरों के हथियारों को फ़तह नसीब कीजिये, हमारे फ़तह नसीब रथों से जय जय के नारे बुलन्द हों। (१७/४२)

(८५) ऐ फ़तह पाने वाले आलिम लोगो! आप हमारे बूक़लमों रंगों वाले झंडों को अलेहदा अलेहदा रथों पर कायम कीजिये। फ़तह का ख़्वाइशमंद सिपेहसालार और हमारी क़वाइदान फ़ौज दोनों के दोनों ही दुश्मनों को मैदाने

जंग में पसपा करें। (१७/४३)

(८६) ऐ दुश्मनों की जान लेने वाली रानी! तू अपनी औरतों की फ़ौज के दिलों में उत्साह पैदा करे तू उन औरतों की फ़ौज के मुख़्तलिफ़ दस्तों को ग्रहण कर तू अपनी फ़ौज पर अपने दिली मक़सिद का इज़हार कर और दुश्मनों को भस्म कर। (१७/४४)

(८७) ऐ तीर अन्दाज़ी के इल्म में माहिर और वेधों के जानने वाले सिपेहसालार की स्त्री! तू मैदाने जंग की ख़्वाइश करती हुई दूर देश में जाकर दुश्मनों से लड़ाई कर और उनको मारकर फ़तह हासिल कर तू उन दूर दराज़ के मुल्कों में रहने वाले दुश्मनों में से एक को भी मारे वग़ैर मत छोड़। (१७/४५)

(८८) दुश्मनों की जो ज़बरदस्त फ़ौज जंग के इरादे से हमारे मुक़ाबले में आये हम इसको काटने वाले हथियारों और तोप वग़ैरह के धुरें से इस तरह ढोप दें कि ग़नीम की फ़ौज के सिपाही एक दूसरे को न पहचान सकें। (१७/४७)

(८९) जिस मैदाने जंग में छोटे छोटे बच्चों की तरह चोटी वाले और वग़ैर चोटी वाले तीरों की ख़ूब बारिश होती है। वहाँ पर सिपेहसालार ज़िख्मियों को बख़्शी ढाड दे। (१७/४८)

(९०) एक जंगज़ू बहादुर! मैं तेरे मैदाने जंग में चोट खाने वाले आज्ञा को ज़राबक़तर वग़ैरह से ढोपता हूँ .... आलिम लोग तुझे दुश्मनों के पायमाल करने के लिये जोश दिलायें। (१७/४९)

(९१) दो सिपेहसालार विजली और आग की मानिन्द मेरे मुख़ालिफ़ों को उठा उठाकर ज़मीन पर पटख़ें। (१७/५०)

(९२) ऐ बहादुरो! तुम विजली से सुख हासिल करो और वर्तनों में पकाये हुए दाल कड़ी वग़ैरह को हाथ में लेकर जंग व जदल करो। (१७/५१)

(९३) ऐ आलिमों की ताज़ीम के लायक और दुश्मनों को मारने वाले सिपेहसालार! जिस तरह सूरज आकाश में रहने वाले गरजने वाले और चारों तरफ़ फैले हुए बादल को वग़ैर हाथ पाँव के चकनाचूर कर देता है उसी तरह ऐ सिपेहसालार तू भी अपने दुश्मनों को ताकत से मार। (१८/६९)

(९४) ऐ सिपेहसालार तू फ़तह नसीब हो, तेरी फ़ौज हमारे दुश्मनों को मुँह के बल गिराये। (१८/७०)



(६५) ऐ सूरज की मानिन्द सिपेहसालार! जिस तरह सूरज पानी से भरे हुए घंघोर घटा से अंधेरे में आकर बाबलो को छिन्न भिन्न कर देता है, उसी तरह तू भी ऐसी फौज हासिल कर जो चारों तरफ छाये हुए दुश्मनों को तितर बितर करके तुझे फतह नसीब करे। (१६/७१)

(६६) ऐ सिपेहसालार! जिस तरह सूरज पानी को ऊपर उठाता है उसी तरह तू अपनी फौज को तैयार कर। (२०/३८)

(६७) ऐ सिपेहसालार तू मोर के बालों की मानिन्द बाल रखने वाले उम्दा घोड़ों के साथ दुश्मनों पर फतह पाने के लिये जा। जानवरों को पकड़ने वाले शिकारी की तरह दुश्मन तुझे अपनी कर्मब में न फँस सके तू अपने तीर व कमान के साथ दुश्मनों पर फतह पाकर वापस आना। (२०/५३)

(६८) ऐ वीर पुरुष! जिस तरह हम हथियारों के जरिये दुश्मनों के मनसूवों को ख़ाक में मिलाते मुल्कों को फतह करते, मैदान जंग में कामयाब होते, दुश्मनों की तेज़ रफ़तार फौज को तितर बितर करते हुए चारों तरफ फतह व नुसरत का डंका बजाते हैं उसी तरह तुम भी फतह हासिल करो। (२६/३६)

(६९) ऐ वीर पुरुष! ये जो चल्ते पर चढ़ी हुई कमान के ऊपर लगी हुई तॉत है जो इस तरह से चोल्ती है जिस तरह कि पड़ी लिखी बाशऊर स्त्री चोल्ती है जिसकी तारीफ़ की जाती है और जो इस तरह प्यारी आवाज़ निकालती है। ये जो मैदाने जंग में फतह दिलाने वाली है। तुम इसका बाँधना और चलाना सीखो। (२६/४०)

(१००) ऐ वीर पुरुष! जिस तरह लिखी पड़ी स्त्री प्राण की मानिन्द प्यारे पति को और माता अपने पुत्र को धारण करती है इसी तरह कमान की चो तॉत दुश्मनों को मुन्तशिर करने और दूर भगाने में कामयाब होती हैं। (२६/४१)

(१०१) ऐ वीर पुरुष! जो बहुत से तॉतों वाले कमान का मालिक होता है। वह कमान से सम्बन्ध रखने वाले तीरों को तरकश में डाल कर पीठ के पीछे रखता है। मैदाने जंग में ये कमान और तॉत और तीर वगैरह चीं चीं की आवाज़ निकालते हैं इसी से बहादुर आदमी चारों तरफ फैली हुई दुश्मनों की फौज पर फतह हासिल करता है। (२६/४३)

(१०२) ऐ वीर पुरुषो! वह जिनके वेल ख़ूब मोटे ताज़े और हाथों की

मानिन्द डिफ़ाज़त करने वाले और रथों को तेज़ी से ले जाने वाले ख़ूबसूरत रफ़तार वाले और दुश्मनों को धमकाते हुए तेज़ रफ़तार झिन्हिनाने वाले घोड़े हैं। दुश्मनों को हलाक करने वाले ऐसे बहादुरों को तुम लोग दिल व जान से प्यार करो। (२६/४४)

(१०३) ऐ वीर पुरुष! इस जंगजू बहादुर के रथ में ग्रहण करने के क़ाबिल अग्नि, ईंधन, जल वगैरह पदार्थ और तोप बन्दूक और क़वीर वगैरह हथियार जिस क़द्र भी हैं उनको देख भालकर रथ में रख ऐसे सुख देने वाले रथ को हम लोग रोज़ प्राप्त हों। (२६/४५)

(१०४) ऐ वीर पुरुष! जिस फौज में सिपेहसालार उम्दा हो रथ वगैरह तमाम सामान मज़बूत हों जहाँ कर्तूरी वाली गाय के मानिन्द झिरन हों। वहाँ भली प्रकार तीर चलते हैं जो क़बाइद बान फौज वाली पर इधर उधर चलती और बैठती और दौड़ती है। इस फौज के बहादुर पुरुष हमारे लिये ख़ास तौर पर सुख देने का मौजब हों। (२६/४८)

(१०५) ऐ घोड़ों को सधाने वाली रानी! जिस तरह वीर पुरुष घोड़ों के ज़िम पर चाबुक लगाकर चलाते हैं और बहादुरों को मैदाने जंग में लड़ाते हैं इसी तरह तू भी मैदाने जंग में जाकर सधे हुए घोड़ों से काम ले। (२६/५०)

(१०६) ऐ नक्क़ारे की तरह गरजने वाले फौज के सिपेहसालार! आप हमारे उद्बूध को दूर करते हुए हमें बल और पराक्रम दीजिये। फौज को तरतीब दीजिये, दुष्टों को कुलों की मीत मारिये आप अपनी फौज को विजली के हथियारों से मुसल्लह कीजिये। (२६/५६)

(१०७) ऐ राजपुरुष! आप झिन्हिनाते हुए घोड़ों वाली फौज से हमारी डिफ़ाज़त कीजिये और हमारे रथों पर चढ़े हुए बहादुर पुरुष दुश्मनों पर फतह हासिल करें। (२६/५७)

(१०८) ऐ राजा जिस तरह आप मैदाने जंग में दुश्मनों की तमाम फौजों को पसपा करते हैं, दुष्टों को मार कर सुख देने वाले और फतह नसीब हुए हैं, इसी तरह आप सदा ही उनको मारते रहें। (३३/६६)

(१०९) ऐ दुश्मनों को मारने वाले राजा! आप दुश्मनों को मारने वाले और उनको सखाने वाले हैं आप के क्रोध से दुश्मनों की फौज मारी जाती है। (३३/६७)

(११०) है पाप के दूर करने वाले और रोशनी देने वाले परमात्मन! आपको नमश्कार हो ऐ परतिश के लायक परमात्मन आपको नमश्कार हो, आप की न टलने वाली देवस्था हमारे सिवाये दूसरे दुश्मनों की दुख देने वाली हो, आप हम को पवित्र कीजिये।

**मैं ज़ख़रत नहीं समझता कि जंग व हदल और मार धाड़ के बारे में ज़्यादा मंतर पेश कलैं। मज़कूरा वाला सी से ज़्यादा मंत्र सिर्फ़ नमूने के तौर पर मैंने यज़ुर्वेद में से पेश किये हैं और तर्जुमा वही दिया है जो कि स्वामी दयानन्द ने किया है।** यज़ुर्वेद में से इससे कई गुना ज़्यादा मंत्र इसी किस्म के कुश्ल व खून और जंग व जदल के बारे में मौजूद हैं। ये तो एक वेद का हाल है इसी पर बाकी के तीन वेदों का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। कि इनमें एक दूसरे के साथ दंगा फ़साद करने की किस कदर तालीम मौजूद होगी। मज़कूरा वाला मंत्रों का सरसरी मुतालेआ करने से ही इस बात का पता लग जाता है कि वेदों में सबसे ज़्यादा तारीफ़ उन्हीं लोगों की गयी है जो जंग व जदल करने वाले और अपने दुश्मनों के गले काटने वाले हों। जावजा तीर, तफंग, तोप बन्दूक और दीगर आतिशी असलह के बनाने और इस्तेमाल करने की ताकीद की गयी है और राजा को हुक्म दिया गया है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा फ़ौज भर्ती करे। न सिर्फ़ मर्दों की ही फ़ौज भर्ती करे वल्कि औरतों की फ़ौज भी भर्ती करे खुद भी मैदान में जाकर लड़े। इसकी बीवी और दूसरी औरतें भी जाकर लड़ें। औरतें मर्दों को लड़ाई के लिये तैयार करें और उनको जोश दिलायें। गोली बारूद तीरों की ज़्यादा से ज़्यादा बिकदार बहम पहुँचायें। तोप बन्दूक देने वाली हों इस जंग व जदल में वह खुदा से भी यही दुआ करती जायें कि उनकी ही फ़तह हो और दुश्मनों की शिकस्त हो। इन तमाम बातों के मुतालफ़ से वेद हमारे सामने मारधाड़ और कुश्ल व खून का एक निहायत ही ख़ौफ़नाक मंज़ूर पेश करता है। हमारे सामने एक ऐसे मैदान जंग का नक्शा खोल देता है। जिसमें कुश्ल के पश्ते लग रहे हों और चारों तरफ़ मुर्दों की लाशें मरने वालों की चीख़ पुकार, इन्सानों की नीम कटी गर्दन, उनके टूटे हुए आंख़ मर्दों के कुल विधवाओं की आठ वज़ारी यतीमों की फ़रियाद, गाँव की बरबादी, हैवानों की हलाकत, खेतों का जलना, दुश्मन की पाँदों के पीने के पानियों में ज़हर का मिला देना, खाने की चीज़ों को भी ज़हर आलूदा कर देना वग़ैरह वग़ैरह तमाम ऐसी

**‘वेद और स्वामी दयानन्द’**

ख़तरनाक और वहशीपन की बातें हैं जिनकी कि वेद तालीम देता है। अगर वेद खुदा का कलाम होता तो वह बनी नूप इन्सान के लिये इसी तरह अत्रे रहमत होता जिस तरह कि खुद खुदावन्दे कुद्दूस हज़रत ईसा मसीह के अल्फ़ाज़ में अपने सूरज को नेकों और बंदों पर यकसौं उगाता और उनकी परवरिश करता है। अगर वेद इन्सान का कलाम होता तो वह ग़ैतम बुद्ध, हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मुहम्मद स०अ०व० साहब से बड़कर दुश्मनों के साथ शान्ति, बरगुज़र, बुरदबारी, तहम्मल, प्रेम और मुहब्बत की तालीम देता ताकि दुनिया पर कुश्ल व खून का दरवाज़ा बन्द हो जाता और बनी नूप इन्सान आपस में एक दूसरे के साथ मुहब्बत और सुलह से रहना पसन्द करते। ये मारधाड़, कुश्ल व खून, दंगा फ़साद, जंग व जदल तो दुनिया मे पहले से ही चला आता है। और अब भी चारों तरफ़ जारी है। अपने हम जिनसों को हलाक करने के लिये रोज़ नये से नये तरीक़े सोचे जा रहे हैं और नये से नये हथियार तोप, बन्दूक गोला, बरख़ी ईजाद किये जा रहे हैं। ख़तरनाक जहाज़ बनाये जा रहे हैं। खुश्की तरी और हवा में जंग व जदल करने और अपने भाईयों के गले काटने के लिये रोज़ नयी से नयी ईजादें की जा रही हैं। हम अपने चारों तरफ़ आग के उन शोलों को आसमान की तरफ़ बुलन्द हुआ देखते हैं। इन्सानो दुनिया में चारों तरफ़ शोर महशूर बरपा है। वेद सिर्फ़ यही नहीं कि इस फ़अल के बरख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठाता वल्कि वह इसकी ताईद करता है और तालीम देता है कि अपने हम जिनसों को कुल करने के लिये नये से नये हथियार, तोप बन्दूक जहाज़ गोला बारूद बनाओ, ज़्यादा से ज़्यादा फ़ौज भर्ती करो और अपने दुश्मनों की गर्दन काटो लुफ़ की बात ये है कि इधर इस पार्टी को उस पार्टी की गर्दन काटने की तालीम है और इस तालीम को खुदा की तरफ़ मनसूब किया जाता है जो कि दोनों पार्टियों के लिये महकमा रसद रसानी या कसरेट का काम कर रहा है जब ऐसी तालीम को खुदावन्दे कुद्दूस की तरफ़ मनसूब किया जाता है तो अक्लमंदों, मुसिफ़ मिज़ाजों, सुलह और अमन के तालिबों बनी नूप इन्सान के बही ख़्वाबों के लिये वेद नफ़रत की चीज़ हो जाते हैं। मगर सोचने वाले जब इस बात पर विचार करते हैं कि वाकई अगर खुदा इसी किस्म का इल्हाम देने वाला है और ऐसी तालीम देकर लोगों को आपस में लड़ाकर तमाशा देखता है तो ऐसे खुदा को स्वामी दयानन्द के अल्फ़ाज़ में दूर से ही

**ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल**

सलाम कर देना चाहिये। हमें ऐसे खुदा की मतलक जरूरत नहीं है। इस तरह वअज़ अमन पसन्द, रहम दिल, मुस्फ़ि मिज़ाज़ इन्सान इलहामी कहलाने वाली किताब के अलावा इलहाम देने वाले खुदा को भी साथ ही धक्का दे देते और खुदा की हस्ती से मुनकिर हो जाते हैं। मगर वह लोग जो खुदा की हस्ती पर आज्ञादाना विचार करते हैं वह इसकी हस्ती से मुनकिर होने की वजाये इस किस्म की किताब को खुदा की किताब नहीं बल्कि वह महज़ इन्सानी दिमाग की इख़तराज़ बताकर इसकी वही पोज़िशन देते हैं जिसकी कि वह दरहकीकत मुस्तबिक है। मेरे ख़्याल में ये दूसरा तरीका पहले से ज्यादा अच्छा और महफूज़ है। जब मैं वेद में इस किस्म की तालीम देखता हूँ जिसका कि ऊपर ज़िक्र किया गया है तो मेरे दिल में सवाल पैदा होता है कि अगर ये ख़तरनाक तालीम दरहकीकत खुदा की तरफ से ही दी गयी है तो मुझे इस किताब के साथ ऐसे खुदा को भी परे फेंक देना चाहिये। ये बेहतर है कि मैं दुनिया में जंग व हदल कुश्त व खून मारथाड़, कल व गारत, लूट मार की तालीम देने वाले, तीर कमान, तोप, बन्दूक और दीगर आतिशी असलहे के ज़रिये वनी नूअ इन्सान का खून बहाने के लिये इन हथियारों के बनाने की हिदायत करने वाले मर्दों को कल करवाने, औरतों को विधवा बनाने, बच्चों को यतीम करवाने और मर्दों के साथ औरतों को भी लड़वाने, कल करवाने, गाँवों को जलाने, खेतों को जलाने, शेरों से फड़वाने, समन्दर में गूँक करने, दरिन्दों से बिरवाने और अनवाअ व अकसाम की अजीयतें देकर मार डालने की हिदायत करने वाले खुदा और खुदा की इस किस्म की किताब पर ईमान लाने के वग़ैर ज़िन्दगी बसर करूँ और ऐसे खुदा और उसकी इस किस्म की ख़तरनाक किताब पर लात मार कर नास्तिक, लमहद, देहरिया, और काफ़िर रहकर अमन की ज़िन्दगी बसर करता हुआ मर जाऊँ, बनिस्वत इसके कि मैं इस किस्म के खुदा और उसकी इस किस्म की ख़ूनी किताब के वोझ को अपने ज़मीर पर रखकर स्वामी दयानन्द के अलफ़ाज़ में हैवान या दरिन्दा बनूँ। ये पहला ख़्याल है जो कि मेरे दिल में इस वक़्त पैदा होता है जबकि मैं उन लोगों की आवाज़ को सुनता हूँ जो ये कहते हैं कि वेद खुदा का कलाम है लेकिन इसके बाद दूसरा ख़्याल मेरे दिल में पैदा होता है कि मुझे इस किस्म की ख़ूनी किताब को खुदावन्दे कुदरूस् की तरफ़ मनसूब नहीं करना चाहिये, बल्कि इन दोनों के बर्मियान एक हद फ़ासिल कायम करके वेद पर तो वेशक

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

लात मार देनी चाहिये। लेकिन मुझे इस ज़ाते पाक की हस्ती से मुनकिर नहीं होना चाहिये जो कि मेरी रूह का आख़री सहारा है और जो उन उयूब और इलज़ामात से पाक है जो कि उस पर इस किताब में लगाये जा रहे हैं। ये ख़्याल मेरे लिये ज्यादा शान्ति दायक है। पस खुदावन्दे कुदरूस् की ज़ाते पाक और वेद जैसी किताब के बर्मियान हद फ़ासिल कायम करना मेरा पहला फ़र्ज़ है इस हद फ़ासिल को कायम करके मेरे लिये ये लाज़मी हो जाता है कि मैं वेद को मारूँ या खुदा को। मगर जैसा कि हज़रत ईसा मसीह ने कहा है कि तुम खुदा और मादह परस्ती या रोशनी और तारीकी की एक साथ पूजा नहीं कर सकते हो। इसी तरह मैं खुदावन्दे कुदरूस् और वेद को एक साथ नहीं मान सकता। क्योंकि ये दोनों मुतज़ाद हैं। खुदावन्दे कुदरूस् अगर रोशनी है तो वेद तारीकी है। जैसा कि ऊपर दिखा चुका है। मुझे या तो रोशनी में चलना पड़ेगा या तारीकी में ठोकरें खानी पड़ेंगी। मैं रोशनी को तारीकी पर तरजीह देता हूँ और हर एक आफ़िल आदमी ऐसा ही करता है पस मैं खुदावन्दे कुदरूस् की ज़ाते पाक को वेद पर तरजीह देता हूँ। और इस ज़ाते पाक को अपने लिये काफ़ी समझकर वेद को परे फेंकता हूँ क्योंकि ऐसी किताब को खुदावन्दे की तरफ़ मनसूब करना या उसको इसका कलाम बताना निहायत ही ख़तरनाक इलहाद, ख़ौफ़नाक, देहरियत और शर्मनाक झूठ है। जिससे कि हर एक दयानतदार रूह को परहेज़ करना चाहिये।

ग़ाज़ी महमूद बर्मपाल

छठी फसल

## वेदों पर ईमान की बुनियाद की कमज़ोरी

ऊपर के तमाम मज़मून को पढ़कर कोई दयानतदार शख्स ये कहने का हीसला नहीं कर सकता कि वेदों के प्रचार से दुनिया में अमन और वैन की वादशाहत कायम हो सकती है जबकि वेदों में कुश्र व खून जंग व जदल और मार धाड़ की तालीम मौजूद हो। लेकिन हमारे मुल्क में ऐसे खुश ऐतकाद लोग भी हैं जो अभी तक वेदों को खुदा का कलाम माने हुए उनको दुनिया की अशान्ति दूर करने के मुजर्रव नुस्खा बता रहे हैं। अभी कल का ज़िक्र है कि मैं एक हिन्दी रिसाले का मुतालेआ कर रहा था। इसमें एक ग्रेजुएट का मज़मून मेरी नज़र से गुज़रा जिसके चन्द फकरात का तर्जुमा मुफ़रसला ज़ैल है

महर्षि दयानन्द का वेद भाष्य हमारे लिये एक वेशवन्ना मीरुसी जायदाद है जो वनी नूप इन्सान के लिये इस कद्र मुफीद है कि इसकी कीमत लगाना इन्सानी ताकत से बाहर है इस मज़मून के लिखने वाले को यकीन है कि इसकी तरह पढ़ने वालों में बड़ी तादाद ऐसे आला दिमागों की भी होगी कि जिनके डगमगाते हुए ईमान को इस भाष्य ने सन्नारा दिया होगा। ये सच है कि संसार की मौजूदा शान्ति इस वक्त दूर होगी जबकि वेद भगवान का प्रकाश दुनिया के हर एक कोने में पहुँच जाये तो ये भी सही है कि ऋषि दयानन्द का वेद भाष्य इस किस्म का पायोनियर होने के बावज़ इस आलमगीर शान्ति का पेश खेला होगा। गो आर्य समाज ने इस भाष्य को हर दिल अजीज़ बनाने के बारे में अपना फर्ज़ अदा किया है मगर फिर भी वह वक्त दूर नहीं कि वेद का हर एक जगह ने वेद भाषीय की एक कापी को लाज़मी दिलावदी समझेगा। और मौजूदा ज़माने के वेद भाष्य कार को प्रेम, प्रतिष्ठा और शुक्रगुज़ारी के भाव के साथ याद रखेगा। (नवजीवन वनारस सितम्बर १९१२ ई०)

मज़फ़ूरा वाला मज़मून को पढ़कर जो कि एक किस्म की खुश ऐतकादी का नतीजा है। कोई भी दयानतदार दरहकीकत शनास शख्स अफ़सोस किये वरीर नहीं रह सकता मज़मून निगार इस बात को अपनी ज़िन्दगी का एक

लाज़मी जुज़ू करार देता है वह इस ईमान को जो कि बरिया के किनारे की रेत पर कायम है, घास के तिनकों के बन्द बाँधकर सन्नारा देने का तालिव हो और वह इस बात पर रज़ामन्द नहीं है कि अपने ईमान की बुनियाद को रेत पर से हटाकर चट्टान पर कायम करे। अगर वह इस बात को तसलीम कर ले कि वेद खुदा का कलाम नहीं है बल्कि वह हमारे प्राचीन आबाव अजवाब के ख़यालात का मजमूआ है जिनमे से वअज़ ख़यालात बहुत अच्छे हैं और बअज़ बिल्कुल नाकिस और वहशियाना हैं तो इसके ईमान की बुनियाद हमेशा के लिये एक चट्टान पर रखी जा सकती है मगर बूँकि इसका ईमान ये है कि वेद खुदा का कलाम है। इसलिये जब इसके सामने कोई ऐसी बात वेद में निकलती है जो खुदा की ज़ात पर बदनुमा धब्बा हो तो वह अंधेरे में इधर उधर हाथ पाँव मारता और सन्नारा ढूँढता है। ताकि इसका ईमान डगमगा न जाये ये एक सज़ल काविले रहम और तरसनाक हालत है। इससे भी बढ़कर हंसी की बात ये है कि स्वामी दयानन्द का भाष्य डगमगाते हुए ईमान को सन्नारा देता है। मैं कह सकता हूँ कि स्वामी दयानन्द के भाषीय का कमादिका मुतालेआ करने से पेशतर वेदों पर मेरा ईमान बड़ा मज़बूत था। लेकिन जिस वक्त मुझे स्वामी दयानन्द के भाषीय का तर्जुमा करना पड़ा और इसके लफ़ज़ लफ़ज़ को अपने क़लम में से गुज़ारना पड़ा तो वेदों के खुदा का कलाम होने पर मेरा जो विश्वास था वह काफ़ूर हो गया। ये शायद मुवालेगा नहीं होगा अगर मैं ये कहूँ कि स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय को वरीर पढ़कर कोई भी दयानतदार शख्स वेदों को खुदा का कलाम नहीं मान सकेगा। तावक्तेकि वह रियाकारी से काम न ले नामानिगार मज़फ़ूर का ये ख़याल कि दुनिया की मौजूदा अशान्ति इसी वक्त दूर होगी जबकि वेद भगवान का प्रकाश दुनिया के कोने काने में पहुँच जायेगा एक ऐसा ख़याल है कि जिसको बेबुनियाद सावित करने के लिये कुछ ज़्यादा दूर जाने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि इस किस्म के ख़याल की तरदीद मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ वह लोग जो दिल के मज़बूत और सच्चाई के तालिव नहीं हैं जो इस उसूल को नहीं मानते कि सच्चाई को कबूल करना चाहिये और झूठ को छोड़ देना चाहिये, जब उनको स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य में ऐसी घातों का पता लगता है जिनसे कि उनके ईमान को लाग़ज़िश होती हो तो वह अपने ईमान की वोसीदगी पर ग़ौर नहीं करते बल्कि वह स्वामी दयानन्द पर ये फ़तवे देते हुए

सुने जाते हैं कि स्वामी दयानन्द मोटी अक्ल का आदमी था और कि वह दरअसल वेदों को नहीं समझा था। ये ज़्याला मुहज्जिक लोगो का ख्याल नहीं है बल्कि ऐसे लोगो का ख्याल है जो वेद को मुल्की नस्ली और पैदाईशी ज़्वात की बिना पर इसी तरह गोद से लगाये रखना चाहते हैं जिस तरह कि मामता की मारी हुई माँ अपने मुर्दा बच्चे को अपनी छाती से अलग करने के लिये तैयार नहीं होती ख़ाह इसको ये भी मालूम हो जाये कि बच्चा मर चुका है वह लोग जो ऐसी मामता का शिकार हो चुके हैं वह इस बात पर रज़ामंद हैं कि स्वामी दयानन्द को मोटी बुद्धि का आदमी बतायें लेकिन वह इस बात के लिए मुतलक तैयार नहीं होगे कि वेदों के कलामे इलाही होने में शक करें मिस्टर ब्रूम स्पेन्सर के अल्फाज़ में पैदाईशी या नस्ली तअस्सुव की ये एक उम्बा मिसाल है और इसमें वह ज़्वात भी शामिल हैं जो कि पुरोहितों की गुलामी की वजह से पैदा हुए हैं। मिस्टर हरबर्ट के अल्फाज़ में वेदों की कुंजी हमेशा पुरोहितों के हाथ में रही और उन्होंने इस बात को कभी गवारा नहीं किया कि इस किफ़ल को उनके सिवाये कोई दूसरा शख्स हाथ लगा सके पुरोहित क्लास ने अयामुन्नास को अपनी गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ने के लिये इस ढकोसले को हमेशा बतौर हथियार के इस्तेमाल किया कि वेद एक ऐसी किताब है जिसको कि खुदा बोलता है और कि वेद को पढ़ने का इस्तहकाफ़ सिवाये उनके किसी दूसरे को नहीं स्वामी दयानन्द ने बड़ी ज़रअत और दिलेरी से इस किफ़ल पर हाथ डाला और इसको तोड़ कर रख दिया। स्वागी दयानन्द की ये दिलेरी बनी तूप इन्सान के शुक्रिया की मुस्तलिक है। मगर स्वामी दयानन्द के बाद नयी पुरोहित क्लास पैदा हुई। इसने वेदों के साथ स्वामी दयानन्द के भाष्य को भी अज़सरे नै किफ़ल लगा दिया और ये ढकोसला घड़ा कि स्वामी दयानन्द के भाष्य को समझने के लिये भी वेद, वेदांग, दर्शन शास्त्र, दुनिया की पुरानी ज़बानें, मगरिबी फलसफ़े और साईन्स तमाम तवारीख़ वगैरह पढ़ने की ज़रूरत है। स्वामी दयानन्द के भाष्य को समझने के लिये उन्होंने इसी किस्म की दूसरी शराईत भी पेश की जिनका मतलब सिवाये उसके कुछ नहीं था कि नौ मैन तेल हो न राधा नाचे, इसी तरह वेद वदस्तूर साबिक अंधे ईमान की चीज़ बने रहे इसमें शक नहीं कि अगर स्वामी दयानन्द के वेद भाषीय का दुनिया की आम फ़ह ज़बानों में तर्जुमा हो जाये, तो ये इस अंधे ऐतकाद को उड़ाने के लिये कि वेद खुदा का

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

कलाम है बड़ा जबरदस्त ज़रिया साबित होगा। उस अन्धे ऐतकाद का ही नतीजा था कि वुस्ता ज़माने में हिन्दुस्तान में जिस कद्र वुरे से बुरे फिरके पैदा हुए उन्होंने अपनी बदअख़लाकी की बुनियाद वेद के ही किसी न किसी मंतर पर कायम की थी जिसका कि वह अपनी मर्ज़ी को मुताबिक़ तर्जुमा करते थे और जिन लोगो ने बुद्धो को महज़ इस बिना पर तवाह किया था कि वह वेदों से मुनकिर थे उन्होंने भी अपने इस किस्म के फ़तवों के लिये वेदों को ही बतौर हथियार के इस्तेमाल किया। स्वामी दयानन्द ने अगरचे पुरानी तफ़ासीर को वाम मार्गियों की तफ़ासीर कहकर रद किया है। लेकिन खुद स्वामी दयानन्द ने वेदों को जिस शक्ल में पेश किया है वह सख़्त ख़तरनाक है गो मौजूदा हालात हैं इसका ख़तरा बन्द मइसूस न किया जाता हो लेकिन अगर ये तालीम ऐसी क़ीम के हाथ में आ जाये जो कि वरसरे हुकूमत हो या इस तालीम को मानने वाली क़ीम वरसरे हुकूमत हो जाये तो इस वक़्त स्वामी दयानन्द का भाषीय दो धारी तल्वार का काम देगा क्योंकि इसमें उन लोगो के क़ल के लिये काफी से ज़्यादा फ़तवे मौजूद हैं जो कि वेदों के मानने वालों के दुश्मन हों या जिनको वेदों के मानने वाले अपना दुश्मन समझते हों या तकि कि ऐसे दुश्मनाने धर्म को उलटा करके ज़िन्दा आग में जलाने शेरों से फ़वज़ाने और दरिन्दों से चरवाने की सज़ा तजवीज़ की गयी है जैसा कि मैं पीछे दिखा चुका हूँ। इस ख़तरे की शिद्दत और भी देवाला हो जाती है जबकि इस बात पर ग़ौर किया जाता है कि वेदों के मंत्र एक ऐसी ज़बान में हैं जिसको वेद को खुदा का कलाम मानने वाले “यैगिक” कहते हैं। अगर मुझे यैगिक के लिये उर्दू का कोई आम फ़हम लफ़ज़ इस्तेमाल करना हो तो मैं इसके लिये “मोम की नाक” का लफ़ज़ इस्तेमाल करूँगा। मिस्टर ब्रूम के अल्फाज़ में इबारत की इस पैचीदगी की चादी हमेशा पुरोहित के हाथ में रहती है और पुरोहित का इश्तिवार है कि वह इस मोम की नाक को जिस तरह चाहें फेर दे स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में इस बात पर जो बहस की है वह एक दिलचस्प मुतालेआ है जव महीधर एक मंत्र पर से पर्दा उठाता है तो वह हमारे सामने एक निहायत ही फ़हश नज़ारा पेश करता है। जव इसी मंत्र पर से साइन आचारज पर्दा उठाता है तो वह कुछ और ही दिखाता है जव इसी मंत्र पर से स्वामी दयानन्द पर्दा उठाता है तो वह कुछ और ही नज़ारा पेश करता है हक़ व हकानियत का मितलाशी जव एक

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

ही मंतर को मुखलिफ पुरोहितों के हाथ में छलावे की तरह रंग बदलता हुआ देखता है तो वह इस नतीजे पर पहुँचने के बगैर नहीं रहता कि ये महज़ भानुमति का सा तमाशा है जिसमें कि खेलने वाले अपने हाथ की चालाकी से एक ही गोली के मुखलिफ रंग बदल कर दिखा रहे हों। पुरोहित लोग वेद मंतर की इस वृकलमयी को इवारत के “वीगिक” होने की तरफ मनसूब करते हैं लेकिन अगर दशीर देखा जाये तो कहना पड़ता है कि ये एक ऐसी बात है जो वेद मंतरों के सख्त धोखे देह और सख्त नाकाबिले ऐतवार होने पर दलील है और कि ऐसी किताब पर जो छलावे की तरह रंग बदल सकती हो अपने ईमान की बुनियाद रखना या उसको खुदा का कलाम मानना सख्त मुज़िर और खतरनाक खेल है। स्वामी दयानन्द ने इस हर वक़्त लज़ा रहने वाली छत को अपने वेद भाष्य के ज़रिये धोखियों और वल्लियों से कायम करने की कोशिश की है। लेकिन वअज़ पुक्कागत पर स्वामी दयानन्द ने भी वेद मंतरों के इस नंग को ढाँपने में जो कि दरहकीकत वहाँ पर मौजूद है अपने आप को वेदस्त व पा पाया है इसकी कुछ मिसालें ऊपर दी जा चुकी हैं। यहाँ पर चन्द मिसालें और पेश करता हूँ यजुर्वेद का चौबीसवाँ अध्याय दयानन्द के अल्फाज़ में पूँ है।

### चौबीसवाँ अध्याय

मंत्र १ -

तेज़ रफतार घोड़े, मारखोर बकरे, नील गाय का देवता सूरज है। काली गर्दन वाले पशु का देवता अग्नि है। दागदार पैशानी वाली भेड़ का देवता सरस्वती है, नीची गर्दन करके, तिछी टाँगें करके चलने वाले पशुओं का देवता अश्वनी है सोम और पूशन है काले रंग वाले तन्दखू वायें और वायें तरफ सफेद धारियों वाले या विल्कुल सियाह धारियों वाले पशुओं का देवता यम है पाँव जोड़ों के पास बहुत से वाल रखने वाले पशुओं का देवता तूशदा है जिसकी डुम पर सफेद दाग हों इस पशु का देवता दायू है। वशीर बहार आये के साँडे जुफती करके हमल असकात करने वाली गाय का और छोटे कद और टेढ़े तिरछे आज़ाओं वाले पशु का देवता विष्णु है। इन तमाम पशुओं को अच्छे कर्म करने वाले इत्सान की जाहो हशमत के लिये कमाहिका काम में लाना चाहिये।

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

मंत्र २ -

सुर्ख और सुर्खी माइल सियाह रंग वाले और बेर की मानिन्द अरगवानी रंग वाले पशुओं का देवता सोम है। नेवले की मानिन्द खाकी रंग वाले या तोते की मानिन्द हरे रंग वाले पशुओं का देवता वरुण है। जौड़ों पर सफेद दागों वाले, सारे जिस्म पर सफेद छीटों वाले और कहीं सफेद दागों वाले पशुओं का देवता ब्रह्मपति है जिनके तमाम जिस्म पर छीट की मानिन्द दाग हों जिनके रंग विरंग के दाग हों जिनके मोटे मोटे दाग हों उन सब पशुओं का देवता मित्र और वरुण है।

मंत्र ३ -

खूबसूरत वालों वाले, विल्कुल पाक व साफ वालों वाले, चमकदार वालों वाले पशुओं का देवता सूरज और चाँद है। सफेद रंग वाले, सफेद आँखों वाले सुर्ख रंग वाले पशुओं का देवता पशुपति रुद्र है। जिनसे काम लिया जाता है ऐसे पशुओं का देवता वायु है। मोटे जिस्म वालों का देवता प्राण वायु है। आसमानी रंग वाले पशुओं का देवता मेघ है।

मंत्र ४ -

पूछने के लायक वायें वायें नीचे ऊपर से आहत पाकर चौकन्ने हो जाने वाले पशुओं का देवता वायु है। फलों को खाने वाले, लाल परों वाले चंचल आँखों वाले पशुओं का देवता सरस्वती है जिसके कान पर ईंजीर की तरह के दाग हों जिसके कान सूखे हुए हों जिसके कान सुनहरी रंग के हों, ऐसे तमाम पशुओं का देवता तुप्ता है। काली गर्दन वाले सफेद जौड़ों वाले, मोटी टाँगों वाले, पशुओं का देवता पोल और बिजली है। मसताना चाल वाले, आह्रिस्ता आह्रिस्ता चलने वाले तेज़ चलने वाले पशुओं का देवता औशाम है।

मंत्र ५ -

तमाम सनअत व हरफत में काम आने वाली खूबसूरत भेड़ों का देवता दशोये देव है। नीची आवाज़ वाली ऊँची आवाज़ वाली और मध्यम आवाज़ वाली तीनों किस्म की भेड़ों का देवता आदनी (पृथ्वी) है। नामालूम भेड़ और धारण करने के लायक एक ही रंग वाली छोटी छोटी चखड़ियाँ विद्वानों की स्त्रियों के लिये जाननी चाहियें।

मंत्र ६ -

अकड़ी हुई गर्दन वाले पशुओं का देवता रुद्र है। मुफ़ीद रंग वाले और

ग़ज़ा महमूद बर्मपाल

आगे से टक्कर मारने वाले पशुओं का देवता आदित्य है। आबनी रंग वाले पशुओं का देवता मेघ है।

मंत्र ७ -

बुलन्द कद खूबसूरत और छोटे कद वाले पशुओं का देवता विजली और पून है। ऊँचे कद वाले शेरजारे और वारीक पीठ वाले पशुओं का देवता सूरज और वायु है। तोते के रंग वाले तेज़ रफ़्तार चितकबरे पशुओं का देवता मारुत है, काले रंग वाले पशुओं का देवता पूशन (मेघ) है।

मंत्र ८ -

मज़कूरा वाला दो रंगों वाले पशुओं का देवता वायु और विजली है। छोटे कद वाले वेलों का देवता सोम और अग्नि है। बांझ गाय का देवता मित्र और वरुण है। इधर उधर से हाथ लगी हुई गाय का देवता मित्र है।

मंत्र ९ -

काले रंग वालों का देवता अग्नि है। नेवले के रंग वाले पशुओं का देवता सोम है। सफ़ेद रंग वाले पशुओं का देवता वायु है। जिन पर कोई खास निशान न हो उनका देवता अदिति है। जिनका सिर्फ़ एक ही रंग हो उनका देवता पवन है। छोटे वछड़े और वछड़ियों का सूरज वरीरह की किरणों से काम लेने वाला जानना चाहिये।

मंत्र १० -

काले रंग वाले पशु का देवता भूमि है। धुयें के रंग वालों का देवता अंतरिक्ष है। अच्छी आदतों वाले, पढ़ने वाले सफ़ेदी माइल पशुओं का देवता विजली है। जो मंगल कारी पशु हैं वह दुख से पार उतारने वाले हैं।

मंत्र ११ -

मौसम वसन्त में धुएँ के रंग वाले मौसम गर्म में सफ़ेद रंग वाले मौसम वरसात में काले रंग वाले, मौसम सर्मा में लाल रंग वाले, वर्ष के मौसम में मोटे ताज़े और निकलती सर्दी में ज़दी माइल सुख रंग वाले पदार्थों को हासिल करना चाहिये।

मंत्र १२ -

तीन भेड़ों वाले गायत्री के लिये पाँच भेड़ों वाले त्रिअष्टप अर्थात् जिस्म मन और आत्मा के लिये विनाश न होने वाली और संसार में सुख को देने वाली क्रिया करें जिनके तीन वछड़ें हों वह अनोष्टप अर्थात् पीछे से जो क्रिया की

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

जाती है उसको रोकने के लिये तीन करें और जो अपने पशुओं से ज़िन्दगी की चौथी मंज़िल को हासिल करने वाले हैं वह वडी काम करें जिनसे कि आनन्द बढ़े।

मंत्र १३ -

जो इन्सान वार्ट छन्द के ला दो जानवरों को, ब्रह्म छन्द के लिये साँड को, ककूप छन्द के लिये दूध देने वाली गाय को स्वीकार करते हैं वह सुख को हासिल करते हैं।

मंत्र १४ -

काली गर्दन वाले पशुओं का देवता अग्नि है, सबका धारण पोषण करने वाले पशुओं का देवता सोम है। नीची गर्दन करके चलने वाले पशुओं का देवता सादता है। छोटी छोटी वछड़ियों का देवता सरस्वती है। काले रंग वालों का देवता पोषण है। जो पूछने के काविल हैं उनका देवता मारुत (मनुष्य) है जो बहुत से रंगों वाले हैं उनका देवता दुशवाये देवा तमाम विद्वान हैं जो खूब चमकदार हैं उनका आकाश और पृथ्वी है।

मंत्र १५ -

मज़कूरा वाला अच्छी तरह चलने वाले पशुओं का देवता इन्द्र और रागनी है जो ज़मीन जोतनेवाले हैं उनका देवता वरुण है। जो इन्सान की तरह मुख़्तलिफ़ अक़साम व निशान वाले और ईज़ा रसों पशु हैं उनका देवता प्रजापति है।

मंत्र १६ -

इन सब जानवरों का देवता वायु और विजली है। अच्छे सींग वालों का देवता महेन्द्र है। मुख़्तलिफ़ रंग वाले पशुओं का देवता विश्वकर्मा है। सब को अच्छे साफ़ सुथरे रास्तों में आना जाना चाहिये।

मंत्र १७ -

शान्ति स्वभाव पैदा करने वाले, माता पिता के लिये नेवले की मानिन्द खाकी रंग वाले और सभा में बैठने वाले बुजुर्गों के लिये काले रंग वाले और धुएँ के रंग वाले और ताक़त देने वाले जिन्होंने अग्नि विद्या ग्रहण की है। उन बुजुर्गों के लिये काले रंग वाले और खूब मोटे ताज़े तीन किस्म के निशान वाले पशु हैं।

ग़ज़ा महमूद धर्मपाल



मंत्र १८ -

ऐ इन्सानो! तुम को जो शोना सेर देवता वाले, खेती करने वाले, आने जाने वाले, हवा की मानिन्द गुण रखने वाले रंग वाले, सूरज की मानिन्द प्रकाशमान, सफेद रंग वाले पशु वताये हैं, उनको अपने कारोबार में लाओ।

मंत्र १९ -

जानवरों को जानने वाला मीसम वसन्त के लिये टटीरी, मीसम गर्मा के लिये चिड़ियों, मीसम वरसात के लिये तीतरो, मीसम सर्मा के लिये बत्तखों, वर्ष के मीसम के लिये कीकर नाम के जानवरों और निकलती सर्दी के लिये बकर नाम के जानवरों को भली प्रकार हासिल करता है।

मंत्र २० -

जिस तरह समन्दर जानवरों को जानने वाला अपने वच्चों को मारने वाले शिशुमार जानवरों को और मेख के लिये मेंढकों को पानी के लिय मछलियों को और कलीप के नाम के जानवरों को सूरज के लिये और मगरमच्छ और घड़ियाल को वरुण देवता के लिये हासिल करता है। इसी तरह तुम भी हासिल करो।

मंत्र २१ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह जानवरों के गुणों को ज्ञान रखने वाला मनुष चाँद या सोम के लिये हन्स को हवा के लिये, बगुलों को इन्द्र और रागनी के लिये, सारसों को मित्र के लिये, जल काग को वरुण के लिये, चकवे चकवी को भली प्रकार हासिल करता है, इसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २२ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह जानवरों के गुणों को जानने वाला मनुष आग के लिये युगों को वगैर फूल के दरख्तों के लिये आतुओं को रागनी और साम के लिये नीलकण्ठ को सूरज और चाँद के लिये मोरों को, मित्र और दो दिन के लिये कवूतरो को अच्छी तरह हासिल करता है इसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २३ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह जानवरों का काम जानने वाला मनुष्य जाहो हशमत के लिये वटेरों को प्रकाश के लिय कालक नाम जानवर को, विद्वानों की स्त्रियों के लिये गौओं को मारने वाले जानवरों और विद्वानों की वहनों के लिये कोलेक नाम के जानवरों और आग की मानिन्द वर्तमान और घर वालों

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

की परवरिश करने के लिये राशन पक्षियों को हासिल करता है, उसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २४ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह वक्त का जानने वाला दिन के लिये नर्म और आवाज निकालने वाले कवूतरो, रात के लिए सीचाप्रू नाम जानवरों, दिन रात के मिलने के दोनों वक्तों के लिये जतू नाम के जानवरों, महीनों के लिये काले कौओं और साल के लिये बड़े झुबसुरत परो वाले पक्षियों को अच्छी तरह हासिल करता है इसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २५ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह भूमि के जानवरों के गुण जानने वाला पुरुष ज़मीन के लिये चूहों, अंतरिक्ष के लिए एक कतार के उड़ने वाले पक्षियों प्रकाश के नाम के जानवरों, पूरव वगैर दिशाओं के लिये नेवलों और कोनों की दिशाओं के धूरे रंग के नेवलों को भली प्रकार हासिल करता है, उसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २६ -

ऐ इन्सानो! जिस तरह पशुओं के गुण को जानने वाला अग्नि वगैरह के लिये रश जानी के हिरणों, प्राण वगैरह रोरो के लिये खजा नामी पशुओं वारह महीनों के लिये नेगों नाम के पशुओं, तमाम विद्वानों के लिये पृष्ठ जाती के हिरनों और सधी को हासिल करने वाले विद्वानों के लिए कल्कों को अच्छी तरह हासिल करता है, उसी तरह तुम भी करो।

मंत्र २७ -

ऐ राजा! जो इन्सान साहबे कुदरत के लिये और आप के लिय प्रशिष्ट नामी हिरन को सतर के लिये सफेद रंग के हिरनों को वरुण के लिय भैंसों को ब्रह्मस्पति के लिय, नील गाय को और तूष्ठा के लिये ऊँटों को भली प्रकार हासिल करता है, वह माला माल होता है।

मंत्र २८ -

जो इन्सान प्रजा पाने वाले राजा के लिये पुरुषों और हाथियों को वानी के लिय पलशी नाम के जीवन आँख के लिये मुशकान नामी जन्तुओं का उनके भँवरों को हासिल करता है वह मजबूत हिस्से वाला होता है।

ग़ज़ी महमूद धर्मपाल

मंत्र २६ -

प्रजा की पालना करने वाले और इसके सम्बन्धियों के लिये वायु और वायु से सम्बन्ध रखने वाले पदार्थों के लिये नील गाय, वरुण देवता के लिये जंगल का मेढा, इन्साफ़ करने वाले के लिये काला हिरन, राजा के लिए शर के लिये बन्द और लाल हिरन श्रेष्ठ इन्सान के लिये नील गाय, वाज्र के लिये वत्सख, नीले रंग के छोटे कीड़े के लिए छोटा, कीड़ा, वालकों को मारने, वाले शिशुमार समन्दर देवता के लिये और सरबफलक पहाड़ों के लिये हाथी बनाया गया है।

मंत्र ३० -

काविले नफ़रत इन्सान का देवता प्रजापति है। छोटे कीड़े शेर और बिल्ली धारण करने वाले के लिये हैं। आकाश में उड़ने वाली सफ़ेद घील, शंकश जानवर का देवता अग्नि है। चड़्ढटा किस्म की चिड़ियों, लाल साँप जो कि तालाब में रहता है, उनका देवता तूष्ठा है। और सारस बानी के लिए जानना चाहिये।

मंत्र ३१ -

कलिंग, जंगली बकरा, नेवला, इन सबका देवता सोम है, खास ताक़त रखने वाले पशुओं का देवता पोषण है। खास और आम गीदड़ जाहो हशमत वाले पुरुष के लिए गोरा हिरन, खास किस्म का हिरन या किसी दूसरी किस्म का हिरन और ककट नाम का हिरन और चकूमी अगर उनवासी के लिये या सने पीछे सनाने वाले के लिये कमत किये जायें तो बहुत काम करने काविल हों।

मंत्र ३२ -

बगुली का देवता सूरज है, पपीहे, सरज, शयांडक, जानवरों का देवता मित्र है, तोती और तोते का देवता सरस्वती है। खरगोशनी का देवता भूमि है। शरे का भेड़िया या साँप सबके सब गुस्से वाले हैं। शुद्धि करने वाला शिवा जानवर और इन्सान की तरह बोलने वाले जानवर का देवता समन्दर है।

मंत्र ३३ -

खूबसूरत परों वाले जानवर का देवता मेघ है। अज्यह्वा, कठफोड़े का देवता वायु है। पंज राज नामी जानवर बड़े बड़े पदार्थों और कलाम की हिफाज़त करने वाले के लिये हैं अलज नाम के जानवर का देवता अंतरिक्ष है। वत्सख जल काग मछली वगैरह का देवता समन्दर है। कछवे का देवता प्रकाश और

भूमि है।

मंत्र ३४ -

पुर्व मुर्ग का देवता चाँद है। गोह और सारस दरख्तों से तअल्लुक रखने वाला कठफोड़ा मुर्गा वगैरह का देवता सावता है। हंस का देवता वायु है। मगरमच्छ के बच्चे और मगरमच्छ और दीगर आवी जानवरों का देवता समन्दर है। खरगोशनी लजा के लिये जाननी चाहिये।

मंत्र ३५ -

हिरनी बिन के लिए, मैठक, चूहा, तीतर, साँपों के लिये जंगल के लोपाश नामी जानवरों का देवता अश्व है। काले रंग का हिरन रात के लिये है। रीछ और जटू नाम का पुश्वा और शोशीलका पक्षी ये सब इन्सानों के लिये अंगों के सुकेड़ने वाला जानवर विष्णु देवता के लिये।

मंत्र ३६ -

कोकिला पक्षी पन्द्रहवाड़ों के लिये रश जाती का हिरन और खूबसूरत परों वाला मोर को देवता गंधर्व है। आवी जानवरों का देवता जल है। कछवे मुर्ग कुंडर नाची और गोतिनका जंगली पशुओं का देवता सूरज है। काले रंग के पशुओं को मरीतों के लिये जानना चाहिये।

मंत्र ३७ -

वारिश को बुलाने के वाली मैठकी मीसम वसन्त के लिये चोमिया है। कश नाम का पशु और मांथाल नामी पशु पालना करने वालों के लिये हैं, बिल के लिये बड़ा साँप है, टटीरी, कटूतर, उल्लू, खरगोश, जंगली मेढा, दरों देवता के लिये जानना चाहिये।

मंत्र ३८ -

खूबसूरत परों वाले जानवरों को मीसमों के बतलाने के लिये ऊँट और दीगर जोरआवर पशु, लटकन वाला बकरा सबके सब बुद्धि के लिये जानने चाहिये नील गाय, जंगल के खास हिरन, रुद्रदेवता वाले हैं। कोई नाम का जानवर, मुर्गा कव्या, घोड़ों के लिये और कोकिला भली प्रकार काम लेने के लिये जानना चाहिये।

मंत्र ३९ -

आपिये और तेज़ सींगों वाला गैडा, तमाम विद्वानों के लिये काले रंग का कुत्ता, बड़े कानों वाला गधा, और सियाह गोश सब के सब दुष्टों के लिये सूर

राजा के लिये शेर माख्त देवता के लिये गिरगिट पपीहा, और दीगर जानवर चौंद मारी करने वालों के लिये और पुष्ट की किस्म के हिरन विद्वानों के लिये जानना चाहियें।”

यजुर्वेद का ये तमाम अध्याय एक अजीब किस्म की चैस्तान है। कोई नहीं कह सकता कि पुरोहित के हाथ में पड़कर ये बोधारी तलवार किस तरफ चल सकती है। खुद स्वामी दयानन्द भी इस पर कोई रेशमी नहीं डालना चाहता, या नहीं डाल सका। वह सिर्फ इतना ही कह कर चुप हो जाता है कि इस पुकरण में देवता पद से इस पद के गुण पोग से पशु जानने चाहियें। स्वामी दयानन्द का ये कौल भी बज़ाते खुद एक चैस्तान है। अगर पुराने मुफ़स्सरीन में से किसी मुफ़स्सरी की बात पर ऐतवार किया जाये तो वह हमें इस का फ़ौरी हल ये बतायेगा कि इस अध्याय में मुख़्तलिफ़ देवताओं के नाम पर हैवानों के ज़िवह करने की तालीम है। स्वामी दयानन्द ने भी अपनी इवतदाई तसानीफ़ में इस हल की ताईद की है। अगर इस हल को सही न माना जाये तो इस अध्याय का एक एक मंतर मतलाशी हक़ के सामने दर्जनों ऐतराज़ पैदा करने का मौजब होता है। जिसका तसल्ली बूझ जवाब न तो स्वामी दयानन्द दे सकता है न कोई दूसर मुफ़स्सरी मसलन् अध्याय के पङ्क्तों की मंतर में मुख़्तलिफ़ देवताओं की तरफ़ मुख़्तलिफ़ रंग के पशुओं को मनसूब किया गया है। और ऐसी गाय को जो हम्मला होने की सूरत में सॉड से हफ़ती करके हमल असकात करवा देती हो, इसको विष्णु देवता के सुपुर्द किया गया है।

अब सवाल पैदा होता है कि ऐसी गाय को विष्णु के सुपुर्द क्यों किया गया। क्या विष्णु देवता इसको धर्म का उपदेश करेगा कि तू आइन्दा ऐसा फ़ज़ल मत करना या विष्णु देवता इसको कोई सजा देगा। या इससे क्या सुलुफ़ करेगा गर्ज ये कि इस किस्म के वीसियों सवाल पैदा होत हैं जिन को कोई तसल्ली बूझ जवाब स्वामी दयानन्द के भाष्य में नहीं मिल सकता। लेकिन जिस वक्त स्वामी दयानन्द की इवतदाई तसानीफ़ पर नज़र डाली जाती है तो हमें इस का हल दो टूक मिल जाता है चुनांचे स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मतबूआ बनारस १८७५ ई० के दसवें समुल्लास में ऐसी गाय को यज्ञ में कुर्बानी कर देने की तालीम दी है और वह इसकी ताईद में ब्रह्मन ग्रन्थों का हवाला भी देते हैं। ये तो स्वामी दयानन्द का ख़याल है लेकिन जब हम दूसरी

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

स्मृतियों और शास्त्रों को तलाश करते हैं तो वहाँ से भी हमें इस बात के हक़ में शहादत मिलती है। मसलन् मनु स्मृति के पाँचवें अध्याय में साफ़ अल्फ़ाज़ में लिखा है कि देवताओं के नाम से यज्ञ में फ़लां फ़लां हैवान को ज़िवह करना चाहिये। इन परिन्दों और चरिन्दों की वहाँ पर यजुर्वेद के मज़कूर वाला अध्याय की तरह एक बहुत लम्बी चौड़ी फ़हरिस्त दी गयी है और लुफ़्त की बात ये है कि इस फ़हरिस्त में कसरत से वही जानवर बतलाये गये हैं जो कि मज़कूर वाला अध्याय में बताये गये हैं। उनमें गाय बेल वग़ैरह का मारना भी शामिल है और इसको सवाब का बाइस बताया गया है। अला हज़ज़ कयास ब्यास संहिता, विशिष्ट संहिता, विष्णु संहिता में भी यज्ञ के लिये परिन्दों और चरिन्दों का मारना लिखा है। खुद ब्रह्मदार नेक उपनिषद अध्याय ८ ब्रह्मन ४ मंतर १८ में लिखा है कि जो पुरुष ये चाहे कि मेरा पुत्र पंडित प्रख्यात, प्रगल्भ, सुन्दर अर्थ वाली का बोलने वाला चारों वेदों का वक्ता सम्पूर्ण आयु का भोगने वाला हो, वह पुरुष जवान बेल, अथवा इससे कुछ ज़्यादा उम्र वाले बेल का माँस चावलों के साथ पकाकर इसमें धी डालकर अपनी औरत के साथ खाये। स्वामी दयानन्द ने भी अपनी तसनीफ़ संस्कार विधि में इसको बतौर सनद के पेश किया है। अलावा अर्णी यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के उन्तीसवें मंतर का भाष्य करते हुए, स्वामी दयानन्द ने यज्ञ के लिए हंसा को ज़रूरी समझा है और काले रंग के मेंढे वग़ैरह जानवरों को यज्ञ की सामग्री के लिये लाज़मी जुज़ करार दिया है। और इस बात के बताने की तो चन्दों ज़रूरत ही नहीं है कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मतबूआ बनारस १८७५ ई० में तरमीदा और गोमीदा यज्ञ में बेल वग़ैरह नर जानवरों को मारने की तालीम अज़रूप ब्रह्मन ग्रन्थ वग़ैरह दी है। इन बातों के पेश करने से मेरा मतलब इस बात पर बहस करना नहीं है कि जानवरों का देवताओं के नाम पर मारना पाप है या पुण्य। बल्कि इस बात पर बहस करना है कि यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय में जो मुख़्तलिफ़ देवताओं के नाम के साथ मुख़्तलिफ़ जानवर लगाये गये हैं, उनका हल सिवाये इसके और कुछ नहीं हो सकता कि इन देवताओं के नाम पर इन जानवरों को फ़लां फ़लां किस्म के मर्द व औरत ज़िवह करें। स्वामी दयानन्द अगरचे अपनी पहली किताब सत्यार्थ प्रकाश मतबूआ बनारस १८७५ ई० में इस बात की ताईद कर चुका है और साफ़ अल्फ़ाज़ में लिख चुका है कि यज्ञ में बेल गाय और दीगर

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

जानवरों का ज़िबह करना कोई पाप की बात नहीं है। वह अपने इस ख्याल की ताईद में पुराने शास्त्रों के हवाले जात और अपनी दलाईल भी पेश करता है। और इसने कहीं भी इस बात का ऐलान नहीं किया कि यल में गाय वेल वगैरह ज़िबह करने की जो इवारत सत्यार्थ प्रकाश १८७५ ई० में दर्ज है वह इसकी नहीं है बल्कि वह इसको दुरुस्त तसलीम करते हुए सिर्फ़ इस बात का ऐलान करता है कि इस किताब में जो मुद्दों का श्राद्ध लिखा है उसकी बजाये जिन्दों का श्राद्ध समझना चाहिये। और वस चुनांचे इस तमाम मामले में मुफ़रसल बहस कर चुका हूँ जिस शङ्क को देखना मनज़ूर हो वह इस सत्यार्थ प्रकाश के जवाब को जो मैंने उर्दू में शाये कर दिया है पढ़कर अपनी तसल्ली कर सकता है। मगर वायज़ुद ये कि स्वामी दयानन्द के ऐसे ख्यालात थे लेकिन जब इसको यजुर्वेद के चौबीसवें अध्याय से वास्ता पड़ा तो इसको एक ऐसा बरीअ छेद नज़र आया जिसको देखने के साथ ही वह बकौल तन हमा दाग दाग शब्द पनवा कजा कजा नहम

इस मोर्चे को बन्द करने या इसके बन्द करने की कोई तजवीज़ समझाने के बगैर ही आगे निकल गया अगर वह ऐसा न करता तो इसको सख्त मुश्किल का सामना करना पड़ता क्यों वोख़ और जैनी पहले से ही शोर मचा रहे थे कि वेदों में कुर्बानी की तालीम है। इधर बुद्धों और जैनीयों के ज़बरदस्त प्रचार की बकौलत आज कल के हिन्दू भी इस किस्म की कुर्बानियों की तालीम को वेदों में से निकलते देखकर खुशी हासिल नहीं कर सकते थे। क्यों कि अगर बगैर देखा जाये तो मीज़ुदा हिन्दुओं में जो जानवरों की कुर्बानी के खिलाफ़ जप्ता देखा जाता है वह बुद्धों और जैनीयों के ही प्रचार का नतीजा है। स्वामी दयानन्द इस मुश्किल को बख़ूबी जान गया था। इसलिये इसका हल उसको इसके सिवाये कुछ नहीं सुझा कि वह इस अध्याय पर नज़र बन्द करके आगे निकल गया। वरना अग्र वाकिअ तो ये है कि यजुर्वेद का चौबीसवाँ अध्याय, गाय, वेल, भैस, भेड़, बकरी, हिरन, गज़ेकि मुख़्तलिफ़ किस्म के जानवरों की कुर्बानी का एक ख़ूनी मुज़बह या कुर्बान गाह है। जिसकी ताईद बहुत से पुराने और ज़माना हाल के मुफ़रसरीन भी करते हैं। इस कुर्बान गाह या मुज़बह पर पर्दा डालने के लिये स्वामी दयानन्द इस अध्याय को जूँ का तूँ बतौर एक बैसतान के छोड़ जाता है और असलियत को छुपाने की इसने जो नाकामयाब कोशिश की है वह ऐसी मुज़ाहिका ख़ेज़

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

है कि इसके एक एक फ़िकरे पर वीसियों ऐतराजों की बोझार होती है। मसलन् नामालूम भेड़ और धारन करने के लायक़ एक ही रंग वाली छोटी छोटी बछड़ियों विद्वानों की ख़िरियों के लिये जाननी चाहिये। (मंतर ५)

सवाल पैदा होता है कि नामालूम क्या बला है और विद्वानों की स्त्री इसको लेकर क्या करे और बछड़ियों को विद्वानों की ख़िरियों से क्या तअल्लुक वह बछड़ियों को बया करे। इनकी पूजा करे या उनसे जंग करे या उनका दूध बोहें जबकि वह दूध देने के काबिल नहीं हैं या उनके पाँव धोकर पिये या क्या करे। इसी तरह मंतर १८ में माता पिता के लिये खाकी रंग वाले अमीरों वज़ीरों के लिये काले रंग वाले और गनी विद्या को जानने वालों के लिये मीअ्रे ताज़े पशु मुक़र्रर किये गये हैं। उसमें क्या राज़ है। इसी तरह मंतर २३ में मुर्ग़ों, उल्लुओं, मोरों, कबूतरों का हाल लिखा है। और मंतर २४ में विद्वानों की ख़िरियों के लिए तो गीओं को मारने वाले जानवर और विद्वानों की बहनों के लिये कोलीक नाम के जानवर मुक़र्रर किये हैं। ये बहुत अजीम मुअम्मा है। इसी तरह मंतर ३० में मुख़्तलिफ़ इन्सानों के लिए मुख़्तलिफ़ किस्म के जानवर मसलन् नील गाय, जंगली मेंढा, काला हिरन बत्ख़र वगैरह मुक़र्रर किये गये हैं। अला हाज़ल कयास मंतर चालीस में विद्वानों के लिए गेंडा और बुध्दों के लिये काले रंग का कुत्ता गधा और सियाह गोश। राजा के लिये सुअर और बाँधमारी करने वालों के लिये गिरगिट पपीहा मुक़र्रर किये गये हैं। इसी तरह उन्तीसवें अध्याय के मंतर ५६ में लिखा है

ऐ इन्सानो! तुम काबिले तारीफ़ फ़ीज वाले, विज्ञान युक्त, सिपेहसालार के लिये लाल बसूल वाला वेल, सूरज के गुण वाले नीचे हसूल में सफ़ेद रंग वाले ताक़त देने वाले सुनहरी नाफ़ वाले विद्वानों के सम्बन्धी जंगली बकरे और पीले रंग के पशु वायु देवता वाले खाकी रंग वाले अग्नि देवता वाला काला बकरा। बानी के गुनों वाली भेड़ और जल के गुणों वाला तेज़ रफ़तार पशु काम में लाओ।

अब सवाल पैदा होता है कि सिपेहसालार के साथ वेल, ताक़त देने वाले जंगली बकरे, काले रंग के बकरे, भेड़ों का क्या तअल्लुक है। ये जानवर सिपेहसालार के लिये किस तरह काम में लाये जायें। स्वामी दयानन्द इसका जवाब नहीं देता। मगर इसका जवाब विशिष्ट स्मृति मुतर्जमा पंडित भीमसेन सफ़हा १२० पर दिया गया है।

ग़ाज़ी महमूद बर्मापाल

अगर ब्रह्मन, खशती या राजा मेहमान आ जाये तो घर वाला इसके लिये बेल और बड़े बकरे का माँस पकावे।

गालिवन् विशिष्ट स्मृति में वेद के इसी अध्याय या मञ्जूरा वाला मंतर की तरफ ही इशारा है। स्मृति और श्रुति को जब पहलू वा पहलू रखकर देखा जाता है। तो मतलब विल्कुल साफ हो जाता है। इसी तरह आपस्थवा सोत्र के प्रथम प्रश्न की पाँचवीं टपल की अठारहवीं कांडका में गाय के मारने की इजाज़त दी गयी है। महाभारत के दिन पर्व के अध्याय २०७ में लिखा है कि रंती देव राजा, रोज़ दो हज़ार गाय ज़िबह किया करता था और ऋषि मुनी इसके हॉ भोजन पाया करते थे और ये राजा मरने के बाद स्वर्ग में गया।

विष्णु पर इन मतबूआ वंग वासी १६५६ सफ़हा ३१३, ३१४ पर लिखा है कि गौ माँस से पुत्र लोग ग्यारह माह तक तृप्त रहते थे बुढ़ाचे शुप्राण अध्याय ६३ में कोशिक के पुत्र गर्ग ऋषि के शागिर्दों को श्राद्ध में गौ माँस खाने का जिक्र आता है। इसी तरह विष्णु संहिता अध्याय ८० में मुखालिफ़ देवताओं या पुत्रों के नाम पर मुखालिफ़ जानवरों की कुर्बानी और उनके माँस से उन उन देवताओं या पुत्रों का मुखालिफ़ अर्से तक तृप्त रहना बताया गया है। इन बातों 'प मेरी मुराद इस बात पर बहस करना नहीं है कि पुत्रों या श्राध के वारे में स्वामी दयानन्द की जो पोज़िशन है वह ग़लत है। या सही बल्कि इस बात पर बहस करना है कि जिस सूरत में कि स्वामी दयानन्द खुद अपनी इबतदाई तसानीफ़ में ये मान चुका हो कि यल में जानवरों की कुर्बानी करनी चाहिये और जिस सूरत में कि दीगर शास्त्र भी इसकी शहादत देते हों। इस सूरत में स्वामी दयानन्द ने इस सीधे रास्ते को छोड़कर यजुर्वेद की चौबीसवें अध्याय की असलियत पर पर्दा डालने की जो कोशिश की है। इसमें खुद स्वामी दयानन्द कतई वेदस्त व पा राह गया है और ये तमाम का तमाम अध्याय बज़ाते खुद एक वेस्तान बन गया है जिसके सर पैर का कुछ पता नहीं लग सकता।

अब सवाल ये पैदा होता है कि अगर वेद खुदा का कलाम हैं और वह इन्सानों की रहबरी के लिये नाज़िल हुए हैं तो क्या वजह है कि इन्सान शुरू दुनिया से लेकर आज तक उनकी असली मज़नों को समझने से कासिर रहे हैं। यहाँ तक कि खुद स्वामी दयानन्द के लिये भी जो कि कबील प्रोफ़ेसर मैक्स मूलर वेदों के पीछे पागल था। वेदों के अक्सर मकामात सेहराये आज़म

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

सावित हुए हैं और वह उन पर कुछ रोशनी नहीं डाल सका जैसा कि मञ्जूरा वाला अध्याय में दिखाया गया है। ऐसे हालात में कोई दयनतदार शख्स इस बात के लिये तैयार नहीं हो सकता कि वह वेदों को खुदा का कलाम माने जो कि इन्सानों की रहबरी के लिये नाज़िल हुआ। हालाँकि सही पोज़िशन ये है कि वेद पुराने ज़माने के पुरोहितों के गीत हैं। उनमें से वअज़ अच्छे और बहुत अच्छे हैं लेकिन वअज़ मज़ज़ बच्चों की बातें और वअज़ सज़्ज़ा वहशियाना ख़्यालात का मदफ़न हैं जो कि उन पुरोहितों के सीने में मोज़ज़न थे ऐसी सूरत में वेदों को खुदा का कलाम मानना और उन पर अपने दीन व ईमान की बुनियाद कायम करना इन्सान की रूढ़ पर सज़्ज़त गुल्म करना है क्योंकि इस सूरत में इन्सान की तमाम रूहानी आज़ादी पुरोहितों के हाथ में बिक जाती है और वह इससे आगे परवाज़ नहीं कर सकती। जहाँ तक कि इन पुरोहितों ने परवाज़ किया है। अगर उसको उनमें कोई ग़लत या वहशियाना बात नज़र आती है तो ऐसी गुलाम रूढ़ ये कहने की ताक़त नहीं रखती कि वह बात दरहकीफ़त ग़लत और वहशियाना है। बल्कि वह यह कहकर अपनी तसल्ली कर लेती है कि ये मेरी अक़ल का कसूर है कि मैं इस मुअम्मे को समझ नहीं सकता ये किस क़द्र ख़तरनाक रूहानी गुलामी है इसके बरअक्स अगर ये तरलम कर लिया जाये कि वेद खुदा का कलाम नहीं है बल्कि वह पुराने ज़माने के इन्सानों के ख़्यालात का मजभूआ है तो इस सूरत में हमें ये कामिल आज़ादी हासिल रहती है कि हम उनमें से मुफ़ीद ख़्यालात को लें और मुज़िर ख़्यालात को परे फेंक दें। इस तरह हमारी ज़ेहनी और रूहानी तरक्की का रास्ता बराबर खुला रहता है और हम पुरोहितों की गुलामी का शिकारी बनने की बजाये अपनी आज़ादी को बराबर कायम रख सकते हैं जो लोग ये प्रचार कर रहे हैं कि वेद खुदा का कलाम है वह सिर्फ़ यही नहीं कि रूहानी आज़ादी के गले पर छुरी रख रहे हैं बल्कि वह आने वाली नसलों के लिये रियाकारी, अलहाद और देहरियत के महल का बुनियादी पत्थर कायम कर रहे हैं।

क्योंकि ये लाज़मी अम्र है कि जिस वक़्त भी किसी दयानतदार इन्सान को इस ख़ौफ़नाक तालीम का पता लगेगा जिसकी चन्द मिसालें मैं ऊपर दर्ज कर चुका हूँ वह उसी वक़्त या तो इस खुदा की तरफ़ से मुँह फेर लेगा जो कि इस किस्म का इलाहाम दे सकता है। या वह वेदों को हाथ से फेंक देगा।

ग़ाज़ी महमूद बर्मापाल

इसकी जिन्दा मिसाल मैं मौजूद हूँ। जो इस बात का पता लगने के साथ ही कि वेदों में इस किस्म की ख़तरनाक तालीम भी मौजूद है। उनको हाथ से फेंक रहा हूँ और उनको खुदा का कलाम तसलीम करने के लिये तैयार नहीं हूँ। हालाँकि इससे पेशतर मैं वेदों को दिल व जान से खुदा का कलाम मानता और ऐसा ही प्रचार करता था। लेकिन अब मेरे लिये नासुग्निक है कि मैं ऐसी तालीम को वेदों में देखकर जो कि स्वामी दयानन्द के अपने ही अल्फ़ाज़ में महज़ गिहालत की तालीम है। उनको खुदा का कलाम मानूँ तावज़ते कि मैं रियाकारी से काम न लूँ लेकिन मैं रियाकार बनने के लिये तैयार नहीं हूँ। लिहाज़ा मेरे लिये लाज़मी हो जाता है कि मैं वेदों के बोझ को सर से उतार कर फेंक दूँ। इस बात पर रोशनी डालने के लिये कि इस मसअले ने लोगों को किस क़दर रियाकार बना रखा है। यहाँ पर आर्य समाज के एक अख़बार में से चन्द सतरें नक़ल करता हूँ। आर्य समाज का एक लीडर लिखता है

जो सवाल आप के ख़रब पेश किया जाता है वह गोश्त ख़ोरी के सवाल से कई दर्जे बढ़कर है क्या नास्तिक यानी वेदों को ईश्वर कुत न मानने वाले आर्य समाज के लीडर और बड़े बड़े अधीकारी हो सकते हैं ? एक अधीकारी महाशय से कुछ अर्सा हुआ मैं ने दर्याफ़त किया कि आप वेदों को ईश्वरकुत मानते हैं। जवाब दिया कि जैसा दस उसूलों में लिखा है वैसा मानता हूँ उसूलों में “वेद ईश्वरकुत हैं” ऐसा मतलब है या नहीं। अगर है तो सवाल का जवाब हाँ होना चाहिये था अगर सूरत दोयम हो तो सवाल नहीं होता अगर अक्सर असहाब को सीधा हाँ या न करने में ताम्मुल होता है। उपायान् इसी किरम के जवाब होते हैं जैसा कि मज़कूरा मुझको गिला है। आप से सच कहता हूँ कि मुझको कभी ख़याल तक नहीं भाँ गुज़रा कि उसूलों में लफ़ज़ ईश्वरकुत न होने से कुछ और भी इसका मतलब हो सकता है। जहाँ तक स्वामी जी का ज़ाती यकीन इसके बारे में है वह किसी से पोशीदा नहीं। स्वामी जी लिखते हैं कि चारों वेदों को धर्मयुक्त, ईश्वर परिणित संहिता मनुभाग को ही निरा भ्रान्त सोता प्रमाण मानता हूँ बूँकि स्वामी जी इन नियमों का अपनी जिन्दगी में प्रचार किया इससे इसका मतलब स्वामी जी के निज सिद्धांतों के बरख़िलाफ़ नहीं हो सकता। पस जो पुरुष इस सवाल का जवाब ये न देवें कि हाँ मैं वेदों को ईश्वरकुत मानता हूँ ज़रूर

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

उसूलों के कुछ और अर्थ करते हैं और वेदों को उन्हें ईश्वरकुत समाज के बड़े मिम्बर और अधीकारी हो सकते हैं तो किस का मक़दूर है कि पॉस भक्षण को नाजायज़ ठहराये। वेद आर्य समाज की बुनियाद है। जब वेदों को ही उड़ा दिया तो मूल की अदम मौजूदगी से शाख़ पत्ते कहीं रह सकते हैं ऐसा मानने वाले एक नहीं बल्कि अग़लब है कि बहुत से होंगे। (सत्ता धर्म प्रचारक २ अक्टूबर १९१२ ई०)

मज़कूराबाला तहरीर आर्य समाज के एक लीडर की तरफ़ से शाये होरी है। इससे मेरे इस बयान की ज़वरदस्त अल्फ़ाज़ में ताईद होती है कि इस मसअले ने कि “वेद ईश्वरकुत” हैं सोसायटी में रियाकारों के एक खासा गिरोह पैदा करने में मदद दी है जो दिल से वेदों को खुदा का कलाम नहीं मानते। लेकिन पुरोहित क्लास से वह इस क़दर डरते हैं कि अपने ख़यालत को वह आज्ञादाना तीर पर ज़ाहिर करने की अज़्लाकी ज़ुरअत नहीं रखते इसका नतीजा सिवाये इसके और क्या निकाला जा सकता है कि वेद उनको बजाये दयानतदार बनाने के रियाकार बना रहे हैं। फट पड़े सोना जो छेदे कान। रियाकार बनने की बजाये वेहतर है कि वेदों को ही उठाकर अलग रख दिया जाये इसीलिये मैंने इस ना मरग़ुब बोझ को सरसे उतार फेंका है। मगर विला वजह नहीं बल्कि संगीन वाकिअत और ज़वरदस्त वज़ूहात की बिना पर मैं वेदों को खुदा के कलाम के दर्जे से साकित करके पुराने ज़माने के पुरोहितों के गीतों की सतह पर रखता हूँ उनमें से बज़ज़ गीत अच्छे हैं लेकिन वअज़ सख़्त वबशियाना और ख़तरनाक हैं। अय मैं वेदों को न तो कलामे इलाही मानता हूँ न भी मैं इस बात का कायल हूँ कि वेदों के प्रचार से दुनिया में आलमगीरी शान्ति की वादशाहत कायम हो सकती है बल्कि जैसा कि मैं ऊपर दिखा चुका हूँ वेदों में जिस क़दर जंग व जदल कुश्त व ख़ून, मार धाड़, दंगा फ़साद, लूट, ग़ारत, क़त्ले आम, अपने धर्म के मुखालिफ़ों को उल्टा करके जिन्दा आग में जलाने, अपने दुश्मनों को शेरों से फड़वाने, समन्दर में गर्क करने, दरिन्दों से चरवाने और अनवाअ व अक़साम की सफ़ाकियों से मरवाने की तालीम है वह निहायत ही ख़तरनाक बल्कि शर्मनाक है। ऐसी तालीम को खुदावन्दे कुद़्रूस की ज़ाते पाक की तरफ़ मनसूब करना सख़्त कुफ़ ख़ौफ़नाक देहरियत और शर्मनाक इलाहाद है। और ये कहना कि ऐसी तालीम के प्रचार से दुनिया में अमन की वादशाहत

ग़ाज़ी महमूद धर्मपाल

कायम हो सकती है एक लासानी झूठ है। सच तो ये है कि दुनिया को ऐसे वैदिक धर्म की ज़रूरत नहीं है बल्कि वैदिक धर्म के नीचे से निजात पाने की ज़रूरत है। क्योंकि वेद जिस किस्म की खुरेजी की तालीम देते हैं वह तो चारों तरफ़ हो रही है। और वेदों की तालीम के मुताबिक़ तोप, बन्दूक तीरो तफ़ंग, आतिशी असलहे की भरमार, जंग व जदल, कुशत व खून, दंगा फ़साद मारह ण्ड, कल व ग़ारत, फ़ौज की कसरत, दमसाजी, मशीनगन, क़ूएगन, डरेडनाट, डिस्टरायर, क़ूज़र, टारपीडो, बर्री, बहरी, और हवाई जंग, गाँव के जलाने, दुश्मनों को क़त्ल करने, चीरने, फाड़ने, गर्फ़ करने, और बअज़ ह़ालात में ज़िन्दा आग में जलाने अपने दुश्मनों की तबाही चाहने और उनकी बरबादी के लिये खुदा से दुआएँ मांगने, उनको ग़ैहर देने, उनकी गर्दन काटने, उनका बीज नाश करने, उनके घरों को लूटने उनके खेतों को आग लगाने की बदीलत जैसा कि वेद मंत्रों से ऊपर सावित किया जा चुका है। तमाम दुनिया शीला-ए-नार बन रही है। और चारों तरफ़ वेदों को इस ख़तरनाक तालीम के ख़ौफ़नाक शीले ज़मीन से उठकर आसमान की तरफ़ जा रहे हैं और दुनिया इस अमली वैदिक धर्म के भारी बोझ के नीचे पिस्ती जा रही है। और मर रही है। वैदिक धर्म की इस अमली प्रचार की आग में धी की आहूति डालना मिस्टर ह्यूम के अल्फ़ाज़ में बनी तूप इन्सान के साथ ग़ुइचारी करना है। स्वामी दयानन्द ने वेदों को उठाया, नतीजा ये निकला कि उन्होंने सिवाये उनके जो वेदों को खुदा का कलाम मानते थे बाकी तमाम मज़हबी दुनिया को और तमाम मज़ाहिब के मुक़द्दसीन को तलवार से नहीं बल्कि शमशीरे से बेदरीग़ तहे तैग़ कर दिया। जिसने वेदों के सामने सर झुकाया उसी ने सारी मज़हबी दुनिया के साथ हंगामा कारज़ार शुरू कर दिया। वह सोसाइटी जो वेदों को खुदा का कलाम मान रही है। वह सिर्फ़ यही नहीं कि बाकी तमाम मज़ाहिब को अपना दुश्मन खयाल करके वेदों की तालीम के मुताबिक़ उनकी बीखकुनी में मसरफ़ है बल्कि उसी तालीम का बदीलत उसके मेम्बर आपस में भी एक दूसरे के जिल्लत और तहक़ीर, तज़हीक़ और तज़लील में रात-दिन कोशां रहते और तहरीर और तकरीर के ज़रिये एक दूसरे की तबाही और बरबादी के मन्सूबे सोचते रहते हैं, तूँकि वेदों में जावजा यही तालीम दी गयी है कि वह जो हम से दूश्मनी करते हैं वह फना हो जायें और जिन से हम दुश्मनी करते हैं वह भी फना हो जायें, इस लिए इन दुआओं को इलाही

‘वेद और स्वामी दयानन्द’

दुआयें मानने वाले एक दूसरे की तबाही और बरबादी, जिल्लत और तहक़ीर में रात दिन कोशां नज़र आते हैं, बस वेदों की अन्दरूनी तालीम और उसके बदीही नताईज पर नज़र करके में यह नतीजा निकालने के लिए मजबूर हुआ हूँ कि ज़हरीले दरख़त का फल कदरतन ज़हरीला होता है। ऐसी तालीम को खुदाबन्द कुइदूस की ज़ात वाल की सिफ़ात की तरफ़ मन्सूब करना गिस्टर हयूम के अल्फ़ाज़ में महज़ शरारत फेलाना है।

समाप्त

ग़ज़ाी महमूड धर्मपाल